वार्षिक प्रतिवेदन
2011-12

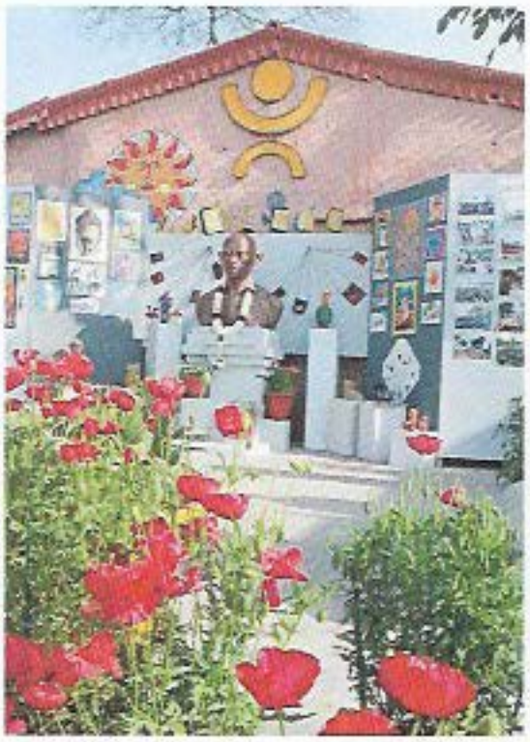

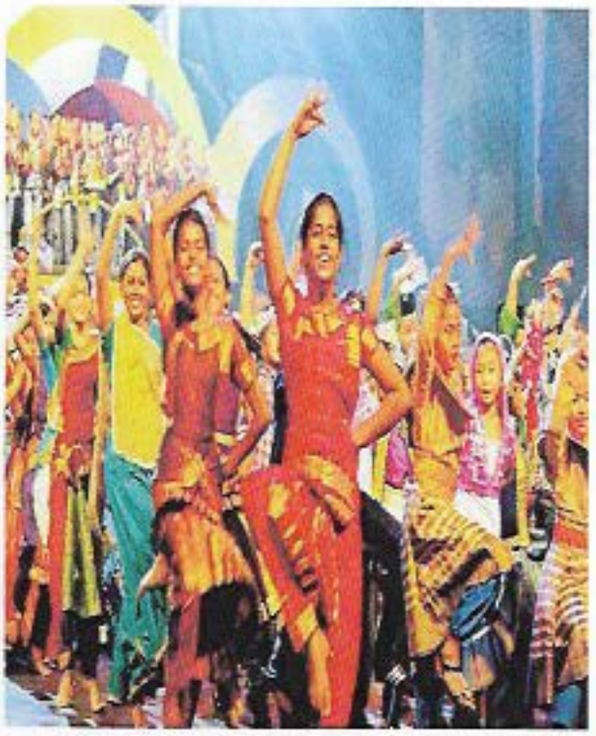

राष्ट्रीय बाल भवन
कोटला रोड, नई दिल्ली–110002

वार्षिक प्रतिवेदन
2011 – 12

राष्ट्रीय बाल भवन

निदेशक की कलम से

बाल भवन के कार्यकलाप और कार्यक्रम वित्तीय वर्ष 2011–2012 में बच्चों के सृजनात्मक और समग्र विकास पर केंद्रित रहे। इस वर्ष सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के सहयोग से एक नई परियोजना "मद्यव्यसनिता और नशाखोरी के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान" (स्थानीय और क्षेत्रीय कार्यक्रम किए गए) चलाया गया।

बच्चों में चुनौति, परीक्षण, अभिनव और सृजन की भावना उजागर करने के लिए विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, कार्यशालाएं और संगोष्ठियां आयोजित की गईं।

नियमित कार्यकलापों के अतिरिक्त निम्नलिखित विशेष कार्यक्रम किए गए। राष्ट्रीय बाल भवन और जवाहर बाल भवन, मांडी के बच्चों की सहभागिता वाली पुस्तक वर्णन कार्यशाला का आयोजन किया गया। बच्चों द्वारा वर्णित बाल पुस्तकें, जिनका प्रकाशन "अप्रकट प्रतिभा को जागरूक" करने वाले संगठन स्पर्शमन द्वारा किया जाता है जिसमें हमारे सदस्य बच्चों को श्रेय दिया जाएगा। सभी के लिए शिक्षा का कार्यक्रम "महिलाएं और बालिका शिक्षण" प्रकरण पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय बाल भवन, जवाहर बाल भवन, मांडी, बाल भवन केन्द्रों, सरकारी और प्राइवेट स्कूलों और विशेष संस्थानों के बच्चों ने शिक्षा का संदेश प्रचारित किया, विशेषकर बालिकाओं के लिए इस बारे में "यह सही है, इसे सही करो : बालिकाओं और महिलाओं के लिए अब शिक्षा"। अप्रैल में ही बच्चों ने कार्यशाला के दौरान दिल्ली की गूढ़ विरासत की खोज की।

ग्रीष्मकालीन सत्र में अनेक विशेष कार्यशालाएं आयोजित की गईं जिनमें प्रमुख थीं – पाककला कार्यशाला, पुस्तक निर्माण और वर्णन कार्यशाला, आईए अपनी मातृभूमि की खोज करें, कम्प्यूटर जागरूकता कार्यक्रम, खाद्य संरक्षण कार्यशाला, प्राथमिक उपचार कार्यशाला, बोर्ड खेल कार्यशाला, अपने संग्रहालय की खोज, सम्प्रेषण के माध्यम–सदियों से। लोक दंत स्वास्थ्य विभाग, मौलाना आज़ाद दंत विज्ञान संस्थान के सहयोग से विशेष दंत जाँच शिविर आयोजित किया गया।

पर्यावरण सप्ताह समारोह में 'वन' पर 7 से 11 जून, 2011 तक बच्चों ने विभिन्न कार्यकलापों में भाग लिया और पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता व्यक्त की। बाल भवन केंद्रों में भी पर्यावरण सप्ताह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय नशाखोरी और अवैध व्यापार विरोधी दिवस पर माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री और माननीय सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री ने मद्यव्यसनित व नशाखोरी के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान की शुरुआत की।

विज्ञान भवन में आयोजित शानदार समारोह में 147 अति सृजनात्मक बच्चों को सृजनात्मक कला, सृजनात्मक अभिनय, सृजनात्मक लेखन और सृजनात्मक वैज्ञानिक अभिनवीकरण के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए वर्ष 2008, 2009 और 2010 हेतु माननीय मानव संसाधन राज्यमंत्री, डॉ. डी. पुरंदेश्वरी ने राष्ट्रीय बाल श्री सम्मान से सम्मानित किया। इससे पूर्व विजेताओं को माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री कपिल सिब्बल ने राष्ट्रीय बाल भवन में आशीर्वाद दिया।

दो प्रतिनिधिमंडल सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम(सीईपी) के लिए जुलाई और दिसम्बर 2011 में क्रमशः मंगोलिया और मलेशिया भेजे गए। उलानबातर मंगोलिया में मंगोल इथीनिसिटी के बच्चों के कला उत्सव में 10 बच्चों और 2 सहचरों के प्रतिनिधिमंडल ने हिस्सा लिया। कुआलालंपुर मलेशिया में अंतरराष्ट्रीय बच्चो के कला व संस्कृति उत्सव में 30 बच्चो सहित राष्ट्रीय बाल भवन के तीन अधिकारियों और एक मंत्रालय प्रतिनिधि ने भाग लिया।

बाल सभा और एकीकरण शिविर "चाचा नेहरू और बड़ा मज़ा" के रूप में 14 से 20 नवम्बर तक आयोजित किया गया जिसमें देश भर के बच्चों ने हिस्सा लिया। बाल सभा का उद्घाटन मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री कपिल सिब्बल ने किया। श्रीमती शीला दीक्षित, मुख्यमंत्री, दिल्ली ने 19 नवम्बर 2011 को बच्चों के साथ बातचीत की। राष्ट्रीय बाल सभा का कार्यक्रम एनआईडी, क्राई और स्पिक मैके के सहयोग से किया गया।

बाल श्री चयन शिविर स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर किए गए। क्षेत्रीय शिविर पटना (पूर्वी क्षेत्र), वडोदरा (पश्चिमी क्षेत्र), भोपाल (केंद्रीय क्षेत्र), रोहतक (उत्तरी क्षेत्र) और दिल्ली (दक्षिणी क्षेत्र । और ।।) में दिसम्बर 2011 से फरवरी 2011 के बीच आयोजित किए गए।

संक्षेप में, वर्ष 2011–2.12 आकर्षण कार्यकलापों से ओतप्रोत रहा जिसमें 26,186 सदस्य बच्चे, 67 सदस्य स्कूल और 179 सम्बद्ध बाल भवन और बाल केन्द्र लाभान्वित हुए।

अंत में थॉमस एल. फ्रायडमेन को उद्घाटित करना चाहूँगी –

"अपनी कल्पनाशक्ति को कार्यरूप देने की आपकी योग्यता ही आपका भविष्य और आपके देश का जीवन–स्तर उन्नत करने में निर्णायक होगी। अतः जो विद्यालय, राज्य, देश अपने बच्चों और नागरिकों में कल्पनाशक्ति का पोषण करता है वही विजेता बनेगा।"

(डॉ. ऊषा कुमारी एम.सी.)

अध्यक्षों व उपाध्ययक्षों की सूची 1955 से

अध्यक्ष

1. श्रीमती इंदिरा गांधी 10.3.1955 से मार्च, 1966
2. डॉ. कर्ण सिंह 12.3.1966 से 21.4.1967
3. श्रीमती पुपुल जयकर 22.4.1967 से 28.9.1974
4. श्रीमती राज थापर 28.9.1974 से 1976
5. श्रीमती इंदिरा गांधी 25.10.1976 से मार्च 1977
6. श्रीमती रेनूका देवी बरवत्तकी 4.11.1977 से सितम्बर 1979
7. श्रीमती रशिदा हक चौधुरी सितम्बर 1979 से दिसम्बर 1979
8. श्रीमती पुपुल जयकर 24.2.1981 से 22.9.1981
9. श्रीमती मेखला झा 25.9.1981 से 23.3.1988
10. श्रीमती शांता गुप्ता सितम्बर 1987 से 10.5.1990 (उपाध्यक्ष कार्यकारी अध्यक्ष)
11. प्रो0 जे.एस. राजपूत 11.5.1990 से 9.4.1992
12. बेगम बिल्कीस लतीफ 10.4.1992 से 9.4.1997
13. श्रीमती सरोज दूबे 24.4.1997 से 24.8.1998
14. श्रीमती स्वराज लाम्बा सितम्बर 1998 से 15.2.1999, उपाध्यक्ष (कार्यकारी अध्यक्ष)
15. श्री अजय सिंह 16.2.1999 से 15.2.2004
16. श्री के.एम. आचार्य 22.3.2004 से 2.6.2004
17. श्री रामशरण जोशी 3.6.2004 से 31.10.2004
18. बेगम बिल्कीस लतीफ 12.5.2005 से जून 2010
19. श्रीमती अंशु वैश जून, 2010 से आगे
20. श्रीमती गीता धर्मराजन 3 अगस्त, 2011 से आगे

उपाध्यक्ष

1. श्री आर. जगन्नाथ राव 1965 से 1966
2. श्रीमती पुपुल जयकर 1966 से 1967
3. श्रीमती राज थापर 1967 से 1974
4. श्रीमती शीला धर 1970 से 1977
5. कु0 सुरेन्द्र रौनी 1977 से 1981
6. सुश्री नीना स्वामीनाथन 1981 से 1982
7. श्रीमती रजनी कुमार 1982 से 1986
8. श्रीमती शांता गुप्ता 1986 से 1990
9. श्रीमती गायत्री रे 1992 से 1997
10. श्रीमती स्वराज लाम्बा 12.12.1997 से 11.12.2002
11. श्रीमती जेना विजय कुमार 26.7.21004 से 25.7.2009
12. श्री ब्रजेश प्रसाद – 28.7.2009 से आगे

बाल भवन प्रबन्धन मंडल की सूची – 31.03 2012 को

अध्यक्ष
श्रीमती गीता धर्मराजन
ए–3, सर्वोदय एनक्लेव
श्री अरविन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017

उपाध्यक्ष
श्री ब्रजेश प्रसाद
ईश्वरी भवन,
निलांबर अपार्टमेंटस के निकट,
पूर्वी बोरिंग कनाल रोड,
पटना–800001

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि
श्री बी.बी. शर्मा
निदेशक,
स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
शास्त्री भवन, नई दिल्ली

वित्त मंत्रालय/शिक्षा विभाग के आई.एफ.डी. के प्रतिनिधि
श्री के. मथाईवानन
निदेशक
आई.एफ.डी.,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
शास्त्री भवन, नई दिल्ली

सदस्य
प्रो. आर. गोविन्दा, कुलपति
नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन
(एन.यू.ई.पी.), 17–बी, अरविन्दो मार्ग,
नई दिल्ली–110016

सदस्य
सुश्री संजना कपूर
19, कौटिल्य मार्ग, चाणक्य पुरी,
नई दिल्ली–110021

सदस्य राष्ट्रीय बाल भवन के नियम–विनियम के उपविधि 3(जी) के भाग–2 के अंतर्गत
सुश्री रोहिणी निलेकनिल

अरघयम
599 12 मेन,
हॉल 2 स्टेज ऑफ इंदिरानगर,
बंगलूरू कर्नाटक–560 008

सदस्य
सुश्री नंदिता दारा
भारतीय बाल फिल्म सोसायटी,
फिल्म डिविजन कॉम्प्लेक्स,
24, डॉ. जी. देशमुख मार्ग,
मुम्बई–400 026

सदस्य सचिव
श्री गया प्रसाद
निदेशक,
राष्ट्रीय बाल भवन,
कोटला रोड, नई दिल्ली–110002

दर्शन

राष्ट्रीय बाल भवन का दर्शन चिंतन की क्षमता को विकसित करना है, जिससे उनमें विश्वास, आत्म–निर्भरता, धर्म–निरपेक्षता की प्रवृत्ति तथा मूल्यों के प्रति प्रेम जागृत हो सके और वे राष्ट्र को शक्तिवान व सम्पन्न बनाने में अपना योगदान दे सकें।

लक्ष्य

राष्ट्रीय बाल भवन का लक्ष्य सृजनात्मक कला, सृजनात्मक लेखन, सृजनात्मक प्रदर्शन कला, शारीरिक शिक्षा, वैज्ञानिक नवप्रयोग, छायांकन, गृह–प्रबंधन तथा संग्रहालय तकनीकों के क्षेत्रों में शिक्षण की अनौपचारिक पद्धति के माध्यम से बच्चों को अपनी सृजनात्मकता को विकसित करने के अवसर प्रदान करना है। बाल भवन इस लक्ष्य की पूर्ति की ओर बाल भवन के दर्शन का प्रसार करते हुए कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, बच्चों की सृजनात्मकता को पहचानते व पोषित करते हुए तथा विभिन्न नवप्रायोगिक प्रकाशनों के माध्यम से निरंतर अग्रसर है।

परिचय

बच्चों में सृजनात्मक क्षमता बढ़ाने वाली अद्वितीय संस्था 'बाल भवन' की स्थापना सन् 1956 में पं. जवाहर लाल नेहरू ने दिल्ली में तुर्कमान गेट के पास एक टीन के छप्पर में की थी। तब से अब तक बाल भवन का देश में निरंतर बहुमुखी विकास हुआ है। आज 156 राज्य बाल भवन तथा 15 बाल केन्द्र राष्ट्रीय बाल भवन से सम्बद्ध हैं। बाल भवन एक ऐसा आंदोलन है जिसके अंतर्गत बच्चों को रचना करने एवं नवीन प्रयोग करने की पूर्ण स्वतंत्रता है। यहाँ बच्चों को स्कूल–पद्धति के पारंपरिक कार्यभार के भय से रहित खेल–खेल में कार्य करते हुए बहुत कुछ सीखने की सुविधा होती है। बाल भवन की इस रांकल्पना से बच्चों को मनोरंजन के साथ सीखने में सहायता भी मिलती है। यहाँ के स्वच्छंद वातावरण में बच्चा स्वाभाविक रूप से अपनी कल्पना को व्यक्त करता है। बच्चे नृत्य, नाटक, संगीत, सृजनात्मक कला, छायांकन, कंप्यूटर आदि विविध माध्यमों से सीखते हैं। ये सभी कार्यकलाप बच्चे के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं। बाल भवन की हर गतिविधि का केंद्र बच्चा है। बाल भवन के कार्यकलापों की रूपरेखा ही इस प्रकार बनाई जाती है कि बालक की आंतरिक क्षमता को उभारा जा सके।

सन् 1956 में बाल भवन में बच्चों की सदस्य संख्या केवल 300 थी जो अब बढ़कर एक लाख से अधिक हो गई है। जो बच्चे केंद्रीय बाल भवन के कार्यकलापों में भाग नहीं ले पाते, उन बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दिल्ली के विभिन्न भागों में 54 बाल भवन केंद्र खोले गए हैं। शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित ये केंद्र दलितों, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, विकलांग और अक्षम बच्चों की सृजनात्मक आवश्यकताओं की भी पूर्ति करते हैं। ग्रामीण बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मांडी गाँव में एक जवाहर बाल भवन खोला गया है। हाल ही में सुदूर व आदिवासी इलाकों में नए बाल भवन केन्द्र खोले गए हैं। निम्नलिखित पंक्तियाँ बाल भवन की संकल्पना को स्वतः स्पष्ट करती हैं :

बाल भवन क्या है?
बाल भवन ऐसा परिसर है, जहाँ बच्चा अपनी गति से,
अपनी रुचि के सभी कार्यकलाप मनोहारी रूप में कर सकता है

बाल भवन में बच्चे का क्या स्थान है?
बाल भवन में सभी कार्यकलापों का मुख्य केंद्र 'बच्चा' है,
सभी प्रयोजन बच्चा उन्मुख है, सभी कार्य निर्दिष्ट हैं।

बाल भवन की सोच (दर्शन) क्या है?
ना तो पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा, ना ही बस्ते का भारी बोझ,
खुद करके सीखे बच्चा, ऐसी बाल भवन की सोच।

बाल भवन में शिक्षक की भूमिका क्या है?
हर बच्चे में है अन्तर्निहित सृजनता,
शिक्षक उनको दिशा दिखा सृजनात्मकता का खोले द्वार।

बाल भवन में आकर बच्चा क्या–क्या कर सकता है?
ललित कला, साहित्य सृजन के संग जीविका के आधार,
खेलकूद, विज्ञान वाटिका बाल भवन के हैं उपहार।

उद्देश्य

- स्कूलों, शैक्षिक संस्थाओं और बच्चों के लिए सृजनात्मक संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करना।

- विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों, कार्यशालाओं, प्रदर्शनों तथा संगोष्ठियों आदि के माध्यम से बच्चों में नेतृत्व भावना और सृजनात्मकता का विकास करने के लिए स्कूलों का मार्गदर्शन करना और उन्हें सीखने की सुविधाएँ प्रदान करना।

- बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टि, सोच और चुनौती की मनःस्थिति, प्रयोग, अन्वेषण और सृजन की भावना उत्पन्न करना।

- विद्यालयों, शिक्षकों और बच्चों के सांस्कृतिक अनुभव के स्तर का विकास करने के लिए कला, विज्ञान और संग्रहालय तकनीक की नवीन सृजनात्मक शिक्षण विधियों और अध्ययन सामग्री का विकास करना।

- माता–पिता, वयस्कों और शिक्षकों के लिए 'स्वयं करके सीखने' की कार्यशालाओं द्वारा सृजनात्मक शिक्षा के राष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र के रूप में कार्य करना।

- बच्चों की आदर्श संस्था के रूप में सीखने की सुगमतम सुविधाएँ उपलब्ध कराना।

- अधिकतम बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए राज्य तथा जिला स्तर के बाल भवनों,

- बाल केन्द्रों की स्थापना करते हुए बाल भवन आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाना।

- राष्ट्रीय बाल भवन में राष्ट्रीय बाल संग्रहालय, राज्य बाल भवनों में राज्य बाल संग्रहालय और सभी बाल भवनों तथा स्कूलों में राज्य बाल संग्रहालय तथा संग्रहालय कक्षों का गठन और विकास करना।

- विज्ञान, कला, शारीरिक और बौद्धिक शिक्षा के लिए एक वैकल्पिक माध्यम के रूप में काम करना और बच्चों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति एवं कार्यकलाप के लिए उपयुक्त स्वच्छंद वातावरण प्रदान करके विद्यालय–प्रणाली में योगदान करना।

- सामुदायिक कार्य से जनव्यापी आंदोलन का विकास करना और प्रभावकारी अनौपचारिक स्वयं करके सीखने की पद्धति के रूप में कार्य करना। उत्तम शोध और विकास का आधार रूप संस्थापित करना। शिक्षकों और बच्चों को क्रमशः सिखाने और सीखने के लिए नए तरीकों और तकनीकों के विकास हेतु शोधकार्य प्रारंभ करना एवं उसका संचालन करना।

- बाल भवनों के माध्यम से सीखने के स्वाभाविक अनुभव द्वारा प्रत्येक बच्चे तक पहुँचना जिसमें सामाजिक दृष्टि से पिछड़े हुए और गरीब बच्चे शामिल हैं। बच्चों के भविष्य के लिए उन्हें सृजनात्मक ढंग से व्यावसायिक कार्य एवं स्वतंत्र रोजगार कौशल के लिए तैयार करना।

- हरितवाहिनी के सदस्यों को पंजीकृत एवं प्रशिक्षित करना और राष्ट्रीय बाल आंदोलन के रूप में इसका विस्तार करना।

- पर्यावरण के संरक्षण, परिरक्षण एवं विकास के लिए तथा सम्पूर्ण पारिस्थितिक संतुलन के लिए बच्चों द्वारा विशाल हरित परियोजनाओं एवं पर्यावरणीय जागरूकता से सम्बंधित कार्यक्रमों की शुरुआत करना।

- उन सभी विभागों एवं अभिकरणों को, जो पहले से ही गाँवों में काम कर रहे हैं, गाँवों में ग्रामीण बाल भवन/ग्रामीण बाल भवन केंद्र प्रारंभ करने के लिए सहयोग करना।

- जनजातीय ग्रामीण बाल भवनों/बाल भवन केन्द्रों को प्रारंभ करना।

- विकलांगों की संस्था में बाल भवन केंद्र प्रारंभ करना, उन्हें प्रशिक्षण देना तथा संसाधनों एवं अध्ययन–सामग्री का विकास करना और प्रदर्शनियाँ लगाना।

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने में यथासंभव सहायता देना।

- दृश्य–श्रव्य कार्यक्रमों तथा फिल्मों के माध्यम से लाखों बच्चों के साथ संपर्क बनाने के लिए एक व्यक्तिगत संचार–प्रणाली विकसित करना।

- संस्थाओं, स्कूलों एवं शोधकार्य के लिए सृजनात्मक शैक्षिक तरीकों एवं तकनीकों से सम्बंधित सॉफ़्टवेयर का विकास करना।

- राज्य स्तरीय बाल भवनों एवं ग्रामीण बाल भवनों के लिए आदर्श बाल नाट्यशाला का विकास करना।

- राज्य बाल भवनों के माध्यम से सभी राज्यों में विज्ञान कॉर्नर एवं खगोल विज्ञान एकक आरंभ करना।

- बच्चों के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों का विकास तथा आयोजन करना।

- बच्चों को आत्मनिर्भर एवं अनुशासित बनने के लिए प्रोत्साहित करना तथा उन्हें श्रम की गरिमा और महत्त्व समझाना।

- बच्चों में सही और गलत की अवधारणा विकसित करना और अनौपचारिक ढंग से उन्हें आधारभूत नैतिक मूल्यों को अपनाने का प्रशिक्षण देना।

कार्यकलापों की सूची

बच्चों को यहाँ व्यापक कार्यकलापों में से अपनी रुचि के अनुसार कार्यकलाप चुनने के अवसर प्राप्त हैं–

1. **विज्ञान कार्यकलाप**
   - गौतिक और प्राकृतिक विज्ञान
   - (क्यों और कैसे क्लब)
   - आविष्कारक क्लब
   - रेडियो और इलेक्ट्रॉनिक्स क्लब
   - ऐअरो मॉडलिंग
   - कम्प्यूटर
   - पर्यावरण
   - खगोल विज्ञान
   - मछलीघर एवं छोटे चिड़ियाघर संबंधी कार्यकलाप
   - विज्ञान–वाटिका संबंधी कार्यकलाप

2. **साहित्यिक कार्यकलाप**
   - वाद–विवाद और संगोष्ठियां
   - प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम
   - सृजनात्मक लेखन
   - कविता रचना, काव्य–पाठ
   - नवीन पुस्तकों की समीक्षा एवं परिचर्चा
   - आशुभाषण
   - सम्भाषण

3. **सृजनात्मक कलाएं**
   - चित्रकला
   - हस्तशिल्प
   - बुनाई
   - सिलाई और कढ़ाई
   - काष्ठशिल्प
   - मिट्टी का काम
   - जिल्दसाजी

4. **छायांकन (फोटोग्राफी)**
   - श्वेत–श्याम छायांकन
   - रंगीन छायांकन
   - डार्करूम प्रशिक्षण
   - चित्रों के आकार बढ़ाना तथा स्लाइड तैयार करना
   - उन्नत डिजिटल छायांकन (प्रिंटिंग, प्रोसेसिंग, स्कैनिंग)

5. **मिलेजुले कार्यकलाप**

पारंपरिक कला एवं शिल्प
प्राकृतिक रंग बनाना
(पर्यावरणीय अपशिष्ट का उपयोग)
मुखौटे बनाना
शैक्षिक एवं नवप्रायोगिक खेल / शतरंज
खिलौने बनाना, पेपरमैशी, मेहंदी लगाना

6. **प्रदर्शन कलाएं**

गायन (शास्त्रीय एवं लोक)
वाद्य संगीत (सितार, वायलिन, तबला,
ढोलक, ढोल, बौंगो, कौंगो, हारमोनियम)
शास्त्रीय नृत्य (कथक, भरतनाट्यम)
लोकनृत्य
नाट्यकला

7. **शारीरिक शिक्षा कार्यकलाप**

'इनडोर' व 'आउटडोर' खेल
(टेबल टेनिस, बैडमिंटन, क्रिकेट, बॉस्केट बॉल)
योग
जूडो
स्केटिंग
पूर्ण सुसज्जित व्यायामशाला

8. **छात्रावास कार्यकलाप**

गृह प्रबंधन
पाक कला, बेकिंग
भोजन–परिरक्षण
पुष्प–राज्जा
प्राथमिक चिकित्सा

9. **संग्रहालय तकनीकें**

साँचा बनाना एवं ढलाई
प्रदर्शनी डिज़ाइन करना
संग्रहालय की वस्तुओं का परिरक्षण एवं संरक्षण
ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर विचार–विमर्श
क्षेत्रीय कार्य

10. **प्रकाशन संबंधी कार्यकलाप**

यह अनुभाग बच्चों को प्रकाशन की विभिन्न तकनीकों से परिचित कराता है, जैसे कि रिपोर्टिंग, पुस्तक के लिए चित्रांकन, कार्टून बनाना, संपादन एवं मुद्रण।

उपरोक्त कार्यकलाप विभिन्न अनुभागों में नियमित रूप से संचालित किये जाते हैं। वर्ष भर के दौरान हज़ारों बच्चे इन गतिविधियों में भाग लेते हैं। ग्रीष्मकाल के पश्चात्, दिल्ली के दूर–दराज़ के इलाकों में झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों के लिए विशेष कक्षाएं आयोजित की जाती हैं।

'बच्चों का स्वर्ग'– राष्ट्रीय बाल भवन 5 से 10 वर्ष तक के आयु वर्ग के छोटी उम्र के अपने सदस्यों के लिए विशेष रुप से समर्पित है। पुस्तकालय में एक विशेष 'शिशु कोना' स्थापित किया गया है जिसमें बच्चों के लिए आकर्षक व रंग–बिरंगी पुस्तकें उपलब्ध हैं तथा शैक्षिक व मूल्याधारित दृश्य–श्रव्य माध्यम भी है। आकर्षक झूलों से युक्त मनोरंजन उद्यान बच्चों के लिए एक वास्तविक उपहार है।

मुख्य आकर्षण	अन्य गतिविधि एवं कार्यक्रम
छोटी रेल	हरितवाहिनी(हरितवाहिनी रोना)
रंगीन झूले	प्रकृति अध्ययन
काष्ठ उद्यान	संगोष्ठी, परिचर्चा,कवि सम्मेलन एवं अपने अनुभवों
छोटा चिड़ियाघर	को दूसरों से बांटना
जादुई शीशे	ऐतिहासिक एवं सांस्कृति विचार–विनिमय
वायुयान	ग्रीष्मकालीन शिविर
संस्कृति शिल्प ग्राम	चमत्कारों का वैज्ञानिक स्पष्टीकरण
ट्राई साईंस	

राष्ट्रीय बाल भवन – शाश्वत गतिविधियों का एक केंद्र

राष्ट्रीय बाल भवन अपनी निम्नलिखित गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करता है और इस दृष्टि से एक पर्यावरणीय शाश्वत परिसर है :

वर्षा जल संचयन
खाद बनाना
पेपर रिसाइक्लिंग
पोलीथीन बैग्स से बुनाई
बच्चों की पारिस्थिकी (ईको) पुलिस

राष्ट्रीय बाल भवन, 'सेंटर फॉर एन्वायरमेन्ट एजुकेशन', 'दि एनर्जी एण्ड रिसोर्सेज़ इन्स्टीट्यूट' एवं 'डिवेलपमेन्ट अलटर्नेटिव्स' का तकनीकी रूप से भागीदार है तथा उनके साथ मिलकर कई सहयोगात्मक कार्यक्रम आयोजित करता है।

राष्ट्रीय बाल भवन में दौरे पर आने वाले विद्यालयों को आगमन के दौरान बाल भवन परिसर की स्वच्छता को बनाये रखने के लिए राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा 'स्वच्छता एवं अच्छी आदतों' का प्रमाणपत्र भी प्रदान किया जाता है।

सामूहिक कार्यकलाप

एक उद्देश्य विशेष के लिए मिल-जुलकर कार्य करना बाल भवन का 'दर्शन' है। इससे बच्चों में मेल-मिलाप बढ़ता है तथा वे विभिन्न सामाजिक मुद्दों को जान व समझ पाते हैं। इस प्रकार बच्चे मिलकर काम करते हैं और एक साथ गाते हैं।

एकत्व का यह भाव इनमें देखा जा सकता है:-

समूहगान
विभिन्न विषयों पर सामूहिक रैली
सामूहिक स्थलगत चित्रांकन कार्यकलाप
सामूहिक सृजनात्मक लेखन कार्यकलाप
सामूहिक वृक्षारोपण

ग्रीष्मकाल में प्रातःकालीन सभा आयोजित की जाती है, जिसमें हजारों बच्चे विभिन्न भारतीय भाषाओं में मिलजुलकर गीत गाते हैं।

ग्रीष्मकालीन आकर्षण

ग्रीष्मकालीन सत्र में विशेष गतिविधियां हैं:

बाटिक
बंधेज (टाई एण्ड डाई)
स्क्रीन प्रिंटिंग
कठपुतली-कला
मूकाभिनय
वीडियोग्राफी कार्यशाला
ट्रैकिंग शिविर
साहसिक एवं प्राथमिक चिकित्सा कार्यशाला

सदस्यता सूचकांक

राष्ट्रीय बाल भवन में कुल पंजीकरण : 6785
बाल भवन केन्द्रों में कुल पंजीकरण : 18062
ज.बा.भ. मांडी में कुल सदस्यता : 1339
सांस्थागत सदस्यता : 67

सहभागिता विवरण

बाल भवन केन्द्रों के हज़ारों बच्चों ने राष्ट्रीय बाल भवन के विभिन्न कार्यक्रमों एवं कार्यकलापों में भाग लेने के साथ–साथ 'ग्रीष्म शिविर' की समाप्ति के अवसर पर अपने–अपने क्षेत्रों के केन्द्रों द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रमों में भाग लिया। जवाहर बाल भवन, मांडी के सैकड़ों बच्चों ने जवाहर बाल भवन, मांडी के विभिन्न कार्यकलापों एवं कार्यक्रमों के अतिरिक्त राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, जैसे 'क्षेत्र भ्रमण' तथा 'शिविरों' आदि में भी भाग लिया।

राष्ट्रीय बाल भवन पर्यावरण संरक्षण के प्रति विशेष रूप से प्रतिबद्ध है और पर्यावरण के विशद स्वरूप को लेकर इसने वर्षभर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया। राष्ट्रीय बाल भवन, सम्बद्ध बाल भवनों, बाल केन्द्रों तथा जवाहर बाल भवन मांडी के हज़ारों बच्चों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया। इनमें से कुछ कार्यक्रम एवं कार्यकलाप सामूहिक थे। विशेष वर्ग के ऐसे बच्चे, जो किसी–न–किसी रूप में वंचित हैं, उनकी आवश्यकताओं की ओर बाल भवन में विशेष ध्यान दिया जाता है और ऐसे बच्चों तक पहुँचने की दिशा में बाल भवन द्वारा विशेष प्रयत्न किए जाते हैं। इस वर्ष भी विशेष आवश्यकता वाले अनेक बच्चों ने बाल भवन के कार्यकलापों में भाग लिया और इनसे लाभ उठाया।

प्रशिक्षार्थी

इस वर्ष राष्ट्रीय प्रशिक्षण संसाधन केंद्र में ग्यारह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये जिनमें 622 शिक्षकों तथा वयस्कों को प्रशिक्षित किया गया।

शिविरार्थी

शिविर लगाने एवं ठहरने की सुविधा छात्रावास प्रदान करता है। इस वर्ष बच्चों एवं वयस्कों को मिलाकर कुल 8894 शिविरार्थियों ने छात्रावास में इन सुविधाओं का लाभ उठाया।

दर्शक

इस वर्ष संग्रहालय में दर्शकों की संख्या 2,27,011 रही, जिनमें 1,038 स्कूलों के बच्चे भी सम्मिलित है। दरबा (एविअरी) और गछलीघर, में 1,10,581 और विज्ञान उद्यान में 84,673 दर्शक आए। बाल भवन आने वाले स्कूली बच्चों के अतिरिक्त अध्यापकों/अनुरक्षकों की संख्या भी हज़ारों में थी।

गतिविधियाँ

सृजन कला

सृजन कला की गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को स्व–अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान कर उनमें सौंदर्य बोध की अलग – अलग विधाओं का विकास करना है तथा उनके अन्दर छिपी हुई सृजनात्मक प्रतिभा को पहचान कर उन्हें कला और शिल्प की अलग – अलग विधाओं की विभिन्न तकनीकों से अवगत कराना है। सृजन कला और शिल्प की विभिन्न गतिविधियों अनुरुप इस विभाग के विभिन्न अनुभाग है जैसे– चित्रकला, काष्ठ शिल्प, सिलाई व कढ़ाई, जिल्दसाजी, बुनाई, मिट्टी का काम तथा हस्तकला।

चित्रकला

इस अनुभाग में विशेष रूप से छोटी उम्र के बच्चे अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति को क्रेऑन, वाटर कलर, ऑयल और पेंसिल द्वारा चित्र बनाकर अभिव्यक्त करते है। यह कार्यकलाप अपेक्षाकृत बड़े बच्चों को भी उतना ही भाता है जितना कि छोटे बच्चों को। अतः 5 से 16 वर्ष तक के सभी बच्चे इसमें उत्साह से भाग लेते हैं। छोटे बच्चे जहाँ एक ओर अपनी कल्पना के अनुसार चित्र बनाते हैं, वहीं बड़ी उम्र के बच्चे पोट्रेट बनाने, स्केच व प्राकृतिक दृश्य बनाने और विषय के आधार पर चित्रकला करने की तकनीक सीखने का आनन्द उठाते हैं। बच्चों को बंधेज (टाई एण्ड डाई) एवं ब्लॉक प्रिंटिंग, इत्यादि कार्य –कलापों के तरीकों की जानकारी भी दी जाती है।

हस्तशिल्प

हस्तशिल्प भी एक लोकप्रिय गतिविधि है, जिसमें बच्चों को काम में न आनेवाली विभिन्न प्रकार की वस्तुओं, जैसे पुराने अखबार और पत्रिकाएं, गत्ते के खाली डिब्बे, पुराने कागज़, प्रयोग किए हुए डिब्बे, बल्ब, बर्तन, उभरे हुए कागज, थर्मोकोल, तार, डंडियों, पत्तियों या पेड़ों के तनों से निकली हुई छाल इत्यादि पदार्थों के साथ प्रयोग करने की खुली छूट मिलती है। बच्चों द्वारा काम में न आनेवाली वस्तुओं से बनाई गई सुन्दर कृतियाँ उनकी कल्पना और सृजनात्मक सोच की अभिव्यक्ति होती है।

सिलाई–कढ़ाई

इस अनुभाग की गतिविधियों में सिलाई–कढ़ाई, खिलौने बनाने, कठपुतली बनाने, गैक्रमे, क्रोशिया इत्यादि सम्मिलित हैं। बच्चे जहाँ एक ओर वस्त्रों की कटाई और सिलाई के मूल तत्त्वों को सीखते हैं, वहीं दूसरी ओर वे विभिन्न प्रकार के कपड़ों को डिजाइन करने, 'पैच वर्क' बनाने और रचनात्मक कढ़ाई का काम भी करते हैं। रुई भरकर खिलौने बनाने की कला भी इस कक्षा की एक लोकप्रिय गतिविधि है। बच्चे तरह–तरह के दृश्य व सजावटी वस्तुएँ तैयार करते हैं, जिससे उनकी सृजनशीलता का विकास होता है।

मिट्टी का काम

मिट्टी का काम छोटे बच्चों में सबसे अधिक लोकप्रिय कार्यकलाप है परंतु बड़ी उम्र के बच्चे भी इसका भरपूर आनंद उठाते हैं। इस गतिविधि के माध्यम से मस्तिष्क, हृदय और हाथों का समन्वय होता है, जो छोटे बच्चों के मस्तिष्क और शरीर के सहज विकास में सहायता करता है। बच्चे मिट्टी के जानवर, मानव आकृतियों एवं मुखाकृति, दृश्य व डिजाइन इत्यादि बनाते हैं और साथ ही 'पेपरमैशी' के साथ भी नए–नए प्रयोग करते हैं। ये 'प्लास्टर ऑफ़ पैरिस' के साँचों से आकृतियां ढालने के साथ–साथ मृण्मूर्ति (टेराकोटा) आदि भी बनाते हैं। यह अनुभाग बच्चों को मौलिक व नवप्रायोगिक कार्य करने और इस प्रकार उनकी सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने के अवसर प्रदान करता है।

बुनाई

बुनाई भी बच्चों की एक लोकप्रिय गतिविधि है, जहाँ बच्चे कई प्रकार की कलात्मक कलाकृतियां यथा–वॉल हैंगिंग, लैम्पशेड, दृश्य व डिज़ाइन इत्यादि बनाते हैं। बच्चों को बुनाई के शिल्प की तकनीकों से अवगत कराया जाता है तथा उनमें सौंदर्यबोध जाग्रत कराने की दृष्टि से उन्हें सुन्दर वस्तुओं के निर्माण करने की ओर प्रेरित किया जाता है। वे विभिन्न प्रकार की गाँठें लगाना व बुनाई की तकनीकें सीखते हैं और छोटी–छोटी दरियां व कालीन स्वयं बनाते हैं।

काष्ठ–शिल्प

इस अनुभाग में कुछ बड़ी उम्र के बच्चे अर्थात् 12 से 16 वर्ष तक के बच्चों की सृजनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। बच्चों को लकड़ी की वस्तुओं का निर्माण करने में काम आने वाली विभिन्न तकनीकों के विषय में बताया जाता है। ये विभिन्न प्रकार की लकड़ी, उसके गठन और स्थायित्व के बारे में भी जानकारी प्राप्त करते हैं। बच्चे काम में आने वाली कई वस्तुओं जैसे पेन–होलडर, पेन–रटैण्ड, छोटे बॉक्स, खिलौने, डिब्बे, गमले के कवर इत्यादि बनाना भी सीखते हैं। उन्हें लकड़ी में नक्काशी का काम भी सिखाया जाता है और वे नक्काशी द्वारा सुन्दर वस्तुएं बनाते हैं। उन्हें बची हुई लकड़ी के टुकड़ों को सृजनात्मक रूप से जोड़कर सुन्दर दृश्य या वस्तुएँ बनाने के भी अवसर दिए जाते हैं, ताकि उनकी सृजनात्मकता का विकास हो सके।

जिल्दसाज़ी

बाल भवन में जिल्दसाज़ी की गतिविधि भी अत्यन्त लोकप्रिय है क्योंकि इस गतिविधि के द्वारा बच्चे अपनी किताबों को सुरक्षित रखना सीखते हैं। यहाँ जिल्दसाजी की तकनीकी कुशलताओं को जानने के साथ–साथ बच्चे कार्डबोर्ड की सुन्दर वस्तुओं का निर्माण भी करते हैं, जिनमें वे गत्ता काटने, चिपकाने व सिलाई करने की तकनीकों का प्रयोग करते हैं। उन्हें कई सृजनात्मक वस्तुओं का निर्माण करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है और वे कैरोट रटैण्ड, छोटी डायरी, फाइल कवर तथा कई नए प्रकार की वस्तुएँ बनाते हैं।

मिले–जुले कार्यकलाप

यह बहु माध्यमिक विभाग सभी उम्र के बच्चों को समान रूप से आकर्षित करता है। विभाग में प्रायः आने वाले बड़े बच्चे परम्परागत कला, शिल्प और लोक कला का अनुभव प्राप्त करते हैं तथा शतरंज जैसे खेलों पर भी अपने हाथ आज़माते हैं, जबकि छोटे बच्चे हस्तशिल्प का काम करना ज्यादा पसन्द करते हैं। इस विभाग के कार्यकलाप विषय पर आधारित होते हैं और इससे पहले कि बच्चे अपना काम शुरू करें वे पहले विषय के संबंध में विचार–विमर्श एवं चर्चा करते हैं। बहुमाध्यमी विभाग होने के कारण इस विभाग में बहुत लचीलापन है और बच्चे अपनी इच्छानुसार एक माध्यम को छोड़ कर दूसरे माध्यम का प्रयोग भी कर सकते हैं। यहाँ जीवनमूल्यों पर आधारित सृजनात्मक खेल भी तैयार किए जाते हैं। प्राकृतिक रूप से प्राप्त रंग और तीलियों से बनाई गई परम्परागत लोक चित्रकला यहाँ की विशेषता है। यहाँ बच्चे खिलौने और पेपरमैशी की कलात्मक वस्तुओं को भी बनाते हैं और अपनी रचनाओं पर गर्व का अनुभव करते हैं। वे गुल्थौटे बनाने, मेहंदी लगाने तथा कागज़ की मूर्तियाँ बनाने का कार्य भी यहाँ सीखते है।

प्रदर्शन कला अनुभाग

प्रदर्शन कला की विभिन्न गतिविधियाँ बच्चों को अभिव्यक्ति के द्वारा अपनी कल्पना को साकार रूप देने और अपनी स्वयं की प्रतिभा को पहचानने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराती है। इस विभाग में बच्चे नाटक, नृत्य, संगीत, कठपुतली, वाद्य संगीत आदि कई प्रकार की सृजनात्मक गतिविधियाँ सीखते हैं। बच्चों को अपने परम्परागत संगीत एवं नृत्य का ज्ञान भी इस विभाग में दिया जाता है। प्रदर्शन कला विभाग में निम्न अनुभाग है :

संगीत

बच्चों को गाना अच्छा लगता है क्योंकि संगीत मनुष्य को प्राप्त एक बहुत सुन्दर कला है। इस अनुभाग में बच्चे शास्त्रीय और लोक संगीत का ज्ञान प्राप्त करते हैं। वे विषयगत गीत भी सीखते हैं। सामूहिक गायन बाल भवन की बहुत ही लोकप्रिय गतिविधि है जो अपरोक्ष रूप से बच्चों में एकता का भाव जगाती है। इस विभाग के सदस्य बच्चे राष्ट्रीय बाल भवन, राज्य बाल भवनों तथा अन्य संस्थानों में आयोजित संगीत गोष्ठियों में भी भाग लेते हैं।

वाद्य संगीत

इस अनुभाग में बच्चे तरह–तरह के वाद्य यंत्रों को सीखते हैं यथा सितार, गिटार, वायलिन, हारमोनियम व बाँसुरी इत्यादि। बच्चों को सुर रागों और ताल की दुनिया से भी परिचित कराया जाता है और वे विभिन्न प्रकार के आयोजनों में वाद्य यंत्रों के सामूहिक प्रदर्शन द्वारा भी दर्शकों को लुभाते हैं।

नृत्य

राष्ट्रीय बाल भवन बच्चों को 'शास्त्रीय' एवं 'लोक' दोनों प्रकार के नृत्यों को सीखने का अवसर प्रदान करता है। बच्चे विभिन्न प्रकार की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को सीखते हैं और 'कोरियोग्राफी' की कला के विषय में भी जानते हैं। नृत्य द्वारा वे विभिन्न प्रकार की मुद्राओं, भाव और अभिनय का ज्ञान प्राप्त करते हैं। उन्हें 'तेरहताली', 'घूमर', 'पनिहारी', 'भोपा–भोपी', 'डांडिया', 'रास', 'गरबा' और 'भिगसा' आदि अनेक लोक नृत्यों को सीखने का अवसर भी मिलता है। लोक नृत्य से प्राप्त ज्ञान उन्हें भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों में पहने जाने वाले परिधानों और आभूषणों के बारे में भी जानकारी देता है। बच्चे साथ अपने विचारों को नवीन तरीकों और सृजनात्मक मुख मुद्रा एवं हाव भावों से अभिव्यक्त करना भी सीखते है।

नाटक

नाटक अपने आप को अभिव्यक्त करने का सबसे अनोखा और प्रेरक तरीका है। इस अनुभाग में बच्चे एक विचार पर कार्य करना शुरू करते हैं और उस विचार को विस्तार देकर एक आलेख बनाया जाता है। फिर संवाद, सेट, पोशाक के डिज़ाइन और काम में आनेवाली सहायक सामग्री के संबंध में विस्तृत रूप से चर्चा की जाती है। अंततः नाटक निर्माण का कार्य सम्पन्न होकर अनुभाग के शिक्षकों और बच्चों का समन्वित प्रयास एक अनोखे उदाहरण के रूप में सामने आता है। इस अनुभाग में बच्चे परम्परागत व नवीनतम शैली के नाटकों की विधाओं को भी सीखते हैं जैसे–भवाई, थेरुकुत्थु, नौटंकी व नुक्कड़ नाटक आदि। बच्चे उन अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित नाटक महोत्सवों में भी भाग लेते हैं, जिनके उद्देश्य बाल भवन के समान है।

कठपुतली

कठपुतली, बच्चों के साथ सम्प्रेषण का अत्यन्त प्रभावशाली माध्यम है। यह अनुभाग अंतर्मुखी बच्चों को भी कठपुतली का संचालन कर उनके विचारों को अभिव्यक्ति देने में मदद करता है। बच्चे न केवल कठपुतली देखना पसंद करते हैं बल्कि उन्हें बनाने में भी आनन्द लेते हैं। उन्हें यह भी जानकारी दी जाती है कि किसी विशेष मंचन के लिए किस प्रकार सही वातावरण बनाया जाए, कठपुतलियों की पोशाकों को किस प्रकार संयोजित किया जाता है, कैसे संगीत की लय के साथ कठपुतली को नचाना चाहिए और किस प्रकार बोलते समय संवादों और ओठों के संचालन में तालमेल होना चाहिए। बच्चे साधारणतया हाथ और अंगूठे द्वारा चलाई जाने वाली कठपुतलियों का सरलता से उपयोग कर पाते है। इस विभाग द्वारा शिक्षकों के लिए कठपुतली कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाता है और बच्चों के लिए कठपुतलियों के नियमित प्रदर्शन भी आयोजित किए जाते है।

ताल–वाद्य

बच्चे इस गतिविधि में बहुत रुचि लेते हैं। वाद्य यंत्र, संगीत और नृत्य के लिए एक निश्चित लय और गति बनाने में सहायता करते हैं। इस अनुभाग में तबला, मृदंग, कौंगो, बौंगो, ढोलक, डमरू आदि जैसे अनेक वाद्ययंत्र बड़ी संख्या में बच्चों को आकर्षित करते हैं।

छायांकन (फोटोग्राफी)

छायांकन बाल भवन की उन गतिविधियों में से एक है जिसके अंतर्गत बच्चों को छायांकन से जुड़े विभिन्न कार्यों जैसे फोटो खींचना, उनका प्रिंट तैयार करना और उन्हें बड़ा करना आदि से परिचित कराने के साथ–साथ ही बच्चों को अभिनव तरीकों का प्रयोग करने के लिए भी प्रेरित किया जाता है। छायांकन के द्वारा बच्चे विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों, पशु पक्षियों, उनकी आदतों, तरह–तरह की इमारतों, विभिन्न भौगोलिक स्थानों और वहाँ रहने वाले लोगों की जीवन शैली आदि का अनुभव एवं उनके विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं। बच्चे रोचक दृश्यों को चित्रों में बाँध सकने और आधुनिक तरीकों का प्रयोग कर किस प्रकार छायांकन की दक्षता में निखार ला सकते हैं यह भी सीखते हैं। डिजिटल कैमरे का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है यह भी बाल भवन की फोटोग्राफी कक्षाओं में बताया जाता है। बच्चों को बेहतर प्रशिक्षण की दृष्टि से फोटो प्रभाग में भी ले जाया जाता है। कैमरा संचालन के तरीके, उसके विभिन्न अंग, उनकी कार्यप्रणाली, सही एक्सपोज़र की आवश्यकता, फिल्म को डेवलप करना तथा कांटेक्ट प्रिंटिंग की तकनीकें भी यहाँ सिखाई जाती हैं। इस विभाग द्वारा वीडियोग्राफी की कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाती हैं, जहाँ बच्चों द्वारा वीडियो कार्यक्रम निर्मित किए जाते हैं। स्क्रिप्ट लेखन, कैमरा संचालन, संवाद व ध्वनि रिकार्डिंग से लेकर निर्माण तक सभी कार्य बच्चों द्वारा प्रशिक्षकों की देख–रेख में किए जाते हैं। इस विभाग द्वारा विभिन्न विषयों पर फोटोग्राफी प्रदर्शनियाँ भी लगाई जाती हैं, जिनमें बच्चों द्वारा किए गए कार्य का प्रदर्शन होता है।

शारीरिक शिक्षा

खेल और शारीरिक गतिविधियाँ हर उम्र के बच्चों को प्रिय होती हैं। शारीरिक शिक्षा अनुभाग द्वारा बच्चों को अनेक प्रकार की गतिविधियाँ यथा टेबल टेनिस, बैडमिंटन, फुटबॉल, क्रिकेट, बास्केटबॉल व योग से लेकर जूडो और स्केटिंग तक सिखाई जाती हैं। शारीरिक शिक्षा विभाग के पास अपना जिम्नेज़ियम है, जहाँ बच्चे प्रशिक्षकों की देख–रेख में न केवल विभिन्न प्रकार के खेलों की जानकारी प्राप्त करते हैं बल्कि उन्हें अपनी रचनात्मकता बढ़ाने और सृजनात्मक खेलों को बनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। इस विभाग द्वारा आयोजित जूडो एक ऐसी गतिविधि है, जिसके कारण इस संस्था को बहुत सम्मान मिला है। बाल भवन को ऐसे बच्चों को प्रशिक्षित करने का गौरव है जिन्होंने न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सफलता पाई है और देश को गौरव प्रदान किया है। नवनिर्मित 'स्केटिंग रिंक' भी बच्चों में बहुत लोकप्रिय है और सम्भवतः यह दिल्ली के स्केटिंग रिंकों में सर्वोत्तम है। शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा अंतर्विद्यालयीय जूडो टूर्नामेंट आयोजित किए जाते हैं जिनमें विभिन्न स्कूलों और संस्थाओं के बच्चे भाग लेते हैं और इसका आनंद उठाते हैं। इसके द्वारा अंतर्विद्यालयीय क्रिकेट और फुटबॉल की प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं। इनमें भी विभिन्न स्कूलों के बच्चे भाग लेते हैं और इसका आनंद लेते हैं। बाल भवन का खेल का मैदान और शारीरिक शिक्षा विभाग की अन्य सुविधाएँ, बाल भवन के उन सदस्य विद्यालयों को भी उपलब्ध हैं जिनके पास अपना खेल का मैदान नहीं है और जहाँ 'इनडोर' खेल सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। यह विभाग विभिन्न प्रकार की साहसिक यात्राएँ, ट्रैक और फील्ड ट्रिप आदि भी आयोजित करता है।

गृह प्रबंधन

गृह प्रबंधन विभाग में बच्चों को अच्छी और सुचारू 'गृह व्यवस्था' के विभिन्न आयामों/पक्षों से परिचित कराया जाता है। बच्चे विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थों को बनाने का प्रयास करते हैं और प्रशिक्षकों की देख–रेख में पाक कला की नई–नई विधियाँ सीखते हैं। वे खाना बनाने में आत्मनिर्भर बनते हैं और स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक और लागकारी भोजन बनाना सीखते हैं और बनाते है। बच्चों को भोजन

का बजट बनाने और उसमें आने वाले खर्च का आकलन करना भी सिखाया जाता है। बच्चों के साथ नियमित रूप से स्वास्थ्य, स्वास्थ्य विज्ञान व स्वच्छता पर चर्चाएँ की जाती हैं। उनके लिए भोजन संरक्षण की प्रयोगात्मक कक्षाएँ भी आयोजित की जाती हैं। इस विभाग द्वारा पुष्प–राज्जा (इकेबाना), बेकरी भोज्य पदार्थ बनाने आदि की विभिन्न कार्यशालाएँ भी संचालित की जाती हैं।

संग्रहालय तकनीक क्लब

राष्ट्रीय बाल भवन का राष्ट्रीय बाल संग्रहालय विभिन्न अवसरों पर विषयगत प्रदर्शनियाँ लगाकर बच्चों का ज्ञानवर्द्धन करता है। इस बाल संग्रहालय में कुछ स्थायी प्रदर्शनी दीर्घाएँ है, जिन्हें देखने के लिए प्रतिदिन हज़ारों बच्चे आते हैं और जो स्कूली शिक्षण पद्धति की प्रतिपूरक हैं। राष्ट्रीय बाल संग्रहालय की एक योजना है –'संग्रहालय तकनीक क्लब', जिसमें मिट्टी से सांचा (मोल्ड) बनाने तथा प्लास्टर ऑफ पेरिस के द्वारा ढलाई करने (कास्ट बनाने) की साधारण तकनीक से लेकर पीस मोल्ड बनाने, माउंटिंग करने एवं आलेख लेखन जैसे जटिल कार्यों को भी सिखाया जाता है। बच्चों को ऐसा अनुभव कराया जाता है जिससे उनके प्रकृति, इतिहास, संस्कृति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधी ज्ञान का विस्तार होता है। इस विभाग द्वारा कई परियोजनाएँ आरम्भ की गई हैं और बच्चों को अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित किया जाता है। विषयगत और पाठ्यक्रम पर आधारित कार्यशालाओं द्वारा बच्चों को अपनी प्राचीन सभ्यता, अपने इतिहास, प्राचीन धरोहर और संस्कृति से अवगत कराया जाता है। इस विभाग द्वारा विशेष कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाती हैं जिनमें बच्चों को उत्खनन के स्थलों पर ले जाकर प्रत्यक्ष अनुभव कराया जाता है। इस प्रकार का प्रत्यक्ष अनुभव उनके ज्ञान का विस्तार करता है।

प्रकाशन–संबंधी गतिविधियाँ

राष्ट्रीय बाल भवन की एक अनोखी गतिविधि है –प्रकाशन सम्बन्धी गतिविधि, जो प्रकाशन विभाग द्वारा संचालित की जाती है। यह विभाग बाल भवन के विभिन्न प्रकाशनों को तैयार करने, उनके लिए अनुसंधान तथा उनके संपादन का कार्य करता है। यह विभाग बच्चों को भी उनकी अपनी पत्रिका 'अक्कड़ बक्कड़, न्यूज़ लैटर 'सुलक्ष्य' तथा ग्रीष्म रात्र के दौरान निकाले जाने वाले बच्चों के समाचार पत्र, 'अक्कड–बक्कड टाइम्स' के प्रकाशन कार्य में सम्मिलित करता है। इस गतिविधि द्वारा बच्चे न केवल अख़बार और पत्रिकाओं के निर्माण में काम आनेवाली विभिन्न तकनीकों से परिचित होते हैं बल्कि उनमें सृजनशीलता एवं आत्मविश्वास का विकास होता है और वे एक सुव्यवस्थित नागरिक के रूप में विकसित होने की ओर प्रवृत्त होते हैं। बच्चों को विभिन्न प्रकाशन गृहों तथा समाचार चैनलों के कार्यालयों में भी ले जाया जाता है ताकि उन्हें विभिन्न माध्यमों के लिए समाचार संकलन, प्रेक्षण, संपादन, प्रस्तुतीकरण व छपाई तकनीक के सम्बन्ध में कुछ प्रत्यक्ष अनुभव मिल सके। इस विभाग का एक अन्य रोचक कार्य विभिन्न विषयों पर 'प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम' तथा 'टॉक शो' आयोजित करना है, जो बच्चों और बड़ों सभी को आनंदित करता है और प्रत्येक के लिए एक 'आईओपनर' है, जो यह प्रदर्शित करता है कि हमारी नई पीढ़ी कितनी जागरूक और जिम्मेदार है।

पुस्तकालय व साहित्यिक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय बाल भवन का पुस्तकालय एक बहुत बड़ा पुस्तकालय है जिसमें लगभग 45,000 पुस्तकें हैं। ये पुस्तकें कला, शिल्प, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, गणित, कंप्यूटर, कहानियां और कविताओं आदि विभिन्न विषयों पर हैं और यहाँ एक सदर्भ विभाग भी है। पुस्तकालय में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू , तमिल व बंगला आदि भाषाओं की पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। बच्चों के लिए विभिन्न पत्रिकाएं भी उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त इस विभाग द्वारा सृजनात्मक लेखन की गतिविधि भी आयोजित की जाती है, जिसमें बच्चे विषय विशेष और विभिन्न विषयों पर आलेख लिखते हैं। बच्चों के लिए साहित्यिक शिविर लगाए जाते हैं जिनमें वे बाल भवन के प्रांगण में ही रहते हैं और विभिन्न लेखकों व कवियों आदि से परिचर्चा द्वारा अपनी लेखन क्षमता और कौशल को विकसित करते हैं। इस विभाग द्वारा कहानी सुनाने के सत्रों का आयोजन भी किया जाता है, जिसमें हर उम्र के बच्चे आनंद लेते हैं। इस विभाग द्वारा प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम, पुस्तकों पर परिचर्चा, वाद–विवाद और विभिन्न सामाजिक विषयों पर वार्तालाप आयोजित किये जाते हैं। विभाग द्वारा कवि सम्मेलनों का आयोजन भी किया जाता है, जो अत्यंत लोकप्रिय है जिसमें बच्चे न केवल अपनी रचनाओं का पाठ करते हैं बल्कि उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है और अधिक मुखरित होते हैं।

विज्ञान कार्यकलाप

बाल भवन में विज्ञान कक्षा या प्रयोगशाला विषय मात्र नहीं है बल्कि यह ज़िन्दगी की एक बड़ी प्रयोगशाला 'प्रकृति' का हिस्सा है, जिसके माध्यम से बच्चा प्रतिदिन होनेवाली घटनाओं से वैज्ञानिक सिद्धान्तों को जोड़कर अपना ज्ञान बढ़ाता है। बाल भवन विज्ञान के आधारभूत सिद्धांतों का ज्ञान बच्चों को रोज़मर्रा के जीवन में होने वाली विविध गतिविधियों से सीधा जोड़कर देखने में विश्वास रखता है। बाल भवन की 'विज्ञान–शिक्षण प्रणाली' की शिक्षा का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है 'एकीकृत पद्धति', जिसमें विज्ञान सभी गतिविधियों का एक अखंड हिस्सा है।

बाल भवन पर्यावरण विज्ञान को भी बहुत महत्व देता है तथा प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ–साथ अपनी संस्कृति, कला, शिल्प, लोक कला व साहित्य की परंपराओं और ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण पर भी बल देता है।

बाल भवन द्वारा पर्यावरण से संबंधित कई परियोजनाओं के अलावा 'हरितवाहिनी' यानि बच्चों की हरित सेना द्वारा विशाल 'हरित क्रांति' विषयक परियोजना भी चलाई जा रही है। बच्चों को पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराने के लिए प्रकाशन विभाग के सहयोग से एक न्यूजलेटर 'सुलक्ष्य' भी निकाला जाता है जिसमें कहानी, कविता, लेख व नारे आदि के माध्यम से बच्चों की सहभागिता भी होती है। अधिकतम बच्चों तक पहुँचने के उद्देश्य से 1990 से राष्ट्रीय स्तर पर "राष्ट्रीय युवा पर्यावरण विज्ञानी सम्मेलन" भी प्रारंभ किया गया है। इस अद्भुत और अर्थपूर्ण सम्मेलन में राष्ट्र

के विभिन्न भागों के बच्चे भाग लेते हैं और अपने–अपने पर्यावरण से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते है। इसमें केवल भौतिक पर्यावरण को ही नहीं, वरन् सामाजिक, संवेगात्मक और सांस्कृतिक पर्यावरण को भी समाहित किया जाता है।

विज्ञान शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बच्चे में 'वैज्ञानिक प्रवृत्ति' का विकास करना है। विज्ञान शिक्षा केंद्र के विभिन्न उप–अनुभाग हैं जो बच्चों को विज्ञान के नियम और सिद्धांत सीखने में मदद करते हैं। उन्हें भौतिक/प्राकृतिक विज्ञान के अतिरिक्त दैनिक जीवन में विज्ञान से भी परिचित कराया जाता है। इस अनुभाग के कार्यकलापों में रेडियो–इलेक्ट्रॉनिक्स, एअरो मॉडलिंग, मशीन मॉडलिंग, खगोल विज्ञान, कम्प्यूटर, मछलीघर एवं छोटा चिड़ियाघर, क्यों और कैसे क्लब, पर्यावरणीय कार्यकलाप के साथ–साथ यात्राएँ, ट्रैक्स और वैज्ञानिकों से भेंट, विशेष फिल्म शो तथा समय–समय पर शिविरों के आयोजन आदि शामिल हैं। आई बी.एम. ने राष्ट्रीय बाल भवन को दो कम्प्यूटर भेंट स्वरूप प्रदान किये है। इसमें उपलब्ध सॉफ्टवेयर विशेष रूप से बच्चों के लिए विज्ञान को सरल रूप में प्रस्तुत करते है। ये सॉफ्टवेयर खगोलशास्त्र, समुद्री जीवन, जीव विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान संबंधी खेल उपलब्ध कराते है। इसके अलावा इन पर आभासी वैज्ञानिक प्रयोग व एक पोस्टकार्ड पोस्ट करना भी संभव है। 'ट्राई साइंस' में कोई भी सदस्य बच्चा इन कम्प्यूटरों का उपयोग कर सकता है। बाल भवन में बच्चे को विज्ञान कार्यकलाप में भाग लेने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह स्कूल में विज्ञान का विद्यार्थी हो, बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि उसमें 'क्यों' और 'कैसे' की उत्सुकता और सीखने की इच्छा हो। 'विज्ञान शिक्षा' के अंतर्गत निम्न उप–अनुभाग बच्चों के लिए कार्य करते हैं:

कम्प्यूटर

कम्प्यूटर एक बहुत लोकप्रिय कार्यकलाप है जो दिन–प्रतिदिन अधिकाधिक बच्चों को आकृष्ट कर रहा है। यहाँ बच्चे कम्प्यूटर की आरंभिक भाषा सीखने के साथ–साथ कार्यक्रम बनाना भी सीखते हैं। बच्चों को बड़ी संख्या में विज्ञान के विषय पर सॉफ्टवेयर और कम्प्यूटर खेल उपलब्ध कराए जाते हैं। कम्प्यूटर का यह कार्यकलाप स्कूली शिक्षा का सम्पूरक है। इंटरनेट संबंधी ज्ञान देकर बाल भवन कम्प्यूटर की आधुनिकतम प्रणाली से बच्चों को परिचित करा रहा है। इस अनुभाग में अनेक अर्थपूर्ण और नवप्रवर्तक कार्यशालाएं और संगोष्ठियां भी आयोजित की जाती हैं।

एअॅरो मॉडलिंग

'एअॅरो मॉडलिंग' जैसा महँगा शौक भी बाल भवन के बच्चों के लिए सुलभ है। यहाँ बच्चे वायुगति के मूलभूत सिद्धांतों से लेकर विभिन्न प्रकार के वायुयानों के मॉडल बनाना सीखते हैं और अपने मॉडल 'वायुयानों' को उड़ाने का आनंद भी उठाते हैं। इस कार्यकलाप का उद्देश्य बच्चों में विमान और उसे उड़ाने का आनंद उठाने में रुचि पैदा करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना है। इस अनुभाग द्वारा मॉडल रॉकेट्री की कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाती हैं।

रेडियो और इलेक्ट्रॉनिक्स

इस अनुभाग में 12 से 16 वर्ष की उम्र के बच्चों को सदस्यता दी जाती है, जहाँ बिजली के मूल सिद्धांत, बिजली के तार लगाना और घरेलू उपकरणों की स्वयं मरम्मत करना, 'सर्किट' के साथ नए प्रयोग, रेडियो और टी.वी. के पुर्ज़े जोड़ना जैसे अनेक कार्यकलाप हैं। यहाँ बच्चे डिजिटल घड़ियों और नई ऊर्जा–युक्तियों (जैसे–सौर उर्जा के मॉडल) के जटिल सर्किट सीखते हैं। बढ़ती हुई विकसित संचार व्यवस्था की आवश्यकता को देखते हुए अधिक से अधिक लोग 'हैम रेडियो क्लब' के सदस्य बन रहे हैं। इस दिशा में बाल भवन ने भी शुरुआत की ताकि इस क्लब के सदस्य बच्चे परीक्षा पास करके अपने–अपने घरों में हैम स्टेशन की स्थापना कर सकें। इस प्रकार बेहतर सांचार व्यवस्था द्वारा विश्व के बच्चे एक–दूसरे के करीब आ सकेंगे और आपसी सम्पर्क स्थापित कर सकेंगे।

मशीन मॉडलिंग

इस अनुभाग में बच्चों को मशीन और इंजीनियरी की मूलभूत प्रणालियों और सिद्धांतों को समझाया जाता है। बच्चे यहाँ गत्ते के 'चल–मॉडल' बनाना सीखते हैं। वे विद्यमान मशीनों के मॉडल के साथ–साथ ऐसे मॉडलों का भी अविष्कार करते हैं जिनका दैनिक जीवन में प्रयोग किया जा सकता है। यह एक अनोखा कार्यकलाप है जो बच्चों को मशीन और टेक्नोलॉजी की दुनिया का परिचय कम लागत के परीक्षणों द्वारा कराता है।

पर्यावरण

पर्यावरण अनुभाग के सदस्य वे बच्चे हैं जो पर्यावरण के प्रति चिंतित एवं सजग है।

'हरितवाहिनी आंदोलन' का आरंभ 19 नवम्बर, 1986 को श्री राजीव गाँधी ने किया। हरित वाहिनी अथवा बच्चों का हरित बल बाल भवन के पर्यावरणीय कार्यक्रम का एक अंग है। इस आंदोलन के उद्देश्यों में से कुछ हैं–बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करना, उसकी देखभाल करने की ओर उन्हें प्रेरित करना तथा उनमें प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करना। इस विभाग के कार्यकलापों में बीजों तथा प्राकृतिक वस्तुओं का संचयन, प्राकृतिक ऐतिहासिक म्यूजियम, चिड़ियाघर का भ्रमण और वृक्षारोपण, पर्यावरणीय अभियान शामिल हैं। राष्ट्रीय बाल भवन के 54 बाल भवन केंद्र सक्रिय रूप से पर्यावरणीय जागरुकता के संदेश के प्रचार–प्रसार में लगे हुए हैं। यह अनुभाग पर्यावरण सप्ताह आयोजित करता है जिसमें रैलियाँ, चर्चाएँ, वृक्षारोपण व सफाई परियोजनाओं को शामिल किया जाता है। अनुभाग द्वारा प्रतिवर्ष 'युवा पर्यावरण वैज्ञानिकों का राष्ट्रीय सम्मेलन' भी आयोजित किया जाता है। पर्यावरण अनुभाग में पैराबोलिक सौर कुकर, बॉक्स प्रकार का सौर कुकर, प्लांट प्रेरा, पेपर रिसाइक्लिंग यूनिट आदि संसाधन भी हैं। बच्चों को प्रकृति–अध्ययन के लिए स्वयं सामग्री निर्मित करने को प्रेरित किया जाता है। यही नहीं पर्यावरण संबंधी मॉडल बनाने के लिए भी सुझावों, दिशा निर्देश हेतु वे अनुभाग में परामर्श कर सकते हैं।

राष्ट्रीय बाल भवन ने शाश्वतता की ओर बढ़ने के भी प्रयास किये हैं– एक 'पेपर रिसाइक्लिंग यूनिट' के माध्यम से सभी अनुभागों के रद्दी कागजों को एकत्र करके हस्तनिर्मित कागज तैयार किये जा रहे हैं। जल स्तर बढ़ाने के उद्देश्य से विज्ञान वाटिका में 'वर्षा जल–संग्रहण संयंत्र' लगाया गया है, नर्सरी में एक 'कम्पोस्टिंग यूनिट' को लगाया गया है, कैंटीन के निकट एक कम लागत का वाटर फिल्टर लगाया गया है तथा बुनाई अनुभाग में अनुपयोगी प्लास्टिक की बुनाई करने का संयंत्र लगाया गया है। ये संयंत्र सी. ई. ई. तथा जी. ए. ने राष्ट्रीय बाल भवन को उपहार स्वरूप प्रदान किये हैं।

खगोल विज्ञान

आकाश अपने भीतर अनजान आकाशगंगाओं से संबंधित अनेकानेक अनसुलझे रहस्यों को समेटे है। अतिप्राचीन काल से मनुष्य इन रहस्यों को समझने में लगा हुआ है। बाल भवन में कम लागत के एक तारामंडल एकक की स्थापना की गई है। बच्चे इन कार्यकलापों में आनंद लेते हैं। वे आकाश के ग्रहों और तारों आदि के बारे में अधिक जानकारी के लिए उत्सुक रहते हैं।

खगोल विज्ञान अनुभाग बच्चों और विशेष व्यक्तियों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यशालाओं/कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है।

इन प्रशिक्षण कार्यशालाओं के संचालन का उद्देश्य सहभागियों में तकनीकी समझ को बढ़ाने, संचालन क्षमताओं और व्यावहारिक प्रशिक्षण जैसे कार्यकलापों का विकास करना है। इन सभी कार्यकलापों का आयोजन उस केंद्र पर प्रायोजित परियोजना के अंतर्गत किया जाता है, जिसके अंतर्गत सभी राज्य बाल भवनों, सदस्य स्कूलों, बाल भवन केन्द्रों को 'विज्ञान शिक्षा प्रसार' हेतु सामग्री दी जाती है। इसके अतिरिक्त प्रकाशीय ज्ञान बढ़ाने हेतु कम लागत की दूरबीन (टेलिस्कोप) बनाने की कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाती हैं। दूरबीन के इस्तेमाल व रख–रखाव की जानकारी भी दी जाती है।

शिक्षकों और बच्चों के लिए राष्ट्रीय बाल भवन और जवाहर बाल भवन, मांडी में 'रात्रि शिविर' तथा 'आकाश अवलोकन' सत्र भी आयोजित किए जाते हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य आकर्षण हैं:–'क्यों और कैसे' क्लब, मछलीघर, छोटा चिड़ियाघर एवं विज्ञान वाटिका और उनमें आयोजित विभिन्न प्रकार के कार्यकलाप, जो बच्चों का ज्ञान बढ़ाते हैं और उन्हें सीखने का आनंद प्रदान करते हैं। 'क्यों और कैसे' क्लब के कार्यकलाप अन्वेषणात्मक विज्ञान परियोजनाओं पर आधारित होते हैं, जहाँ बच्चे नए–नए ज्ञान–विज्ञान संबंधी खेल/मॉडल इत्यादि बनाना सीखते हैं। मछलीघर एवं छोटा चिड़ियाघर क्लब में बच्चे जीव–जन्तुओं की आदतों, रहन–सहन व परिस्थिति अनुकूलन के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

विस्तार परियोजनाएं

बाल भवन केन्द्र

बाल केन्द्रों की स्थापना, बाल भवन की गतिविधियों को अधिक से अधिक बच्चों तक विशेष रूप से उपेक्षित तथा साधनविहीन बच्चों तक पहुँचाने के लिए की गई। बाल केन्द्र योजना को प्रारंभ किये जाने के पीछे मूल चिंतन बाल भवन को ऐसे बच्चों तक पहुँचाना था, जो दूर होने के कारण राष्ट्रीय बाल भवन तक नहीं आ सकते। प्रारंभ में सन् 1979 में प्रायोगिक तौर पर आठ बाल केन्द्रों की स्थापना की गई तथा 1990 तक इनकी संख्या बढ़कर 52 हो गई। ये बाल केंद्र विभिन्न स्लम इलाकों, पुनर्वास बस्तियों, तिहाड़ जेल, बाल-सुधार गृहों, ग्रामीण कुटीरों में चलाए जाते हैं। ये केन्द्र अधिकांशतः दिल्ली नगर निगम अथवा दिल्ली प्रशासन के सरकारी विद्यालयों के परिसर में चलाए जाते हैं।

ये बाल केंद्र आसपास के क्षेत्र में रहने वाले बच्चों के लिए सृजनात्मक केंद्र के रूप में कार्य करते हैं तथा बच्चों को एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं, जहाँ वे दृश्य एवं प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से आत्माभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त कर सकें। यहाँ बच्चों को स्वस्थ, प्रतियोगिता विहीन व तनाव रहित वातावरण में विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ उपलब्ध होती हैं।

ऐसे स्थानों पर, जहाँ सामाजिक दृष्टि से पिछड़े व आर्थिक रूप से विपन्न लोग रहते हैं, 54 बाल भवन केन्द्र चल रहे हैं। ये केन्द्र उन बच्चों के अनुभव क्षेत्र का विस्तार कर रहे हैं, जिन्हें स्वस्थ वातावरण नहीं मिल पाता, जो कि उनके विकास के लिए अनिवार्य है। इन बाल भवन केन्द्रों में आने वाले बच्चों में से लगभग 92 प्रतिशत बच्चे समाज के निम्न वर्ग से आते हैं और इस दृष्टि से ये केन्द्र समाज के पिछड़े व साधनविहीन वर्ग के बच्चों की सृजनशीलता के विकास में सार्थक योगदान दे रहे हैं। इन केंन्द्रों पर बाल भवन के बच्चे कला व शिल्प, पेंटिंग, ड्राइंग, क्ले मॉडलिंग, हस्तशिल्प, संगीत, नृत्य, नाटक आदि सीखते हैं। ये केन्द्र बच्चों को सीखने के विविध प्रकार के अनुभवों से संप्रेषित कराने के साथ-साथ उनके बौद्धिक विकास तथा उनके सौंदर्यबोध को विकसित करने में भी सहायक हैं। ये बच्चे, जो कि समाज के आर्थिक रूप से विपन्न वर्ग से आते हैं, अपने विकास हेतु सर्वश्रेष्ठ अनुभव का लाभ प्राप्त करते हैं।

इन बाल केन्द्रों को चार क्षेत्रों – उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी तथा पश्चिमी, में विभाजित किया गया है। इस वर्ष इन बाल भवन केन्द्रों ने एक बार पुनः अपनी सृजनात्मक गतिविधियों को समाज के विभिन्न वर्गों के बच्चों तक पहुँचाया तथा पूरे वर्ष के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजित किया।

बाल भवन केन्द्रों की सूची

दक्षिणी क्षेत्र

1. **हौज़ रानी**
   मालवीय नगर
   राजकीय कम्पोज़िट आदर्श कन्या माध्यमिक विद्यालय,
   हौज़ रानी गाँव, मालवीय नगर,
   नई दिल्ली

2. **हुमायूँ पुर, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,**
   हुमायूँ पुर गाँव, नई दिल्ली

3. **कालकाजी, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,**
   निकट सब्जी मण्डी,
   के–ब्लॉक, कालकाजी, नई दिल्ली

4. **किदवई नगर**
   राजकीय कम्पोज़िट आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
   नं. –1, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली

5. **लाजपत नगर, चिल्ड्रन होम फॉर बॉयज़ (सी. एच. बी.)**
   समाज कल्याण विभाग,
   रा.रा.क्षे. दिल्ली सरकार,
   कस्तूरबा निकेतन कॉम्प्लेक्स,
   लाजपत नगर, दिल्ली – 110024

6. **लाजपत नगर–II–सी**
   नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,
   निकट डेरू साप्लाई ऑफिस और
   मदर डेयरी बूथ सं. 52,
   लाजपत नगर , नई दिल्ली

7. **ओखला, देव समाज मॉडर्न स्कूल,**
   नं. 2, सुखदेव विहार,
   मसीहगढ,
   एस्कॉर्ट्स हृदय अस्पताल के पीछे,
   नई दिल्ली

8. **एन.सी.ई.आर.टी., केंद्रीय विद्यालय**
   एन.सी.ई.आर.टी. परिसर
   कुतुब होटल के सामने, नई दिल्ली

9. **आई.आई.टी. परिसर, केंद्रीय विद्यालय,**
   आई.आई.टी. गेट,
   नई दिल्ली

10. **आर. के पुरम सेक्टर–9, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,**
    सेक्टर–9, आर. के पुरम, दिल्ली

11. **साकेत, राजकीय बाल माध्यमिक विद्यालय,**
जे–ब्लॉक, साकेत,
एमिटी इन्टरनेशनल स्कूल के सामने,
नई दिल्ली

12. **मदनपुर खादर, राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,**
(प्रातः पाली)
मदनपुर खादर,
नई दिल्ली

13. **दिल्ली गेट, प्रयारा ऑब्ज़र्वेशन्स होम फॉर बॉयज़**
कोटला फिरोज़शाह क्रिकेट स्टेडियम के पीछे,
दिल्ली गेट, नई दिल्ली

पश्चिमी क्षेत्र

1. **आदर्श नगर नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,**
निकट आदर्श नगर पार्क व मदर डेयरी,
नई दिल्ली

2. **अशोक नगर, राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय (सर्वोदय),**
निकट सुभाष नगर गोल,
अशोक नगर, नई दिल्ली

3. **कीर्ति नगर**
विलेज कॉटेज होम,
ए 38, निकट गुरुद्वारा,
कीर्ति नगर, नई दिल्ली

4. **बशर स्क्वेअर, केन्टोनमेंट बोर्ड सैकेंडरी स्कूल**
वॉर सैमेट्री रोड,
यू. आर. आई. एन्क्लेव,
बशर स्क्वेअर, दिल्ली कैंट, नई दिल्ली

5. **बाल निकेतन**
निर्मल छाया कॉम्प्लेक्स,
जेल रोड, निकट हरिनगर डिपो
नई दिल्ली

6 **रामजस रोड, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,**
प्रभात रोड, रामजस लेन,
करोल बाग, नई दिल्ली

7. **ईदगाह रोड, राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय,**
सराय खलील, ईदगाह रोड,
निकट सदर थाना चौक, नई दिल्ली–6

8. **विकास पुरी, सर्वोदय कन्या विद्यालय,**
डिस्ट्रिक्ट सेंटर III विकास पुरी,
नई दिल्ली

9. मजलिस पार्क, नगर निगम प्राथमिक बाल आदर्श विद्यालय,
मजलिस पार्क–II,
गली नं. 11,
नई दिल्ली

10. पश्चिमी पटेल नगर, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,
निकट मेट्रो पिलर न. 224,
शादी खामपुर गॉव,
पश्चिमी पटेल नगर,
नई दिल्ली

11. बालिका गृह, निर्मल छाया कॉम्पलैक्स,
बालिका गृह, जेल रोड,
नई दिल्ली

उत्तरी क्षेत्र

1. जहाँगीर पुरी, नगर निगम मॉडल स्कूल,
1–ब्लॉक, बाजार के निकट,
जहाँगीरपुरी, दिल्ली – 110033

2. झड़ौदा कलां, सी.आर.पी.एफ.
झडौदा कलां कल्याण केन्द्र,
सी.आर.पी.एफ.
झड़ौदा कलां, दिल्ली

3. नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,
सी–7, लॉरेन्स रोड,
निकट गुरूद्वारा, दिल्ली

4. एस.डी. पब्लिक स्कूल,
बी यू–ब्लॉक, पीतामपुरा,
निकट मेला राम दत्त विकित्सालय,
दिल्ली

5. दीनदार पुर नजफगढ़
मुखराम बहोरिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
झटीकरा मोड़, नजफगढ़,
दिल्ली

6. नांगलोई, बाल सहयोग भवन डिस्पैंसरी,
ई–ब्लॉक,
नांगलोई नं. 2, दिल्ली

7. ग्रामीण महिला सिलाई संघ,
पल्ला गॉव,
निकट पल्ला डी.टी.सी. स्टॉप,
दिल्ली

8. नगर निगम आदर्श विद्यालय,
रानी बाग
मुल्तानी मोहल्ला,
नई दिल्ली

9. सर्वोदय विद्यालय,
रोहिणी (सैक्टर–7)
नाहरपुर,
दिल्ली

10. राजकीय राह–शिक्षा माध्यमिक विद्यालय,
सैक्टर–2, रोहिणी,
दिल्ली

11. शालीमार बाग, नगर निगम कन्या विद्यालय बी,
टैंक रोड, निकट सिंगल पुर गाँव वाटर टैंक,
दिल्ली

12. सर्वोदय विद्यालय,
जे.जे.कालोनी,
वज़ीरपुर, दिल्ली

13. नगर निगम आदर्श विद्यालय
एच–ब्लॉक, फेज़–1,
निकट रामलीला मैदान,
अशोक विहार, दिल्ली

14. नवोदय विद्यालय,
मंगेश पुर,
दिल्ली

पूर्वी क्षेत्र

1. आनंद विहार
राजकीय कम्पोज़िट आदर्श राह–शिक्षा विद्यालय,
निकट आनंद विहार रेलवे स्टेशन,
आनंद विहार, दिल्ली – 110092

2. सूरजमल विहार
प्रतिभा विकास सर्वोदय विद्यालय,
निकट ई.एस.आई. इंदिरा गांधी अस्पताल,
गेट नं. 4, सूरजमल विहार,
दिल्ली – 110092

3. बलबीर नगर
नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,
(राठी गिल्ला के पीछे)
बलबीर नगर, शाहदरा,
दिल्ली

4. **विवेक विहार,** राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (सर्वोदय),
विवेक विहार,
दिल्ली

5. **भजनपुरा,** नगर निगम प्राथमिक विद्यालय
निकट वाटर टैंक व पुलिस स्टेशन,
भजन पुरा,
दिल्ली–110032

6. **ढक्का गाँव**
नगर निगम प्राथमिक विद्यालय
निकट ढक्का चौक तथा
ढक्का बस स्टॉप,
ढक्का गाँव, दिल्ली – 110009

7. **भोला नाथ नगर**
सनातन धर्म सीनियर सेकेंडरी स्कूल,
भोला नाथ नगर,
शाहदरा, दिल्ली – 110032
(अस्थायी रूप से बंद)

8. **कृष्णा नगर,** नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,
(पुराना भवन), ई–ब्लॉक,
निकट मुख्य बस स्टैण्ड,
हनुमान मंदिर के पीछे,
कृष्णा नगर,, दिल्ली – 110051

9. **मण्डावली**
इन्दर पब्लिक स्कूल,
गली नं. 3, साकेत ब्लॉक,
मण्डावली, दिल्ली

10. **मानसरोवर पार्क,** नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,
निकट डी.डी.ए. फ्लैट्स व सी.जी.एच.एस. डिस्पैंसरी,
पूर्वी मानसरोवर पार्क,
शाहदरा, दिल्ली – 110032

11. **मयूर विहार,** सर्वोदय बाल विद्यालय,
पूर्वी विनोद नगर,
पॉकेट–सी, मयूर विहार,
फेज–2 निकट बस स्टॉप,
दिल्ली – 110091

12. **शकरपुर,** नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,
स्कूल ब्लॉक,
निकट फ्लाई ओवर व बस स्टॉप, स्कूल ब्लॉक,
शकरपुर, दिल्ली – 110092

13. **पटपड़गंज**, जन–उत्थान बस्ती विकास केन्द्र,
शास्त्री मोहल्ला,
निकट पुलिस थाना व डाकघर,
पटपड़गंज, त्रिलोकपुरी,
दिल्ली – 110051

केन्द्रीय दिल्ली

1. **शहीद भगत सिंह मार्ग**
42–सी, गैराज, सेक्टर 4,
जी. आई. जैड. एरिया,
निकट जनता बुक डिपो,
कनॉट प्लस, नई दिल्ली

2. **मंदिर मार्ग**, हरकोर्ट बटलर सीनियर सेकेंडरी,
मंदिर मार्ग,
निकट बिरला मंदिर,
नई दिल्ली

जवाहर बाल भवन, मांडी, दिल्ली

साठ के दशक के मध्य, जवाहर बाल भवनों को स्थापित किये जाने की एक योजना प्रारंभ की गई। देश के विभिन्न भागों में कई बाल भवन स्थापित किये गए तथा राज्य में स्थित इन बाल भवनों के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करने के लिए उन प्रदेशों में जवाहर बाल भवनों की स्थापना की गई। माण्डी स्थित जवाहर बाल भवन उसी योजना का विस्तार था, जिसे प्रारंभ में नेहरू स्मारक निधि द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की गई। मांडी में इस ग्रामीण बाल भवन ने सन् 1972 में मांडी गाँव की 'चौपाल' में कार्य करना प्रारम्भ किया।

3 फरवरी, 1973 को बाल भवन की इस ग्रामीण इकाई का उद्घाटन श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा किया गया। मांडी की ग्राम पंचायत द्वारा उपलब्ध कराई गई लगभग 4.75 एकड़ ज़मीन पर स्थित यह ग्रामीण केंद्र मांडी, महरौली, जौनापुर, गदईपुर, सुल्तानपुर, मंगलापुरी, व ग्वालपहाड़ी, बंधबाड़ी, असोला, आयानगर पिटोरनी, छतरपुर, मैदानगढ़ी, राजपुर, सतबाड़ी, चंदनहोला, फतेहपुर बेरी, डेरा, भाटी माइन्स तथा नेब सराय के गाँवों के बच्चों की जरूरतों को पूरा करता है।

इस जवाहर बाल भवन में शारीरिक शिक्षा, कला व शिल्प, सिलाई, काष्ठशिल्प तथा फ्ले मॉडलिंग की गतिविधियाँ उपलब्ध हैं। मांडी बाल भवन ने ग्रामीण बच्चों की रुचि का काफी परिष्कार किया है तथा हाल ही में लोकप्रियता तथा माँग को देखते हुए फ़ोटोग्राफ़ी तथा कम्प्यूटर जागरूकता जैसी गतिविधियों को भी यहाँ प्रारम्भ किया गया है।

आई.बी.एम. ने जवाहर बाल भवन, मांडी को एक कम्प्यूटर रोटअप भेंट स्वरूप प्रदान किया। इसमें विशेष रूप से ऐसा सॉफ्टवेयर डाला गया है, जो विशेष खगोलविज्ञान, रामुद्री जीवन, जीव विज्ञान तथा गौतिकी के अंतर्व्यावहारिक खेलों के माध्यम से बच्चों के लिए विज्ञान को अत्यंत सरल रूप में उपस्थित करता है। इन कम्प्यूटरों के माध्यम से बच्चे संसार भर के किसी भी विज्ञान संग्रहालय की सैर कर सकते हैं। इसके अलावा, वे इन पर वैज्ञानिक प्रयोग भी कर सकते हैं, पोस्टकार्ड पोस्ट कर सकते हैं तथा अन्य अनेक कार्य कर सकते हैं। जवाहर बाल भवन का कोई भी सदस्य 'ट्राई साइंस अनुभाग' में इन कम्प्यूटरों का उपयोग कर सकता है। जवाहर बाल भवन, मांडी को एक पैराबोलिक सौर कुकर, सामुदायिक सौर कुकर तथा एक मोबाइल पेपर रिसाइक्लिंग मशीन भी प्रदान की गई है। बच्चों का मनोरंजन उद्यान और पुस्तकालय बच्चों के लिए विशेष आकर्षण है।

मांडी तथा अन्य निकटवर्ती गाँवों के बच्चों के मानसिक, शारीरिक तथा सांस्कृतिक विकास में जवाहर बाल भवन, मांडी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह ग्रामीण बाल भवन कम्प्यूटरों, सिलाई तथा बुनाई मशीनों, पुस्तकालय आदि से सुसज्जित है। शिल्पकला, मूर्तिकला, पेंटिंग, काष्ठ–शिल्प, फ़ोटोग्राफ़ी आदि को सीखने के पर्याप्त अवसर यहाँ उपलब्ध हैं तथा आसपास के गाँवों के बच्चे अपने समग्र विकास हेतु इनका भरपूर उपयोग कर रहे हैं। बच्चों को विभिन्न विषयों संबंधी नवीन जानकारी प्रदान करने हेतु समय–समय पर यहाँ विभिन्न प्रकार की कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं। इन कार्यशालाओं में मेहंदी लगाने/रचाने की पारंपरिक कला, ज़िन्दसाज़ी, स्क्रीन–प्रिंटिंग, पतंग बनाने की कला, पेपर–मैशी, मूकाभिनय, संगीत, एअरो मॉडलिंग, मछलीघर बनाने, मछली पालन तथा घरेलू उपकरणों की मरम्मत की कार्यशालाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

हमारे कार्यक्रम

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्यरत एक प्रमुख संस्था होने के नाते राष्ट्रीय बाल भवन इस तथ्य से अवगत है कि भारतवर्ष के करोड़ों बच्चे उन घरों से सम्बन्ध रखते हैं जिनके अभिभावक उनकी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाते और जो गरीबी की रेखा से नीचे जी रहे हैं। अतः राष्ट्रीय बाल भवन अपने सभी संसाधनों के साथ एकजुट होकर राष्ट्रीय स्तर पर बाल भवन आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने का प्रयत्न कर रहा है। आज राष्ट्रीय बाल भवन अपने 156 सम्बद्ध राज्य बाल भवनों, तथा 23 बाल भवन केन्द्रों के माध्यम से लाखों बच्चों तक पहुँचकर एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है। यही नहीं ज़िला स्तर के सैकड़ों बाल भवनों और ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों के बाल भवनों के नेटवर्क द्वारा लाखों बच्चों तक पहुँचने की महत्त्वपूर्ण भूमिका भी यह अदा कर रहा है। ये बाल भवन उन हज़ारों बाल केन्द्रों के अतिरिक्त हैं, जो अनेक सरकारी गैर/निजी तथा सरकारी संस्थाओं के सहयोग से देश के दूरदराज़ क्षेत्रों में संचालित हैं। अपने सतत प्रयत्नों और विश्वास के साथ राष्ट्रीय बाल भवन ने अपनी सीमाओं को पार करके दुनिया के दूसरे देशों में रहने वाले बच्चों तक पहुँचने का भी उपक्रम किया है तथा बाल भवन की संकल्पना को सांस्कृतिक आदान प्रदान के कार्यक्रमों एवं नए बाल भवनों की स्थापना द्वारा विस्तृत भी किया है। अतः राष्ट्रीय बाल भवन न केवल अपनी शैक्षिक व मनोरंजक गतिविधियों द्वारा बच्चों के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराता है बल्कि अनेकों स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों द्वारा अधिकतम बच्चों तक पहुँचने का प्रयास भी करता है।

स्थानीय स्तर के कार्यक्रम

बाल भवन अपनी नियमित गतिविधियों के अतिरिक्त अनेक अभिनव स्थानीय कार्यक्रमों को आयोजित करता है, जिनमें विभिन्न कार्यशालाएँ, सम्मेलन व गोष्ठियाँ आदि शामिल हैं। इन सभी गतिविधियों का उद्देश्य बच्चों के अनुभवों को समृद्ध करने के साथ–साथ उन्हें बहुआयामी गतिविधियाँ भी प्रदान करना है। इस प्रकार के उपक्रम जहाँ एक ओर बच्चे के दृष्टिकोण को व्यापक बनाते हैं, वहीं उसे अपनी राष्ट्रीय धरोहर, संस्कृति, परम्पराओं, कला व शिल्पों, साहित्य एवं वैज्ञानिक प्रगति से भी अवगत कराते हैं।

राज्य स्तर के कार्यक्रम

राष्ट्रीय बाल भवन एक अन्य प्रकार से संबद्ध राज्य बाल भवनों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और वह है विभिन्न सम्बद्ध बाल भवनों में जाकर उनकी विशेष आवश्यकता को या उनके आग्रह के अनुसार गतिविधि विशेष का आयोजन करना, यथा–फ़ोटोग्राफ़ी या एअरो मॉडलिंग की विशेष कार्यशाला, सजावटी चित्रकला व कार्टून बनाने के कार्यकलाप अथवा पुस्तक प्रकाशन संबंधी गतिविधियाँ आदि।

'उत्तरी क्षेत्र बालश्री शिविर' के लिए चयन हेतु दिल्ली का राज्य स्तरीय बालश्री शिविर 6 7 जुलाई, 2011 को आयोजित किया गया। इस शिविर में कुल 154 बच्चों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय स्तर के कार्यक्रम

राष्ट्रीय बाल भवन ऐसे भी कई उपक्रम करता है, जहाँ कई विशेष कार्यक्रम क्षेत्रीय स्तर पर भी आयोजित किए जाते है। इन कार्यक्रमों में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं–क्षेत्रीय बालश्री शिविरों का आयोजन, जिसके लिए संपूर्ण देश को पाँच क्षेत्रों में विभाजित किया गया है और उनमें भी दक्षिणी क्षेत्र को दक्षिणी क्षेत्र–1 और दक्षिणी क्षेत्र–2 में विभाजित किया गया है। इस प्रकार कुल मिलाकर छः क्षेत्रीय केंद्र हैं, जहाँ राष्ट्रीय बाल श्री शिविर में भाग लेने हेतु बच्चों का क्षेत्रीय स्तर पर चयन करने के लिए 'क्षेत्रीय बाल श्री शिविरों' का आयोजन किया जाता है।

'राष्ट्रीय बाल श्री शिविर' हेतु सहभागियों का चयन करने के लिए इस वर्ष सितम्बर से अक्तूबर, 2010 तक पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी, केंद्रीय व उत्तरी क्षेत्रों में छः क्षेत्रीय स्तर के बालश्री शिविरों का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय केंद्र क्रमशः कोलकाता, वडोदरा, गोपाल, जवाहर बाल भवन–माण्डी, हैदराबाद एवं तिरुवनंतपुरम तथा रोहतक थे।

इन क्षेत्र स्तरीय शिविरों के पश्चात्, राष्ट्रीय स्तर पर बाल श्री शिविर के लिए कुल 153 बच्चों का चयन किया गया।

इसके अतिरिक्त ऐसे और कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिनमें किसी एक क्षेत्र या इलाके के बाल भवन मिलकर क्षेत्रीय सम्मेलन कार्यक्रम आयोजित करते हैं। राष्ट्रीय बाल भवन ऐसे कार्यक्रमों को प्रायोजित करता है।

राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम

राष्ट्रीय बाल भवन में प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित प्रमुख कार्यक्रम होते हैं :–

(1) राष्ट्रीय बाल श्री शिविर

(2) बाल श्री सम्मान समारोह

(3) राष्ट्रीय युवा पर्यावरण विज्ञानी सम्मेलन

(4) संस्कृति शिल्प संरक्षण सम्मेलन

(5) राष्ट्रीय दृश्य कला कार्यशाला

(6) 'सबके लिए शिक्षा' सप्ताह

राष्ट्रीय बाल श्री शिविर

क्षेत्रीय शिविरों के बाद, बाल श्री सम्मान हेतु अंतिम चयन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर 'बाल श्री शिविर' का आयोजन किया जाता है। 'विषय–क्षेत्र' के कार्यकलापों के अलावा बच्चों की सृजनात्मकता की जाँच की जाती है। इस वर्ष 'बाल श्री चयन शिविर' 2011 अगले वित्तीय वर्ष के लिए स्थगित किया गया।

राष्ट्रीय युवा पर्यावरण विज्ञानी सम्मेलन

प्रत्येक वर्ष स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण से जुड़े अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। युवा पर्यावरण विज्ञानी सम्मेलन राष्ट्रीय बाल भवन का एक अत्यंत विशिष्ट और वार्षिक कार्यक्रम है। देश के कोने–कोने से विभिन्न बाल भवनों के बच्चे इस सम्मेलन में भाग लेते हैं और पर्यावरण–संबंधी विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते हैं एवं देश के प्रसिद्ध पर्यावरण वैज्ञानिकों की सहायता से इनका समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। प्रत्येक वर्ष इस सम्मेलन का विषय और स्थान अलग होता है।

संस्कृति शिल्प संरक्षण सम्मेलन

हमारी पारंपरिक और लोक कलाओं का संरक्षण तथा परिरक्षण आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र होने के कारण राष्ट्रीय बाल भवन इस प्रकार की बहुमूल्य कलाओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस उद्देश्य से राष्ट्रीय बाल भवन प्रति वर्ष 'संस्कृति शिल्प संरक्षण सम्मेलन' का आयोजन करता है जिसमें पारंपरिक कलाओं के अनेक कलाकार एक माह तक बाल भवन में ठहरते हैं तथा वे यहाँ न केवल अपने कार्यों का प्रदर्शन करते हैं, बल्कि बच्चों को अपनी कला सिखाकर उसे समृद्ध भी करते हैं। इस प्रकार बाल भवन लुप्तप्राय हो रही इन कलाओं को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित कर रहा है।

परंपराओं को सुरक्षित रखने और अगली पीढ़ी को सौंपे जाने की ज़रूरत होती है। राष्ट्रीय बाल भवन कला व संस्कृति की समृद्ध विरासत के विषय में बच्चों को जागरूक बनाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है, जिससे कि ये बच्चे इन लोक कला रूपों को आगे तक ले जाएं तथा इनके अस्तित्व को सुरक्षित रख सकें। विकास की संभावनाओं के अभाव में कुछ कला शैलियाँ लुप्त होती जा रही हैं। इन कला शैलियों को बच्चों तक पहुँचाने तथा इन जटिल कौशलों को उन्हें सिखाने के लिए प्रतिवर्ष एक माह की अवधि का यह 'संस्कृति शिल्प संरक्षण सम्मेलन' आयोजित किया जाता है, जिससे कि इन कला रूपों को पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखा जा सके।

सबके लिए शिक्षा सप्ताह

अप्रैल 2000 में डाकार में आयोजित विश्व शिक्षा मंच (फोरम) की बैठक में भारत सहित 164 देशों के प्रतिनिधियों ने शिक्षा के क्षेत्र में 2015 तक ये छः लक्ष्य प्राप्त करने का वचन दिया था : सर्वजनीन प्रारंभिक शिक्षा, शैशवकालीन देखभाल, शिक्षा और प्रौढ़साक्षरता का विस्तार, लैंगिक सामानता और शिक्षा में गुणात्मक सुधार। विश्व के देशों को इन प्रतिबद्धताओं की याद दिलाने और इस दिशा में किए जाने वाले प्रयासों की गति को नए सिरे से तेज़ करने के लिए यूनेस्को ने डाकार सम्मेलन की वर्षगाँठ के आसपास हर वर्ष 'सर्वशिक्षा सप्ताह' मनाने का निश्चय किया। तदनुसार भारत में, सभी राज्य सरकारों को इस अवधि में 'सबके लिए शिक्षा' सप्ताह से संबंधित कार्यक्रम आयोजित करने के लिए कहा गया है। राष्ट्रीय बाल भवन में 27 से 29 अप्रैल, 2011 तक 'सबके लिए शिक्षा कार्यक्रम' आयोजित किया गया। इस वर्ष इस कार्यक्रम का केंद्रीय विषय था–'महिलाएं और बालिका'। 22 स्कूलों जिनमें (1) सरकारी और (15) प्राईवेट स्कूलों सहित विभिन्न प्रकार से योग्य बच्चों को पोषित करने वाली संस्थाएं, ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों और स्कूल छोड़ चुके बच्चों सहित लगभग 315 बच्चों ने इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में सहचरों के साथ हिस्सा लिया। बच्चों ने "यह सही है, इसे सही बनाओ" : बालिकाओं और महिलाओं के लिए शिक्षा" नारे का 'हाँ, वह कर सकती है' उप–नारे सहित विभिन्न कार्यकलापों के ज़रिए विशेषकर बालिकाओं को शिक्षित करने के संदेश का प्रचार किया।

राष्ट्रीय बाल श्री सम्मान समारोह

पूरे देश से प्रक्रिया के बाद चयनित बच्चों को बाल श्री सम्मान देने के लिए तीन स्तरीय राष्ट्रीय बाल श्री सम्मान समारोह का आयोजना किया जाता है। वर्ष 2008, 2009 और 2010 के लिए बाल श्री सम्मान समारोह का आयोजन 25 जुलाई, 2011 को विज्ञान भवन में आयोजित किया गया। माननीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री डॉ. डी. पुरंदेश्वरी ने विभिन्न रूप से योग्य बच्चों सहित भारत के 147 सृजनात्मक बच्चों को सम्मान प्रदान किया।

राष्ट्रीय बाल सभा

बच्चों में एकता, सद्भाव, मित्रता और सद्भावना प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष 14 नवम्बर से 20 नवम्बर तक बच्चों का सदन और एकीकरण शिविर का आयोजना किया जाता है।

राष्ट्रीय बाल भवन और संबद्ध राज्य बाल भवनों के लगभग 500 बच्चे कार्यक्रम में हिस्सा लेते हैं। प्रत्येक वर्ष विभिन्न विषयों पर सदन आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष कार्यक्रम राष्ट्रीय बाल भवन के संस्थापक पं. जवाहर लाल नेहरू के 122 वीं जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 'चाचा नेहरू और बड़ा मज़ा' के रूप में आयोजित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम

बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु एक प्रमुख संस्था के रूप में कार्यरत राष्ट्रीय बाल भवन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। बाल भवन के दर्शन की सर्वत्र सराहना हुई है। इस कथन का समर्थन इस बात से होता है कि राष्ट्रीय बाल भवन को विश्व के अनेक देशों ने सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रमों द्वारा आपसी स्थायी सम्बन्ध स्थापित करने एवं उनके देशो में बाल भवन खोलने के लिए आमंत्रित किया है। इसी तरह का एक केन्द्र मॉरीशस में शुरू हुआ है। बाल भवन का यही प्रयास अब सीमाएँ पार कर अंतरराष्ट्रीय क्षितिज को छू रहा है और इसने अन्य अनेक देशों जैसे मंगोलिया, किर्गीज़ गणराज्य, मॉरीशस, चैक, रूस, नॉर्वे, कुवैत व नेपाल आदि से संबंध स्थापित किए गये हैं। गत कुछ वर्षों में बाल भवन द्वारा दक्षेस (साक) देशों के बच्चों के साथ मिलकर दूरबीन (टेलीस्कोप) निर्माण की कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया गया एवं 'कोलंबो योजना' के अंतर्गत पर्यावरणीय प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपने कर्मचारियों को भी भेजा गया। इसके अतिरिक्त किर्गीज गणराज्य, उज़्बेकिस्तान, कुवैत, मंगोलिया मॉरीशस, इटली व नार्वे के बच्चों ने हमारी 'अंतरराष्ट्रीय बाल सभा एवं एकीकरण शिविर' में भाग लिया एवं यहीं के शिष्टमण्डलों को अपने देशों में आमंत्रित किया।

राष्ट्रीय बाल भवन की यह धारणा है कि संपूर्ण विश्व एक वैश्विक ग्राम है, अतः सभी को सम्मिलित रूप से कार्य करना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को विभिन्न प्रकार की कलाओं व संस्कृतियों से अवगत कराना तथा इनका सम्मान करना सिखाना है। साथ ही अपनी लोक संस्कृति, परंपरागत लोक कलाओं व शिल्पों का प्रदर्शन करना भी है।

इस वर्ष 2 अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों (क) मंगोल इथनीसिटि – 2 से 12 जुलाई, 2011 तक (ख) अंतरराष्ट्रीय बच्चों का कला व संस्कृति समारोह 2011, 6 से 12 दिसम्बर, 2011 बच्चों के कला उत्सव के लिए भेजा गया। देश भर के 10 बच्चों और सहचरों का एक दल उलनबार, मंगोलिया में आयोजित इस उत्सव में भाग लेने के लिए भेजा गया। कुआलालम्पूर, मलेशिया में आयोजित इस समारोह में देश भर के 30 बच्चों का प्रतिनिधिमंडल और राष्ट्रीय बाल भवन के 2 सहचर और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के 1 अधिकारी ने भाग लिया।

अंतरराष्ट्रीय बाल सभा एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम

'अंतरराष्ट्रीय बाल सभा एवं एकीकरण शिविर' प्रति वर्ष 14 से 20 नवंबर तक आयोजित किया जाता है। इसका उद्देश्य बच्चों में राष्ट्रीय एकता, समरसता, सौहार्द और सद्भावना को बढ़ावा देना है।

राष्ट्रीय बाल भवन तथा संबद्ध राज्य बाल भवनों एवं विभिन्न देशों के कुल मिलाकर लगभग 500 बच्चे इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं। हर वर्ष यह सभा किसी–न–किसी विषय को लेकर आयोजित की जाती है। इस वर्ष इस सभा का केंद्रीय विषय था: 'बाल अधिकार'।

चित्रात्मक झलकियाँ
2011-12

World Dance Day Celebration 2011

PUMA

Nukkad Natak
Story, Poem & Slogan Writing

कार्यक्रमों की झलक

पुस्तक रेखाचित्रण कार्यशाला
2–4 तथा 11 अप्रैल, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के प्रकाशन अनुभाग ने बच्चों तथा युवाओं के "बीच छिपी प्रतिभा को जागृत" करने वाले संगठन स्पर्शमणि के सहयोग से चार दिवसीय पुस्तक रेखाचित्रण कार्यशाला का आयोजित किया। इस कार्यशाला में प्रकाशन अनुभाग के 10 बच्चों तथा बाल भवन केंद्र, नांगलोई के 15 बच्चों ने भाग लिया। यह कार्यशाला राष्ट्रीय बाल भवन की पूर्व निदेशक तथा लेखिका संघ की वर्तमान अध्यक्ष डॉ. मधु पंत के निर्देशन में संचालित की गई। इस कार्यशाला के माध्यम से प्रतिभागी बच्चों की सृजनात्मकता, कल्पनाशक्ति तथा आत्म–सम्मान का विकास हुआ तथा 'पुस्तक प्रकाशन' की दुनिया से भी बच्चों का परिचय करवाया। इस संयुक्त प्रयास से बच्चों का स्वयं सीखने के नवीन तरीकों से परिचय हुआ तथा बच्चों को उनके सामर्थ्य से परिचय कराने तथा उनकी सृजनात्मकता का विकास करने के राष्ट्रीय बाल भवन के उद्देश्य की भी पूर्ति हो सकी। बनाए गए रेखाचित्रों को स्पर्शमणि द्वारा प्रकाशित पुस्तक में प्रकाशित किया जायेगा तथा रेखाचित्रों का श्रेय बाल भवन तथा उस बच्चे को दिया जाएगा, जिसने वह बनाया है।

फुटबाल प्रशिक्षण शिविर, जवाहर बाल भवन, मांडी
3, 10, 17, व 24 अप्रैल, 2011

जवाहर बाल भवन, मांडी ने अप्रैल, 2011 के मध्य में अपने 8 से 13 वर्ष तक के सदस्य बच्चों के लिए रविवार के दिवसों में फुटबाल प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये। ये शिविर युवा फुटबाल एसोसिएशन के सहयोग से आयोजित किये गए। इन शिविरों को आयोजित करने के लिए 6 विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया तथा कुल 70 बच्चों ने इनमें भाग लिया। बच्चों को फुटबाल की आधारभूत बातों व नियमों से परिचित कराया गया।

समय के हस्ताक्षर
16 अप्रैल, 2011

16 अप्रैल, 2011 को राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा लेखिका संघ के सहयोग से 'समय के हस्ताक्षर' शीर्षक एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 55 बच्चों ने भाग लिया। हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक तथा हिन्दी विभाग, खालसा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे तथा श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन विशिष्ट अतिथि थे। श्रीमती इन्द्राणी चौधुरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन भी इस अवसर पर उपस्थित थीं।

कार्यक्रम के प्रारंभ मे राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य बच्चो के समूहगान दल द्वारा स्वागत गीत व स्वस्तिवाचन प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात् डॉ. मधु पंत, अध्यक्ष, लेखिका संघ ने अतिथियों, लेखिका संघ के सदस्यों तथा प्रतिभागी बच्चों का औपचारिक स्वागत किया तथा सभी

उपस्थित जनों को लेखिका सांघ के विषय में जानकारी प्रदान की। इसके पश्चात् राष्ट्रीय बाल भवन की प्रभारी निदेशक ने राष्ट्रीय बाल भवन, इसकी गतिविधियों तथा इसके उद्देश्यों से सभी को परिचित कराया। उन्होंने यह भी बतलाया कि बच्चों के बीच छिपी सृजनात्मक प्रतिभा को जागृत करने के लिए राष्ट्रीय बाल भवन के पुस्तकालय में साहित्यिक गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। इसके पश्चात् डॉ. महीप सिंह जी को बच्चो के साथ अपने अनुभव बाँटने के लिए तथा यह समझाने के लिए आमंत्रित किया गया कि वे अपनी प्रतिभा को किस प्रकार विकसित कर सकते हैं। बच्चों को संबोधित करते हुए डॉ. महीप सिंह ने अपने द्वारा लिखी गई 'पानी और पुल' शीर्षक कहानी सुनाई, जो कि दो पड़ोसी देशों भारत और पाकिस्तान के लोगों के संबंधों और संवेदनाओं के विषय में थी। इस कहानी मे दोनो देशों की सांस्कृतिक समानता पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके पश्चात् बच्चों ने लेखक से बातचीत की तथा कहानी लेखन के विविध आयामों से परिचय प्राप्त किया।

धन्यवाद ज्ञापन श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा प्रस्तुत किया गया। उपाध्यक्ष महोदय ने बच्चो को बाल साहित्य उपलब्ध कराये जाने पर ज़ोर दिया और बतलाया कि राष्ट्रीय बाल भवन का पुस्तकालय ऐसा कर ही रहा है। उन्होंने यह कहा कि राष्ट्रीय बाल भवन ऐसे सभी प्रतिष्ठित व उभरते लेखकों के साहित्यिक पुस्तकों को मंगवाने का हर संभव प्रयास करेगा, जिन्होंने बाल साहित्य के क्षेत्र में छाप छोड़ी है। उन्होंने बच्चों को एक लोक–कथा भी सुनाई।

पृथ्वी दिवस

21 अप्रैल, 2011

पृथ्वी दिवस कार्यक्रम 21 अप्रैल, 2011 को मोक्षदा, अंतिम संस्कार करने के संरक्षणात्मक उपायों के लिए काम करने वाली एक संस्था, के साथ मिलकर आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन स्थल राष्ट्रीय बाल भवन का ओपन ऐअर थिएटर था। रामारोह में राष्ट्रीय बाल भवन के उपाध्यक्ष, श्री ब्रजेश प्रसाद मुख्य अतिथि थे। इस कार्यक्रम में सरकारी व निजी 15 स्कूलों, विशेष बच्चों के संस्थानों तथा राष्ट्रीय बाल भवन के कुल 1000 सदस्य बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर कई पर्यावरण केंद्रित प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जैसे कि पर्यावरणीय/प्रकृतिपरक, फैशन–शो, एनर्जी एफिशिएंसी पर मॉडल्स की प्रदर्शनी, पर्यावरणीय नृत्य तथा काव्य–पाठ प्रतियोगिता। इसी विषय पर एक चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

पर्यावरण अनुभाग ने एक पैराबोलिक सौर कुकर प्रदर्शित किया। मोक्षदा तथा प्रत्येक स्कूल को विशेष निर्देश दिए गए कि किस प्रकार परिसर की स्वच्छता को बनाये रखें।

दोपहर में राष्ट्रीय बाल भवन के समूहगान दल ने पर्यावरणीय गीत 'वृक्ष वन्दना' प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय बाल भवन के उपाध्यक्ष श्री ब्रजेश प्रसाद तथा राष्ट्रीय बाल भवन की प्रभारी निदेशक श्रीमती इन्द्राणी चौधुरी ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये।

आइये! दिल्ली की गूढ़ विरारात को जानें

19–21 अप्रैल, 2011

'विश्व विरासत दिवस' के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय बाल भवन के राष्ट्रीय बाल संग्रहालय द्वारा 19 से 21 अप्रैल, 2011 के दौरान 'आइये, दिल्ली की गूढ़ विरासत को जानें' शीर्षक तीन दिवसीय कार्यम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आर्य बाल गृह के 35 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम को आयोजित करने का उद्देश्य बच्चों को उनके शहर की गूढ़ सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराना था।

कार्यक्रम के पहले दिन बच्चों की दिल्ली की विरासत संबंधी जानकारी को जानने के लिए एक पूर्व–परीक्षा आयोजित की गई। इसके पश्चात् एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा 'हमारी विरासत और विश्व विरासत दिवस' पर एक पॉवर पॉइन्ट प्रस्तुत किया गया, जिसमें विरासत का अर्थ और स्वरूप, इसका महत्व तथा विश्व विरासत दिवस क्यों मनाया जाता है आदि विषयों पर जानकारी प्रस्तुत की गई। दोपहर में बच्चों को राष्ट्रीय बाल संग्रहालय की विभिन्न दीर्घाओं में ले जाया गया।

शाम को, बच्चों को लाल किले ले जाया गया जहाँ उन्होंने 'प्रकाश व संगीत' कार्यक्रम को देखा। इस शो के माध्यम से प्रतिभागियों ने दिल्ली से संबंधित विभिन्न ऐतिहासिक तथ्यों से परिचय प्राप्त किया, जैसे कि नाम, काल तथा दिल्ली के सात शहरों के शासक व उनके द्वारा बनाये गए स्मारक आदि।

दूसरे दिन अर्थात् 20 अप्रैल, 2011 को प्रतिभागियों को हेली रोड स्थित 'अग्रसेन की बावड़ी' ले जाया गया। इस विरासत स्थल पर प्रतिभागियों ने बावड़ी के अर्थ और उपयोग के बारे में जाना। उन्हें इस यात्रा के लिए विशेष रूप से तैयार की गई एक वर्कशीट भी प्रदान की गई। राष्ट्रीय बाल भवन वापिस लौटने पर बच्चों ने अपने विचारों को पेंटिंग्स, रेखाचित्रों तथा कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया। तत्पश्चात् 'दिल्ली की विरासत – परिचित और अपरिचित' विषय पर एक पॉवर पाइन्ट प्रस्तुतीकरण भी प्रस्तुत किया गया। शाम को 'गेडागास्कर' मूवी का प्रदर्शन किया गया।

अंतिम दिन, अर्थात् 21 अप्रैल, 2011 को प्रतिभागियों को पहाड़गंज स्थित 'गूढ़ विरासत भवनों' को दिखाने ले जाया गया, जैसे कि इमामबाड़ा, किला कदम शरीफ, हरी मस्जिद तथा फिरोजशाह कोटला। प्रतिभागिओं को इन भवनों से संबंधित वर्कशीट दी गई। उन्हें यह भी बताया कि गया कि इन विरासत स्थलों को बचाए रखने के लिए कौन–कौन से कदम उठाए जा रहे हैं। राष्ट्रीय बाल भवन लौटने पर "विश्व विरासत स्थल" शीर्षक एक पॉवर पॉइन्ट प्रेजेन्टेशन दिखलाया गया, जिसमें दिल्ली के विरासत स्थलों का विशेष चित्रण था। इसके पश्चात् उन्होंने पारिवारिक खेल खेले, पज़ल सुलझाए तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लिया। सभी प्रतिभागियों से एक पश्च–परीक्षण भी दी गई। समापन समारोह में श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन श्रीमती इन्द्राणी चौधुरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन ने बच्चों को सम्बाधित किया तथा इस कार्यशाला के प्रति उत्साह दर्शाने के लिए उन्हें बधाई दी। प्रतिभागिता प्रमाणपत्र भी वितरित किये गए।

सबके लिए शिक्षा

27–29 अप्रैल, 2011

27.04.2011

प्रत्येक वर्ष विश्व शिक्षा फोरम (डकार, अप्रैल, 2000) की वर्षगांठ के रूप में सबके लिए शिक्षा सप्ताह मनाया जाता है। इसके माध्यम से 2015 तक सबके लिए शिक्षा तथा इसके लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में हुई प्रगति की पड़ताल की जाती है। राष्ट्रीय बाल भवन में 27 से 29 अप्रैल, 2011 तक सबके लिए शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस वर्ष के आयोजन का केन्द्रीय विषय था 'महिला एवं बालिका शिक्षा', जैसा कि यूनेस्को द्वारा निर्धारित किया गया था। 22 स्कूलों के (7 सरकारी व 15 निजी स्कूलों), 2 विशेष बच्चों के लिए कार्यरत संस्थानों, राष्ट्रीय बाल भवन, जवाहर बाल भवन, मांडी तथा बाल भवन केन्द्रो के 375 बच्चों ने अनुरक्षकों के साथ इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में भाग लिया।

इस कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने शिक्षा के संदेश, विशेष रूप से बालिकाओं के लिए शिक्षा के संदेश का प्रसार इस नारे के साथ किया , (**"यह अधिकार है, इसे अधिकार बनाओ, : महिलाओं व बालिकाओं के लिए शिक्षा।" और सबस्लोगन था " हाँ–यो कर सकती है"**) – जैसा कि यूनेस्को द्वारा ग्लोबल कैम्पेन फॉर एजुकेशन (सी.जी.ई.) के लिए निर्धारित किया गया था विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए विशेष गतिविधियाँ आयोजित की गई।

कार्यक्रम का उद्घाटन 27 अप्रैल, 2011 को राष्ट्रीय बाल भवन के मेखला झा ऑडिटोरियम में प्रातः 10:30 बजे हुआ। विशेष जरूरतों वाले बच्चों, ग्रामीण क्षेत्रों, पब्लिक स्कूलों, सरकारी स्कूलों तथा झुग्गी झोंपड़ियों के प्रतिनिधि बच्चों ने पारंपरिक दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। ग्रामीण बच्चे राष्ट्रीय बाल भवन के ग्रामीण केन्द्र–जवाहर बाल भवन, मांडी से आए थे। इस क्षेत्र के बच्चे स्कूली भी थे तथा स्कूल न जाने वाले भी। श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन, श्री पीटर ब्रौफमैन, ग्लोबल हैड,नॉन फॉर्मल एजुकेशन, इन्टेल फाउन्डेशन तथा श्री आशुतोष चड्ढा, निदेशक कॉर्पोरेट अफेयर्स ग्रुप, इन्टेल इंडिया ने भी बच्चों के साथ दीप प्रज्ज्वलित कर ज्ञान के प्रकाश को दूर तक प्रसारित करने का संकल्प दोहराया। इस अवसर पर सुश्री श्वेता खुराना, के–12, एजुकेशन मैनेजर, इन्टेल इंडिया, सुश्री राजेन्द्र त्रिपाठी, ऑपरेशन्स मैनेजर, राइन्चलूज़न प्रोग्रैम, सुश्री शतरूपा दास गुप्ता, इन्टल लर्न प्रोग्रैम मैनेजर तथा श्री तनु अब्राहम, सीनियर ट्रेनर फॉर एलायन्सेज, इन्टेल इंडिया भी उपस्थित थे।

इसके पश्चात् राष्ट्रीय बाल भवन की प्रभारी निदेशक श्रीमती इन्द्राणी चौधूरी ने बच्चों, अनुरक्षकों तथा शिक्षकों को तीन दिनों तक आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी। प्रभारी निदेशक ने कहा कि लड़कियां और महिलाओं को शिक्षा प्रदान किये बिना स्थायी रागाज की संकल्पना नहीं की जा सकती। इसके साथ ही, प्रभारी निदेशक ने बच्चों को शिक्षा के महत्व से भी परिचित कराया, जिससे कि महिलाएं व पुरुष आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में अपने अधिकारों की पहचान कर सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि लोगों की गरीबी को दूर करने का एकमात्र सबसे सशक्त माध्यम शिक्षा ही हो सकती है तथा कई समाजों के महिलाओं और लड़कियों के प्रति किये जाने वाले लिंग आधारित भेदभाव को दूर करने के लिए रणनीति के रूप में शिक्षा के प्रसार को महत्वपूर्ण बनाया जाना चाहिए। इसके पश्चात् बच्चों ने समूहगान गतिविधि में भाग लिया, जिसके अंतर्गत उन्होंने शिक्षा आधारित लोकप्रिय गीत 'हम मिलजुल लिखते–पढ़ते जाएंगे' गाया।

समूह गायन बाल भवन की अद्वितीय विशेषता है। इसमें बच्चे भिन्न विषयों पर मिलकर गीत गाते हैं।

इसके पश्चात् श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन ने उपस्थित जनों को सम्बोधित किया। उपाध्यक्ष महोदय ने कहा कि संप्रग अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल तथा स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग की सचिव श्रीमती अंशु वैश एवं राष्ट्रीय बाल भवन की अध्यक्ष द्वारा लडकियों की शिक्षा ने लिए विभिन्न नवीन परियोजनाएं प्रारंभ की गई हैं। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक लडकी को शिक्षित करने के प्रयास करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि किसी देश की प्रगति को वहाँ के ऐश्वर्य अथवा वहाँ की आधारभूत संरचना के आधार पर नहीं ऑका जा सकता है। उन्होंने उस बात को दोहराया जो कुछ दशक पूर्व महात्मा गांधी द्वारा कही गई थी –"जब हम एक लड़के को शिक्षित करते हैं, तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है किन्तु जब हम एक बालिका को शिक्षित करते हैं तो उसका पूरा परिवार शिक्षित होता है। अंत में उन्होंने कहा कि राष्ट्र के विकास के लिए 'शिक्षा के अधिकार' की संकल्पना को माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल द्वारा साकार रूप प्रदान किया गया है और इस प्रकार किसी को भी इस मूल अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए।

इसके पश्चात् श्री आशुतोष चड्ढा, निदेशक, कॉरपोरेट अफेयर्स ग्रुप, इन्टेल इंडिया ने उपस्थित जनों को संबोधित किया। उन्होंने बच्चों को बतलाया कि "शिक्षक वह नहीं होता जो हमें औपचारिक शिक्षा प्रदान करता है अपितु वह हमें एक–दूसरे से प्रेम करना तथा दूसरे देशों से प्रेम करना सिखलाता है और इस प्रकार इस संसार को जीने योग्य एक बेहतर स्थान बनाने में मददगार सिद्ध होता है।" उन्होंने कहा कि आज के समय में व्यक्तिगत स्तर पर कुछ भी कर पाना संभव नहीं है, जिसका अर्थ है कि '21वीं सदी में बालिकाओं तथा महिलाओं को शिक्षित व सशक्त बनाने की आवश्यकता है, जिससे कि पूरा राष्ट्र विकसित हो सके तथा समूचा विश्व प्रगति की राह पर आगे बढ़ सके।

इसके पश्चात् बच्चों ने हिन्दी तथा अंग्रेजी में 'सबके लिए शिक्षा' हेतु शपथ ली। बच्चों ने शिक्षा के प्रसार तथा भारत को एक सशक्त व संपन्न राष्ट्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध रहने की शपथ ली। उन्होंने सभी बच्चों को समान अवसर उपलब्ध कराते हुए समज में व्याप्त असमानता को भी दूर करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। इसके बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों जैसे कि तत्काल भाषण, पोस्टर बनाना तथा स्लोगन लेखन, कोलाज बनाना, क्ले मॉडलिंग, शिल्प कार्य तथा फोटोग्राफी आदि में भाग लिया।

दोपहर के सत्र में बच्चों ने प्ले–कार्ड बनाने की गतिविधि तथा नृत्य, नाटक, संगीत, विज्ञान संबंधी गतिविधियों में भाग लिया। अगले दिन रैली मे बच्चों अपने द्वारा बनाये प्ले–कार्ड ही पकडे हुए थे। ये गतिविधियों बच्चों को शिक्षा के विविध आयामों के संबंध में अपने विचार प्रकट करने के अवसर देती है। शिक्षा के ये विविध आयाम प्रत्यक्ष रूप से बच्चों से जुड़े हैं।

28.04.2011

कार्यक्रम के दूसरे दिन 28 अप्रैल, 2011 को रागी प्रतिभागी राष्ट्रीय बाल भवन के ओपन ऍअर थियेटर में एकत्र हुए तथा समूहगान की गतिविधि में भाग लिया, जिसके अंतर्गत उन्होंने शिक्षा पर आधारित गीत ' हम मिलजुल कर लिखते पढ़ते जाएंगे' गाया। इसके पश्चात् राष्ट्रीय बाल भवन के उपाध्यक्ष श्री ब्रजेश प्रसाद ने उपस्थित समुदाय को संबोधित किया। उपाध्यक्ष महोदय ने कहा कि इस रैली के माध्यम से बच्चे भारत सरकार के प्रत्येक बालिका को शिक्षित करने के संदेश को प्रसारित करेंगे। श्री ब्रजेश प्रसाद ने पूरे जोश और उत्साह के साथ रैली में भाग लेने के लिए बच्चों का आह्वान किया। राष्ट्रीय बाल भवन के उपाध्यक्ष श्री ब्रजेश प्रसाद तथा राष्ट्रीय बाल भवन की प्रभारी निदेशक श्रीमती इंद्राणी चौधूरी ने झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया गया। रैली राष्ट्रीय बाल भवन से प्रारंभ होकर ऐवान–ए–गालिब रोड तथा कुल्हड़ बस्ती तक गई। इस रैली के माध्यम से बच्चों ने सबके लिए शिक्षा, विशेष रूप से 'महिलाओं, बच्चों, उनके अनुरक्षकों तथा राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य बच्चों ने इस रैली में भाग लिया। इस रैली का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के महत्व के विषय में जागरूकता लाना तथा हर द्वार तक शिक्षा को ले जाना था। बच्चे पूरे उत्साह के साथ शिक्षा संबंधी नारे लगा रहे थे, जो कि उन्होंने पहले दिन स्वय लिखे थे और आम जनता से अपने बच्चों, विशेष रूप से बालिकाओं को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। इस समूह रैली ने जनता के बीच शिक्षा का प्रकाश आलोकित किया।

इसके पश्चात् बच्चों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे कि आशु भाषण, पोस्टर मेकिंग तथा स्लोगन लेखन, कोलाज बनाना, क्ले मॉडलिंग, शिल्प कार्य तथा फोटोग्राफी आदि के अंतिम चक्र में भाग लिया। इन प्रतियोगिताओ के माध्यम से प्रतिभागियों को विभिन्न विषयों पर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के अवसर प्राप्त हुए जैसे कि लैंगिक समानता की दिशा में अभी बहुत कुछ करना शेष है, बालिकाओं को साक्षरता के बीच घटता अंत, शिक्षा का अधिकार – बालिकाओं के लिए वरदान, लड़कियों के प्रति समाज का पक्षपात और इस केंद्रीय विषय से संबंधित विभिन्न विषयों पर विचार अभिव्यक्त किये।

दोपहर में रागी बच्चों ने पुनः अपनी रुचि के अनुरूप विभिन्न गतिविधियों – प्रदर्शन कला (नृत्य, नाटक, संगीत), विज्ञान आधारित गतिविधियां, सृजनात्मक कला,पेंटिंग, काष्ठ कला, बुनाई, क्ले–वर्क, बुक बाइंडिंग, सिलाई, पेपरमैशी तथा हस्तशिल्प आदि की गतिविधियों में भाग लिया। इस विषयाधारित गतिविधियों के माध्यम से अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों से परिचय प्राप्त किया तथा पारस्परिक मैत्री की भावना को भी विकसित किया।

29.04.2011

तीसरे और अंतिम दिन अर्थात् 29 अप्रैल, 2011 को प्रातःकाल प्रतिभागी बच्चों ने समापन समारोह में प्रस्तुत किये जाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी की तथा कुछ बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया।

दोपहर के सत्र में सभी बच्चे समापन समारोह के लिए राष्ट्रीय बाल भवन के गेखला ज्ञा रंगस्थल में एकत्र हुए। डॉ. अमरजीत सिंह, संयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग), मानव संसाधन विकस मंत्रालय समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन तथा श्रीमती इंद्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। सर्वप्रथम सम्माननीय अतिथियों का प्रतिभागियों द्वारा पारंपरिक रूप से स्वागत किया गया। इसके पश्चात् सम्मानित अतिथियों ने पुरस्कृत पोस्टरों, स्लोगन्स, क्ले मॉडल्स, शिलप–कार्यों, कोलाज तथा छायाचित्रों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

श्रीमती इंद्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन के गेखला ज्ञा रंगस्थल में एकत्र हुए। डॉ. अमरजीत सिंह, संयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा एवं साक्षरत विभाग), मानव संसाधन विकास मंत्रालय समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन तथा श्रीमती इन्द्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। सर्वप्रथम सम्माननीय अतिथियों का प्रतिभागियों द्वारा पारंपरिक रूप से स्वागत किया गया। इसके पश्चात् सम्मानित अतिथियों ने पुरस्कृत पोस्टरों, स्लोगन्स, क्ले मॉडल्स, शिल्प–कार्यों, कोलाज तथा छायाचित्रों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

श्रीमती इंद्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा कार्यक्रम के दौरान तीन दिनों तक आयोजित विभिन्न गतिविधियों के विषय में संक्षिप्त रूप में बतलाया। निदेशक प्रभारी ने अलापुज़ा, केरल की 90 वर्षीय महिला का विशेष उल्लेख किया जो कक्षा चार की परीक्षा देने जा रही थी। यह तथ्य इस ओर संकेत करता है कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती। उन्होंने यह भी कहा कि इस मामले से पता चलता है कि लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा के महत्व को समझा जा रहा है और इस आधार पर कहा जा सकता है कि सबके लिए शिक्षा का लक्ष्य अब बहुत दूर नहीं रह गया है। निदेशक महोदया ने विश्वास व्यक्त किया कि कार्यक्रम के दौरान तीन दिनों तक आयोजित विभिन्न सृजनशील गतिविधियों से इन बच्चों में मानवीयता की भावना जागृत होगी तथा बालिकाओं व महिलाओं के आकांक्षाओं के प्रति ये और अधिक संवेदनशील हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि बालक हमारे सबसे महत्वपूर्ण संसाधन हैं और राष्ट्रीय बाल भवन बच्चों के माध्यम से ही सबके लिए शिक्षा के उद्देश्य को पूरा करने का प्रयास करता है। इसके पश्चात् बच्चों ने 'हम पढ़ लिख कर आगे बढ़ते जाएंगे' गीत गाकर सभी को मोहित कर दिया।

इसके पश्चात् श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन ने तहेदिल से डॉ. अमरजीत सिंह, संयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता), मानव संसाधन विकास मंत्रालय का बच्चों के इस उद्यान में स्वागत किया और कहा कि वे देश की बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री कपिल सिब्बल, सचिव, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय श्रीमती अंशु वैश तथा अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा प्रयोग की गई परियोजनाओं के साथ भारत सरकार के संदेश को लेकर राष्ट्रीय बाल भवन पधारे हैं। उन्होंने विभिन्न स्कूलों के शिक्षकों द्वारा बालिकाओं की शिक्षा में निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका के हरित विश्व के निर्माण के दर्शन की भी बात कही। मुख्य अतिथि महोदय को भी एक पौधा भेंट किया गया। उन्होंने बच्चों को भी प्रत्येक अवसर पर यह पौधे ही भेंट करने का आग्रह किया।

डॉ. अमरजीत सिंह, संयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग), मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रथम पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये। इसके पश्चात् तत्काल भाषण प्रतियोगिताओं के बच्चों ने अंग्रेजी व हिन्दी में 'महिला एवं बालिका शिक्षा' पर अपने विचार व्यक्त किये।

इसके पश्चात् श्री अमरजीत सिंह, संयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग), मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने उपस्थित जनों को सम्बोधित किया। मुख्य अतिथि ने शिक्षकों व बच्चों को सुंदर कार्यक्रम को प्रदर्शित करने के लिए बधाई दी। डॉ. अमरजीत सिंह, संयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग) ने उपस्थितजनों को प्रतिभाशाली गेट्स स्कॉलर से भी परिचित कराया। वो केवल तीन दिन की थी, जब वो हरिद्वार के एक मंदिर मे एकान्त में मरने के लिए छोड़ दी गई। वो गंगा के किनारे रोती पड़ी रही। लेकिन भाग्य ने उसके लिए कुछ और ही सोच रखा था। सोना शरण को एक गददगार द्वारा उठा लिया गया। वो 1993 का वर्ष था। हरिद्वार के एक अनाश्रम से प्रतिष्ठित गेट्स मिलेनियम स्कॉलर बनने के लिए लॉन एंजलेस तक की यात्र – 18 वर्षीय लड़की के भाग्य की एक ऊँची उड़ान थी। इस स्कालॉरशीप के लिए, उसने विभिन्न विषयों पर बहुत लम्बे आठ निबन्ध लिखे, जिनमें प्रमुख थे – 'नेतृत्व क्षमता' ; 'जीवन में आने वाली कठिनाईयां'। शरण आजकल अंतरराष्ट्रीय विकास को पढ़ रही है तथा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त करने की आशा करती है। मुख्य अतिथि महोदय ने आशा व्यक्त की कि इस लड़की की कहानी हमारे देश की कई लडकियों को सभी प्रकार की कठिनाइयों के बावजूद अपने सपनों को साकार करने की प्रेरणा बन सकेगी।

इसके पश्चात् डॉ. अमरजीत सिंह, संयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता), मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने वर्ल्ड एजुकेशन फोरम, डकार, सेनेगल, 26–28 अप्रैल, 2000 के दौरान स्वीकृत पाठ के प्रमुख बिन्दुओं को सामने रखा, जो कि इस प्रकार थे – (i) व्यापक प्रारंभिक बाल्यकालिक संभाव व शिक्षा के सुधार व प्रसार, विशेष रूप से पिछड़े बच्चों के लिए; (ii) यह सुनिश्चित करना कि 2015 तक सभी बच्चों, विशेष रूप से बालिकाओं, विपरीत परिस्थितियों में बच्चों तथा अल्पसंख्यक बच्चों को अच्छी गुणवत्ता वाली पूर्ण्या व निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करवाना (iii) यह सुनिश्चित करना कि सभी युवाओं तथा वयस्कों की शैक्षणिक जरूरतों को सही शिक्षण एवं जीवन कौशल कार्यक्रमों के माध्यम से समान रूप से पूरा किया जाना (iv) 2015 तक प्रौढ़ साक्षरता के स्तर में 50 प्रतिशत तक वृद्धि करना, विशेष रूप से महिलाओं के लिए तथा सभी प्रौढ़ जनों के लिए आधारभूत तथा सतत शिक्षा के लिए समान अवसर प्रदान करना। (v) 2005 तक प्राथमिक तथा उच्चतर शिक्षा में लैंगिक भेदभाव को दूर करना तथा शिक्षा के क्षेत्र में 2015 तक लैंगिक समानता को प्राप्त करना, जिसमें अच्छी गुणवत्तायुक्त आधारभूत शिक्षा में लड़कियों की पूरी व समान सहभागिता सुनिश्चित करना। (vi) शिक्षा की गुणवत्ता के आयामों में सुधार करना तथा सभी की उत्कृष्टता को सुनिश्चित करना, जिससे कि सभी के द्वारा, विशेषतः साक्षरता, अनिवार्य जीवन कौशलों के क्षेत्र में अपेक्षित शैक्षणिक परिणामों को प्राप्त किया जा सके। डॉ. अमरजीत सिंह, संयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता), मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने यह भी कहा प्रतिभागी बच्चे वास्तव में भाग्यशाली हैं कि वे कम से कम स्कूल तो जाते हैं, हमारे देश में अब भी लाखों ही ऐसे बच्चे हैं, जिन्हें यह अवसर नहीं मिल पाता है। उन्होंने हरियाणा के लैंगिक अनुपात की चर्चा की जो कि 1000 बालकों पर 830 कन्याएं हैं, जो कि काफी निराशाजनक है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत में 26% लोग अभी भी निरक्षर हैं तथा इन आंकडों को सुधारने की दिशा में हम सबको मिलजुल कर प्रयास करने की जरूरत है। अंत में उन्होंने कहा कि कल्पना चावला, इंदिरा नूयी जैसी महिलाओं ने नई ऊँचाइयों को छुआ है और उन्होंने कन्या प्रतिभागियों को उनके मार्ग पर चलकर नवीन उपलब्धियां हासिल करने का आह्वान किया।

इसके पश्चात् प्रतिभागी बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जिनमें ' आदमी का आ ए' शीर्षक गीत 'शौर्य दो वीर्य दो' शीर्षक नाटक, एक 'बालिका शिक्षा' पर आधारित नृत्य का कार्यक्रम का कार्यक्रम प्रमुख थे। इसके पश्चात् विभिन्न प्रतियोगिताओं के शेष पुरस्कार विजेताओं को श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन तथा श्रीमती इन्द्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन ने पुरस्कार प्रदान किये।

धन्यवाद ज्ञापन श्री पी. चौधुरी, उपनिदेशक(प्रशा.), राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा प्रस्तुत किया गया।

पहचान रेडियो क्लब

30 अप्रैल, 2011

जवाहर बाल भवन, मांडी ने नडा फाउन्डेशन के सहयोग से अप्रैल, 2011 में 'रेडियो क्लब कार्यक्रम' का आयोजन किया। प्रतिभागियों को विभिन्न संबद्ध विषयों जैसे कि अहिंसा, विज्ञापनों का प्रभाव आदि के विषय में बतलाया गया तथा उन्हें साउन्ड रिकॉर्डिंग तथा एडिटिंग से भी परिचित करवाया गया।

पाक कला कार्यशाला

3–31 मई, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के गृह प्रबन्धन अनुभाग द्वारा 3 से 31 मई, 2011 तक 10–16 वर्ष तक की आयु वर्ग के बच्चों के लिए पाककला कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में लगभग 130 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों को पाककला की प्रारंभिक जानकारी प्रदान करना था। प्रारंभ में बच्चों को सैंडविच आदि बनाने सिखाए गए, बनाने में सरल होते हैं। आगे चलकर उन्हें पाव–भाजी, ब्रेड–रोल, टिक्की, डोसा, केक आदि बनाने सिखाए गए। अचार, चटनी, शर्बत, जैम व जैली बनाने भी सिखाए गए, जिनमें परिरक्षक रासायनिक पदार्थों की भी जरूरत होती है। व्यंजन बनाने के अलावा उन्हे स्वास्थ्य, स्वच्छता, पौष्टिक आहार आदि के विषय में भी बताया गया, जैसे कि खाना बनाते समय बर्तनों को ढककर रखना, प्रेशर कुकर का प्रयोग इत्यादि। इस कार्यशाला में भाग लेने के पश्चात् बच्चे बहुत प्रसन्न थे और विश्वास से भरपूर अनुभव कर रहे थे कि क्योंकि इससे उनमें अपने आप व्यंजन बनाने का विश्वास आ गया था और एक आत्मसशक्तिकरण का भाव उनमें जागृत हुआ।

बाल भवन केन्द्र के ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

10–11–12 मई, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के बाल भवन केन्द्र ने अपने ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षकों के लिए क्रमशः 10, 11 व 12 मई, 2011 को एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। इस अभिविन्यास कार्यक्रम में लगभग 90 प्रशिक्षकों ने भाग लिया। इस अभिविन्यास कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सभी प्रशिक्षकों को राष्ट्रीय बाल भवन के दर्शन और कार्यप्रणाली से परिचित कराना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, सभी प्रशिक्षकों को समूहों में विभाजित कर कुछ दिशा–निर्देश दिये गए। उन सबने इन दिशा–निर्देशों के अनुरूप कार्य किये। प्रशिक्षकों ने इस कार्यक्रम के दौरान समूह में कार्य करने तथा निष्ठा के साथ कार्य करने के मूल्यों को सीखा। उन सबने सामाजिक मुद्दों, जैसे कि कन्या भ्रूण हत्या तथा पर्यावरण जैसे विषयों पर नाटक भी तैयार किये।

12 मई को श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन, श्रीमती इन्द्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक तथा श्री पी. चौधुरी, उपनिदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन ने प्रशिक्षकों के प्रदर्शन देखे। उन्होंने कार्यक्रम की प्रशंसा की और प्रशिक्षकों को शुभकामनाएं प्रदान कीं। प्रशिक्षकों ने भी कार्यक्रम का आनंद उठाया। उन्होंने अनुभव किया कि उन्हें इस कार्यक्रम से बहुत कुछ सीखने को मिला है और इससे उन्हें उन कौशलों को सीखने का भी अवसर मिला है, जो कि सीधे रूप में उनके क्षेत्र से संबंधित नहीं हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से उन्हें अपनी सृजनात्मकता प्रदर्शित करने का एक मंच प्राप्त हुआ है।

रवींद्र जयंती

18 मई, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन में 18 मई, 2011 को भारतीय संस्कृति के प्रतीक पुरुष रवींद्रनाथ टैगोर की 151वीं जयंती मनाई गई। प्रारंभ में सदस्य बच्चों तथा श्रीमती इंद्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन ने कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर को पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद, राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य बच्चों ने रवींद्रनाथ टैगोर के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला। विशेष रूप से उनकी शिक्षा तथा एक कवि, लेखक, संगीतकार, कलाकार, दार्शनिक तथा एक नोबल पुरस्कार विजेता के रूप में उनकी शानदार उपलब्धियों पर बल दिया गया। राष्ट्रीय बाल भवन के समूहगान दल ने रवींद्र संगीत पर आधारित एक मोहक गीत भी प्रस्तुत किया। रवींद्र संगीत पर एक नृत्य प्रस्तुति भी प्रस्तुत की गई।

परिचर्चा

18 मई, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के प्रकाशन अनुभाग द्वारा 18 मई, 2011 को एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में 52 बच्चों ने भाग लिया। इस परिचर्चा का विषय था, " शिक्षा में ग्रेडिंग प्रणाली', जो कि आज के संदर्भ में पूर्णतः प्रासंगिक है। बच्चों को दो समूहों में विभाजित कर दिया गया। एक वर्ग उनका जो ग्रेडिंग प्रणाली के पक्ष में थे और दूसरा उनका जो ग्रेडिंग प्रणाली के विपक्ष में थे। जो ग्रेडिंग प्रणाली के पक्ष में थे, उन्होंने कहा कि ग्रेडिंग प्रणाली विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों ही के लिए वरदान है क्योंकि इससे अंकों के अंतराल की चिंता नहीं करनी होगी। उन्होंने यह भी विचार व्यक्त किया कि ग्रेडिंग प्रणाली में कई परियोजनाओं पर काम करना होता है, जिससे बच्चों की सृजनात्मकता व योग्यता में वृद्धि होती है। जो ग्रेडिंग प्रणाली के विरोध में थे, उन्होंने विचार व्यक्त किया कि इससे प्रतियोगिता की भावना में कमी आएगी तथा भविष्य की चुनौतियों के लिए बच्चे ठीक प्रकार से तैयार नहीं हो पाएंगे। उनके विचार में विभिन्न प्रोजेक्ट्स बनाना व्यर्थ था। कुल मिलाकर, यह एक शानदार परिचर्चा रही क्योंकि इसमें बच्चों ने न केवल आनंद लिया बल्कि सार्थक चर्चा से उनके ज्ञान में वृद्धि भी हुई।

अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस

18 मई, 2011

विश्व भर में 18 मई को अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मनाया जाता है। राष्ट्रीय बाल भवन के राष्ट्रीय बाल संग्रहालय ने भी 18 मई, 2011 को अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मनाया। इस कार्यक्रम में 23 बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर समाज में संग्रहालय का अर्थ, इतिहास, विकास व भूमिका विषय पर एक पॉवर पॉइन्ट प्रस्तुतिकरण भी दिखाया गया। इस प्रस्तुतिकरण से बच्चों को समझने में सहयता हुई कि किस प्रकार संग्रहालय हमारी कलाओं व कलाकृतियों को सहेजकर रखते हैं और हमारी अस्मिता के दर्पण हैं।

ग्रीष्मकालीन सृजनात्मक कला कार्यशाला

18 मई – 21 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के राष्ट्रीय प्रशिक्षण संसाधन केन्द्र द्वारा 18 मई से 21 जून, 2011 तक एक ग्रीष्मकालीन सृजनात्मक कला कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला केवल वयस्कों के लिए थी। इस कार्यशाला में 56 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कर्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को उनके भीतर छिपी प्रतिभा से परिचित कराना तथा इसका पर्याप्त उपयोग करना सिखाना था। प्रतिभागियों ने विभिन्न सृजनात्मक कला रूपों जैसे कि पेंटिंग, शिल्प, टाई एण्ड डाई आदि को सीखा, जिससे कि न केवल उनके कार्यक्षेत्र में उन्हें मदद मिल सकेगी बल्कि उनके दैनंदिन जीवन में भी यह मददगार सिद्ध हो सकेगा। इन सृजनात्मक कला रूपों के माध्यम से, उन्होंने अपने भीतर छिपी प्रतिभा को अभिव्यक्ति प्रदान की। उन्होंने तनाव, भावनात्मक उलझनों आदि से निपटने के उपाय भी सुझाए गए। उन्हें यह भी बताया गया कि विभिन्न कला रूप किस प्रकार शिक्षा प्रदान करने में रचनात्मक भूमिका निभा सकते हैं, विशेष रूप से बच्चों को अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करने के संदर्भ में। कार्यशाला के अंतिम दिन अर्थात् 21 जून, 2011 को प्रतिभागियों द्वारा बनाई गई कलाकृतियों/मॉडल्स को एनटीआरसी हॉल में प्रदर्शित किया गया। समापन समारोह में प्रतिभागियों ने नृत्य, नाटक, संगीत आदि के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा कविताएं भी सुनाईं। अंत में प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र वितरित किये गए।

प्रतिभागियों ने कार्यशाला का भरपूर आनंद उठाया। उन्होंने अनुभव किया कि ये कार्यशाला उनके लिए काफी उपयोगी रही, क्योंकि इसके माध्यम से वे स्वयं का वास्तविक परिचय प्राप्त कर सके। इससे उन्हें अपने आपको खोजने में मदद मिली और हमें सुंदर संसार को देखने की एक नई दृष्टि मिली।

पुस्तक निर्माण तथा चित्र आरेखन कार्यशाला

20 मई–29 मई, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के प्रकाशन अनुभाग द्वारा 20 मई से 29 मई, 2011 तक पुस्तक निर्माण तथा चित्र आरेखन की दस दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में लगभग 40 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों को पुस्तक बनाने की तकनीकों से परिचित कराना था।

कार्यशाला के पहले तीन दिनों में, प्रतिभागियों को पुस्तक–निर्माण संबंधी तथा पुस्तक को अंतिम रूप से तैयार करने के तीन चरणों की आधारभूत जानकारी प्रदान की गई। पहला चरण पाण्डुलिपि तैयार करना, फोटोग्राफ्स का चयन करना, प्रूफ रीडिंग तथा संपादन है। दूसरे चरण में व्यय, पुस्तक का आकार, टाइपोग्राफी, कागज, जीएसएम कम्पोजिंग, ले–आउट, इम्पोज़िशन, प्लेट बनाना, जिल्द बांधना आदि सम्मिलित हैं। तीसरे स्तर पर प्रतिभागियों को बिक्री की विभिन्न तकनीकों से परिचित कराया गया जिनमें पुस्तक–समीक्षा, विज्ञापन आदि प्रमुख हैं।

पुस्तक निर्माण की व्यवहारिक जानकारी प्रदान करने के लिए, प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभाजित किया गया और उन्हें लेखन तथा चित्र आरेखन के कार्य दिये गए। इसके साथ ही बच्चों को कहानी–लेखन की कला से भी परिचित कराया गया। बच्चों ने कहानियों, कविताओं, चुटकुलों तथा स्लोगन्स आदि के माध्यम से अपने विचार अभिव्यक्त किये।

कार्यशाला के चौथे दिन, प्रतिभागियों के लेखन–कार्य पर आधरित चित्र आलेखन को अंतिम रूप दिया गया। कार्यशाला के पाँचवें दिन, उन्हें कैनवेस पेंटिंग के विषय में सिखाया गया। छठे दिन, पुस्तक–निर्माण पर चर्चा आयोजित की गई। प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया गया।

कार्यशाला के सातवें और आठवें दिन बच्चों को ऑफसेट प्रिंटिंग के विषय में बतलाया गया, जिसके अंतर्गत इम्पोज़ीशन, नेगेटिव/पोज़ीटिव प्लेट मेकिंग, पेंटिंग, जिल्दसाजी, फोल्डिंग आदि के विषय में बतलाया गया।

कार्यशाला के अंतिम दो दिनों में, प्रतिभागियों को लेखन कला से संबंधित महत्वपूर्ण बातें समझाई गईं सहभागिता प्रमाणपत्र भी प्रदान किये गए।

आतंकवाद विरोधी दिवस

21 मई, 2011

भारत के सबसे युवा प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी, जो एक आतंकवादी का शिकार हो गए थे, की पुण्यतिथि को आतंकवाद विरोधी दिवस के रूप में मनाया जाता है। 21 मई, 2011 को राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य बच्चे तथा स्टाफ सदस्य श्री राजीव गांधी को उनकी 20वीं पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए ओपन ऐंअर थियेटर में एकत्र हुए। सुश्री इन्द्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन तथा बच्चां ने दिवंगत आत्मा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। बच्चों और स्टाफ सदस्यों ने हिन्दी तथा अंग्रेजी में आतंकवाद को समाप्त करने की जानकारी दी। बच्चों ने श्री राजीव गांधी के जीवन के तथा कार्यों पर प्रकाश डाला। एक सदस्य बच्चे ने श्री राजीव गांधी पर स्वरचित कविता भी सुनाई।

आइए! अपनी मातृभूमि के विषय में जानें

24–28 मई, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के राष्ट्रीय बाल संग्रहालय द्वारा 24 से 28 मई, 2011 तक एक पाँच दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसका शीर्षक था – 'आइए! अपनी मातृभूमि के विषय में जानें' । इस कार्यक्रम में 41 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को उनकी मातृभूमि से परिचित कराना था।

कार्यशाला के पहले दिन अर्थात् 24 मई को यह जानने के लिए एक पूर्व–परीक्षा आयोजित की गई कि प्रतिभागी अपने उपमहाद्वीप के विषय में कितना जानते हैं। इसके बाद बच्चे भारत के गौरवशाली अतीत, महापुरुषों तथा भाषा के विषय में एक पॉवर पॉइन्ट प्रस्तुतिकरण दिखलाया गया।

कार्यशाला के दूसरे दिन अर्थात् 25 मई, 2011 को बच्चों को राष्ट्रीय बाल संग्रहालय की रागी दीर्घाओं में घुमाया गया। उन्हे एक रोचक पॉवर पॉइन्ट प्ररतुतिकरण के माध्यम से भारत के विभिन्न राज्यों के विषय में भी जानकारी प्रदान की गई।

कार्यशाला के तीसरे दिन अर्थात् 26 मई, 2011 को, प्रतिभागियों ने पेंटिंग की गतिविधि में भाग लिया। उन्होंने उत्साहपूर्वक कई खेल भी खेले। ये गतिविधियां तथा खेल कार्यशाला के केंद्रीय विषय पर आधारित थे, जिससे बच्चों को कार्यशाला के दौरान सीखी बातों को दोहराने का एक अवसर प्राप्त हो गया।

कार्यशाला के अंतिम दिन, 28 मई, 2011 को प्रतिभागियों ने कार्यशाला की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके बाद एक पश्य–परीक्षा आयोजित की गई, जिससे यह पता लग सके कि कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों के ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई है। उन्होंने पुनः पजल हल करने तथा प्रश्नोतरी प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

सभी प्रतिभागियों को उपनिदेशक(प्रशासन) श्री पी. चौधुरी तथा विशेषाधिकारी श्री एम.आर. कपूर द्वारा सहभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किये गए। बच्चो को सम्बोधित करते हुए श्री पी. चौधुरी ने कहा कि व्यक्ति यदि एकाग्रता और निष्ठा से सीखा जाए तो व्यक्ति कुछ भी सीख सकता है। राष्ट्रीय बाल भवन में बच्चे स्कूल से भी ज्यादा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि राष्ट्रीय बाल भवन बच्चों को सदैव अनौपचारिक रूप में शिक्षा प्रदान करता है।

कविता लेखन कार्यक्रम

25 मई, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के पुस्तकालय द्वारा 25 मई, 2011 को एक कविता लेखन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 22 बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को 5 विषय दिए गए थे जो नशीले पदार्थों की लत और उसके बुरे प्रभावों पर आधारित थे। बच्चों को कोई एक विषय चुनना था तथा उस पर कविता लिखनी थी। इस गतिविधि को आयोजित किये जाने का उद्देश्य बच्चों की सृजनात्मकता को बढ़ावा तथा मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करना था। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों को नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाले दुष्प्रभावों से अवगत कराया गया। बच्चों ने इस कार्यक्रम में पूरे उत्साह के साथ भाग लिया और अपने मौलिक विचारों को कागज़ पर उतारा। कार्यक्रम के अंत में रागी को पुरस्कार स्वरूप पुस्तकें प्रदान की गईं। इस गतिविधि के माध्यम से आदर्श रूप में राष्ट्रीय बाल भवन के बच्चों की सृजनात्मक प्रतिभा को बढ़ाने और उन्हें उनकी आंतरिक शक्तियों से परिचित कराने के उद्देश्य की प्राप्ति हो गयी।

कम्प्यूटर जागरूकता कार्यक्रम

25–26 मई, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के कम्प्यूटर अनुभाग द्वारा 25–26 मई, 2011 को दो दिवसीय कम्प्यूटर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 110 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. रतन दत्ता,पूर्व महानिदेशक, मौसम विभाग, नई दिल्ली थे।

कार्यशाला के पहले दिन अर्थात् 25 मई, 2011 को नेटवर्किंग व इंटरनेट सुरक्षा पर एक परिचर्चा आयोजित की गई, जिसमें डॉ. रतन दत्ता ने बच्चों के साथ चर्चा करते हुए उन्हें पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण के माध्यम से साइबर सुरक्षा के विषय में समझाया गया। उन्होंने इन्फोर्मेशन कम्यूनिकेशन टेक्नॉलाजी (आई.सी.टी) के मानकों के तीन नियम बतलाए। अर्थात् साईट्स की लैकिंग अथवा इंटरनेट से वायरस का आना, उसके विषय में भी बतलाया, जो कि कम्प्यूटर पर पहले से उपलब्ध डाटा को खराब कर सकता है।

डॉ. रतन दत्ता ने 'इंटरनेट सुरक्षा क्लब' का भी उद्घाटन किया। 20 बच्चों, जो कि इंटरनेट का व्यापक ज्ञान रखते थे, इस क्लब के लीडर के रूप मे चुना गया। बच्चों ने साइबर बलिंग, स्मार्ट सर्फिंग, ऑनलाईन एनॉएन्सेज़ आदि से बचने की तकनीकों को भी सीखा। उन्हें इंटरनेट से संबंधित एक प्रश्नावली भी दी गई, जो कि उन बच्चों द्वारा भरी जानी थी जो राष्ट्रीय बाल भवन में दैनंदिन आधार पर इंटरनेट का उपयोग करते हैं।

कम्प्यूटर जागरूकता कार्यक्रम के दूसरे दिन अर्थात् 26 मई, 2011 को "क्या हमारे दैनिक जीवन में इंटरनेट अनिवार्य है अथवा नहीं?" विषय पर एक वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस वाद–विवाद प्रतियोगिता में 30 बच्चों ने भाग लिया। 'साइबर जगत में आपका स्वागत है' विषय पर एक व्याख्यान भी आयोजित किया गया। ई–शिक्षक तथा लीला (लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियली इंटेलिजेन्सी) का डेमो भी प्रदर्शित किया गया, जिससे बच्चों को ई–शिक्षक के विषय में जानने का अवसर मिला तथा वे यह भी जान सके कि अपने विषय की ऑनलाइन जानकारी प्राप्त करने में यह किस प्रकार सहायक है। यह कम्प्यूटर जागरूकता कार्यक्रम पूरी तरह से सफल रहा क्योंकि इसने बच्चों को जीवन में अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कम्प्यूटर को चुनने के लिए प्रोत्साहित किया।

विश्व दूरसंचार दिवस

26 मई, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के रेडियो और इलैक्ट्रॉनिक अनुभाग ने विश्व दूरसंचार दिवस, जो कि 17 मई को मनाया जाता है, के उपलक्ष्य में 18 तथा 21 मई, 2011 को दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 35 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को दूरसचार के सशक्त संसार से परिचित कराना था। इस कार्यक्रम के दौरान पुरातन काल से लेकर अब तक के सम्प्रेषण के माध्यमों के विषय में चर्चा की गई। बच्चों को विश्व दूरसंचार दिवस मनाने के महत्व के विषय में भी बतलाया गया तथा कम्प्यूटर्स, सैल फोन्स तथा इन्टरनेट आदि विभिन्न माध्यमों से दुनिया का नक्शा बदलने में दूरसंचार की भूमिका के विषय में भी बतलाया गया। कार्यक्रम के दौरान एक रोचक 'वाद–विवाद' प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। वाद विवाद का विषय था – 'क्या मोबाइल फोन बच्चों के लिए उपयोगी हैं?' 21 मई को, प्रतिभागियों को राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र ले जाया गया, जहाँ उन्होंने दूरसंचार तथा भौतिकी से संबंधित विभिन्न मॉडल देखे। बच्चों को ग्लोबल वॉर्मिंग से संबंधित एक 3डी फिल्म भी दिखलाई गई। प्रतिभागी दूरसंचार के विभिन्न आयामों के विषय में जानकर प्रसन्न थे तथा वाद विवाद के माध्यम से उन्हें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर भी मिला।

संस्थापक को श्रद्धांजलि

27 मई, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य बच्चों तथा स्टाफ सदस्यों ने राष्ट्रीय बाल भवन के संस्थापक पं. जवाहर लाल नेहरू की 47वीं पुण्य तिथि के अवसर पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। बच्चों ने श्रीमती इन्द्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन के साथ मिलकर चाचा नेहरू के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। बच्चों ने पं. नेहरू के जीवन और कार्यों पर भी प्रकाश डाला तथा कुछ बच्चों ने स्वरचित कविताएं भी प्रस्तुत कीं।

पोस्टर बनाने की कार्यशाला

31 मई – 3 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के प्रकाशन अनुभाग द्वारा 31 मई से 3 जून, 2011 तक पोस्टर बनाने की एक कार्यशाला को आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में लगभग 45 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के विषय 'पर्यावरण' ;'तम्बाकू निरोध' तथा 'शिक्षक की भूमिका' थे।

बच्चों ने कार्यशाला में उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा रंगों के माध्यम से उक्त विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यशाला के अंतिम दिन प्रतिभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किये गए।

दिल्ली की कहानी हमारी जुबानी (संग्रहालय)

31 मई – 3 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के राष्ट्रीय बाल संग्रहालय द्वारा 31 मई से 3 जून, 2011 तक 'दिल्ली की कहानी हमारी जुबानी' शीर्षक चार दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 29 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों को उनके अपने शहर –दिल्ली के इतिहास के विषय में जानकारी प्रदान करना था। दिल्ली मुख्यतः सात शहरों से बनी थी जो कि विभिन्न समयो में विभिन्न शासकों द्वारा बसाये गए थे।

कार्यशाला का उद्घाटन 31 मई, 2011 को सुश्री इंद्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा किया गया। एक प्रतिभागी ने दिल्ली के विषय में कुछ पंक्तियां कहीं। इसके पश्चात् बच्चों को दिल्ली के क्रमशः पहले और दूसरे शहर अर्थात् राय पिथौरागढ़ और महरौली के विषय में एक पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण दिखलाया गया। शाम में, बच्चों को पुराने किले ले जाया गया, जहाँ उन्होंने प्रकश एवं ध्वनि शो का आनंद उठाया, जिससे उन्हें दिल्ली के इतिहास के विषय में काफी जानकारी प्राप्त हुई।

कार्यशाला के दूसरे दिन अर्थात् दूसरे दिन 01 जून, 2011 को एक कथा–सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने कहानियों के माध्यम से उन्हें सीरी के विषय में एक पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण भी दिखलाया गया, जो कि अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बनाया गया दिल्ली का तीसरा शहर है। उन्हें आज के हौज खास के विषय मे भी बताया गया, जो कि सीरी का जलाशय था। इस समय इसे हौज–ए–ऐलाही कहा जाता था।

कार्यशाला के तीसरे दिन अर्थात् 2 जून, 2011 को एक दिन पूर्व सीरी पर प्रदान की गई जानकारी पर आधारित कहानियां सुनाने के लिए कहा गया। इसके पश्चात् गियारा–उ–दिन तुगलक द्वारा बसाये गए दिल्ली के चौथे शहर तुगलकाबाद पर एक पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण दिखलाया गया। उन्हें केंद्रीय रिज पर स्थित मालया महल के विषय में भी जानकारी प्रदान की गई।

कार्यशाला के चौथे दिन, अर्थात् 3 जून, 2011 को, पूर्व दिवस की जानकारी पर आधारित एक और कथा–सत्र आयोजित किया गया तथा बच्चों को फिरोज–शाह–कोटला, शेरगढ तथा शाहजहानाबाद, जो कि दिल्ली के क्रमशः पाँचवें, छठे और सातवें शहर हैं, के विषय में जानकारी प्रस्तुत की गई।

चौथे दिन कार्यशाला समाप्त हुई तथा इन रात्रों में भाग लेने वाले बच्चों को सहभागिता प्रमाणपत्र भी प्रदान किये गए।

इस कार्यशाला के माध्यम से बच्चों को बहुत कुछ सीखने को मिला क्योंकि यह कार्यशाला उन्हें सदियों पहले समय में ले गई और प्राचीन व मध्यकालीन दिल्ली से उनका परिचय कराया।

ऍरोबिक कार्यशाला

31 मई – 11 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के शारीरिक शिक्षा अनुभाग द्वारा 31 मई से 11 जून, 2011 तक लड़कियों के लिए दस दिवसीय ऍरोबिक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में लगभग 60 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों को ऍरोबिक व्यायाम सिखाना था। ऍरोबिक व्यायाम काफी उपयोगी होते हैं, क्योंकि ये मानसिक, शारीरिक, सामाजिक व भावनात्मक विकास में काफी लाभकारी सिद्ध होते हैं। वे हमारे शरीर की जड़ता को समाप्त करते हैं तथा व्यक्ति को स्वस्थ बनाते हैं।

ऍरोबिक व्यायामों से वजन कम करने में भी सहायता मिलती है। प्रतिभागियों ने ऍरोबिक व्यायामों पर आधारित इस गतिविधि से ऊर्जावान तथा स्वस्थ अनुभव किया तथा इसका भरपूर आनंद उठाया। इस कार्यशाला के अंतिम दिन प्रतिभागियों द्वारा राष्ट्रीय बाल भवन के ओपन ऍअर थियेटर में व्यायामों पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए।

सहभागिता प्रमाणपत्र भी प्रदान किये गए।

खाद्य परिरक्षण कार्यशाला

1 जून – 10 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन गृह प्रबंधन अनुभाग ने 1 से 20 जून, 2011 तक दस दिवसीय खाद्य परिरक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में लगभग 120 बच्चों ने भाग लिया, जिसमें राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य बच्चों के अलावा गैर–सरकारी संगठनों नव ज्योति तथा सेवा भारती के सदस्य सम्मिलित थे।

इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों को खाद्य पदार्थों को खराब होने से बचाना बताना था। कार्यशाला के दौरान, खाद्य परिरक्षण के विभिन्न सस्ते तरीकों से प्रतिभागियों को परिचित करवाया गया। उन्हें घरेलू सामग्री जैसे चीनी, नमक तथा रासायनिक पदार्थों जैसे कि सीट्रिक एसिड, के.एम.ए., एसिटिक एसिड, बेन्जोएट आदि को खाद्य पदार्थों में परिरक्षक के रूप में उपयोग किये जाने के विषय में भी बताया गया।

परिरक्षकों का प्रयोग अचार, चटनी, शरबत तथा सॉस आदि जैसे पदार्थों को लम्बे समय तक संरक्षित करके रखने के लिए किया जाता है। बच्चों को खाद्य सामग्री में रासायनिक पदार्थों की उचित मात्रा, रासायनिक पदार्थों के अन्य प्रभाव, खाद्य पदार्थों से न्यूट्रिशनल वैल्यूज, टैक्चर व स्वाद को बनाए रखना आदि के विषय में भी बताया गया

प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम (पुस्तकालय)

2 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के पुस्तकालय ने 2 जून, 2011 को एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित की। इस कार्यक्रम में लगभग 60 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में आर्य बाल गृह , दरियागंज के बच्चों ने भी भाग लिया। इस कार्यक्रम को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य बच्चों को संसार भर में होने वाली नवीन घटनाओं से परिचित करवाना था।

बच्चों से तात्कालिक घटनाओं, विज्ञान, राजनीति, खेल आदि से संबंधित सामान्य ज्ञान पर आधारित बहु–वैकल्पिक प्रश्न पूछे गए। बच्चों को अपने ज्ञान को परखने तथा पुस्तकें पढ़ने व प्रतिदिन समाचार पढ़ने का महत्व समझ में आया, जिससे कि इस प्रतियोगी युग में वे अपने लिए स्थान सुरक्षित कर सके।

प्राथमिक चिकित्सा कार्यशाला

2–13 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के कार्यक्रम अनुभाग ने 13 जून, 2011 को एक प्राथमिक चिकित्सा कार्यशाला आयोजित का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लगभग 65 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों को तत्काल चिकित्सा सुविधाओं से परिचित कराना तथा मानव जीवन को बचाने के लिए उन्हें प्राथमिक चिकित्सा से संबंधित आवश्यक जानकारी प्रदान करना था।

इस बहुआयामी कार्यशाला के अंतर्गत प्राथमिक चिकित्सा के विभिन्न आयामों को छूआ गया, जैसे कि प्राथमिक चिकित्सा के सिद्धांत, चोट लगने की स्थिति में खून के बहने को कैसे रोका जाए, घाव पर पट्टी कैसे बांधी जाए, प्राकृतिक आपदाओं के समय लोगों को कैसे बचाया जाए, जब किसी व्यक्ति को हार्ट अटैक आए तो उस समय क्या करना चाहिए आदि। इस सबके अलावा, उन्हें चोट लगने अथवा हड्डी टूटने की स्थिति में पट्टी आदि बाँधना भी सिखया गया।

कार्यशाला का संचालन रेडक्रास के एम्बुलेंस विंग सेंट जोन्स एम्बूलेन्स ने किया। प्रतिभागियों ने अनुभव किया कि प्राथमिक चिकित्सा से वास्तव में कितने ही लोगों की जान बचाई जा सकती है। उन्हें बताया गया कि दुर्घटना के समय हिम्मत नहीं हारनी चाहिए तथा घबराना नहीं चाहिए। कार्यशाला के पहले दिन, चिकित्सकों को आमंत्रित किया गया और बच्चों को प्राथमिक चिकित्सा संबंधी ज्ञान को मापने के लिए एक मौखिक तथा एक लिखित परीक्षा ली गई। प्रतिभागियों को कार्यशाला प्रारंभ होने के बाद अच्छा लगने आने लगा, क्योंकि इससे उन्हें लोगों की जान बचाने की जानकारी प्राप्त हो रही थी। योग्य प्रतिभागियों को सेंट जॉन्स एम्बुलेन्स ब्रिगेड की ओर से प्रमाणपत्र भी प्रदान किये गए।

राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र का भ्रमण

7 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के कम्प्यूटर अनुभाग ने राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र के भ्रमण का आयोजन किया। इस भ्रमण हेतु 32 बच्चों को ले जाया गया। विज्ञान केन्द्र पर बच्चों की विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति व उपलब्धियों से भी परिचित कराया गया। इस संग्रहालय में हमारे देश की वैज्ञानिक धरोहर को बहुत अच्छे तरीके से संजोकर रखा गया है। इस भ्रमण का उद्देश्य बच्चों के बीच वैज्ञानिक जागरूकता का प्रसार करना तथा वैज्ञानिक रुचि पैदा करना था।

राष्ट्रीय बाल भवन में पर्यावरण सप्ताह

7–11 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन ने 7 से 11 जून, 2011 तक विश्व पर्यावरण सप्ताह का आयोजन किया। इस सप्ताह का केंद्रीय विषय संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी.) द्वारा निर्धारित था – 'जंगल'। राष्ट्रीय बाल भवन के विभिन्न अनुभागों के सभी बच्चों ने इस केंद्रीय विषय से सम्बद्ध गतिविधियों में भाग लिया।

सृजनात्मक कला अनुभाग ने केंद्रीय विषय से सम्बद्ध पेंटिंग्स, मॉडल्स, सीनरीज़ आदि बनाईं। प्रदर्शन कला अनुभाग के बच्चों ने तथा बाल भवन ऑर्केस्ट्रा समूह के बच्चों ने केंद्रीय विषय पर आधारित गीत गाए तथा धुनें प्रस्तुत कीं। पुस्तकालय में केंद्रीय विषय से संबंधित एक कथा–रात्र का आयोजन किया। इस पर प्रकाशन अनुभाग ने पोस्टर बनाने की एक कार्यशाला का आयोजन किया। पर्यावरण सप्ताह के दौरान राष्ट्रीय बाल संग्रहालय 'ए फ्लाइट टू यूनिवर्स' शीर्षक कार्यशाला को आयोजित किया। ये सभी गतिविधियां 11 जून को समाप्त हुईं तथा बच्चों ने स्वच्छता अभियान में भी भाग लिया।

बाल भवन केन्द्रों में विश्व पर्यावरण सप्ताह

7–11 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के 54 बाल भवन केन्द्रों में विश्व पर्यावरण सप्ताह आयोजित किया गया। इस सप्ताह का केंद्रीय विषय संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी.) द्वारा निर्धारित 'जंगल' था। बच्चों ने पेंटिंग, पोस्टर मेकिंग, स्लोगन व कहानी लेखन, नाटक तथा विभिन्न प्रकार की अन्य गतिविधियों में भाग लिया। इन गतिविधियों के माध्यम से उन्होंने हमारे पर्यावरण, विशेष रूप से जंगलों के विभिन्न आयामों को चित्रित किया। इन समारोहों में 14000 बच्चों ने भाग लिया।

कार्टून बनाने की कार्यशाला

9 जून – 11 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के प्रकाशन अनुभाग ने 9–11 जून, 2011 तक कार्टून बनाने की तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लगभग 15 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों को कार्टून, उनके महत्व, उपयोग तथा मानव मन पर उसके सहज व मनोरंजक प्रभाव के विषय में बतलाना था।

बच्चों को छह समूहों में विभाजित किया गया। उन्हें कार्टून बनाने संबंधी आधारभूत नियमों एवं विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि समाचारपत्रों, होर्डिंग्स, विज्ञापनों आदि मे उनके उपयोग के विषय में बतलाया गया। इस कार्यशाला के माध्यम से बच्चों को अपनी सृजनात्मकता को रंगों के माध्यम से कागज पर उतारने का अवसर मिला और बच्चों ने इस कार्यशाला का भरपूर आनंद उठाया।

मौसम भवन का भ्रमण

10 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के कम्प्यूटर अनुभाग ने 10 जून, 2011 को मौसम भवन के भ्रमण का आयोजन किया। इस भ्रमण के लिए 32 बच्चों को ले जाया गया। इस भ्रमण के माध्यम से बच्चों को न केवल मौसम के पूर्वानुमान, वर्षा जल स्तर को मापने की विधियों के विषय में सीखने को मिला बल्कि उन्होंने विभिन्न प्रकार के थर्मामीटरों को भी देखा।

परिचर्चात्मक सत्र (पुस्तकालय)

10 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के पुस्तकालय द्वारा 10 जून, 2011 को बच्चो के साथ एक परिचर्चात्मक सत्र का आयोजन किया गया। यह सत्र 5 से 9 वर्ष तक की आयु वर्ग के बच्चों के लिए आयोजित किया गया था। इस सत्र को आयोजित किये जाने का मुख्य उद्देश्य बच्चों में नैतिक मूल्यों तथा अच्छी आदतों का विकास करना था। इस सत्र में 25 बच्चों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को शैक्षिक व नैतिक मूल्यों जैसे कि बड़ों का आदर करना, ईमानदारी तथा सगता बढाना पर आधारित एनीमेटेड फिल्में दिखाई गईं। बच्चों को दिखाई गई फिल्में एनीमेटेड थीं तथा बच्चों को कार्टून अच्छे लगते हैं, इसलिए बच्चों ने इस सत्र का भरपूर आनंद उठाया।

कहानी लेखन प्रतियोगिता

11 व 18 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के पुस्तालय ने 11 व 18 जून को कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिनमें क्रमशः 29 व 85 बच्चों ने भाग लिया। कहानी लेखन प्रतियोगिता का विषय शराबखोरी, नशीले पदार्थों का सेवन तथा अवैध तस्करी था क्योंकि इस कहानी लेखन को सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय के साथ मिलकर शराब व नशीले पदार्थों के विरूद्ध राष्ट्रीय अभियान के अधीन आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता में राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य बच्चों के साथ आर्य बाल गृह के बच्चों ने भी भाग लिया।

प्रारंभ में प्रतिभागियों को कहानी लेखन के आवश्यक तत्वों से परिचित कराया गया। उन्हें प्रदत्त विषय पर मौलिक कहानियां सोचने हेतु प्रेरित किया गया। बच्चों ने इस प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा नवीन कहानियों की रचना की।

बेकरी व कन्फेक्शनरी कार्यशाला

11–24 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के गृह प्रबंधन अनुभाग की ओर से 11 से 24 जून, 2011 तक एक बेकरी व कन्फेक्शनरी कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 126 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य बच्चों के बेकरी के कौशल का विकास करना था। प्रतिभागियों ने विभिन्न बेक्ड वस्तुओं जैसे केक, बिस्किट, पिज़्ज़ा, मफिन्स आदि बनाना सीखा। उन्हें माइक्रोवेव कुकिंग के विषय में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। यह कार्यशाला सफल रही। इस कार्यशाला के माध्यम से विभिन्न व्यंजनो को बनाने में अपनी सृजनात्मकता का उपयोग किया।

बोर्ड गेम्स

11–30 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के मिलेजुले कार्यकलाप अनुभाग ने 11 से 30 जून, 2011 तक एक बोर्ड गेम्स कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लगभग 30 बच्चों ने भाग लिया।
इस कार्यशाला का उद्देश्य बच्चों को नए बोर्ड गेम्स बनाने व विकसित करने में सृजनात्मकता के उपयोग के लिए प्रोत्साहित करना था।

बच्चों ने विभिन्न नवीन बोर्ड गेम्स बनाये, जो कि अधिकांशतः कार्टूनों से प्रभावित थे। कुछ बोर्ड गेम्स मनोरंजन और काल्पनिक जोखिमों का सम्मिश्रण थीं। बच्चों ने नैतिक मूल्यों तथा अच्छी व बुरी आदतों पर आधारित गेम्स भी बनाईं। इस कार्यशाला के माध्यम से बच्चों का मस्तिष्क नये व मौलिक विचारों की दिशा में खुला। इस दृष्टि से यह कार्यशाला काफी उपयोगी सिद्ध हुई।

खगोलशास्त्र कार्यशाला

14–18 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के खगोलशास्त्र अनुभाग ने 14 से 18 जून, 2011 तक पाँच दिवसीय खगोलशास्त्र कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लगभग 50 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मूल उद्देश्य बच्चों को खेल–खेल में खगोलशास्त्र तथा खगोलगैतिकी की आधारभूत बातों से परिचित कराना था। उनको रात में आकाश में अध्ययन करना भी सिखाया गया।

बच्चों ने स्पेस सैटेलाईट, टेलीस्कोप, सौर–मंडल, सूर्य घड़ी तथा अंतरिक्ष से जुड़े अन्य अनेक मॉडल तैयार किये। यह कार्यशाला काफी रोचक रही क्योंकि बच्चों ने इसके दौरान खेल–खेल के माध्यम से मॉडल्स व खगोलीय पिण्डों के विषय में जानकारी प्राप्त की। इन मॉडल्स को बाद में राष्ट्रीय बाल संग्रहालय तथा आविष्कारक क्लब में प्रदर्शित किया गया।

मशीन मॉडलिंग कार्यशाला

14–18 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के आविष्कारक क्लब ने 14 से 18 जून, 2011 तक पाँच दिवसीय मशीन मॉडलिंग कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लगभग 50 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के आयोजन का मुख्य उद्देश्य बच्चों को विभिन्न मशीनों की कार्य–प्रणाली से परिचित कराना था।

प्रतिभागी बच्चों को 3–3 के 17 समूहों में विभाजित किया गया। उन्होंने ग्रे बोर्ड, कार्ड बोर्ड, माउण्ट बोर्ड, फेवीकोल तथा थर्मोकोल के माध्यम से सरल व जटिल मशीनों के मॉडल तैयार किये। बच्चों ने ग्रे बोर्ड तथा कार्ड बोर्ड से बनी पुलीज़ तथा गियर्स का भी प्रयोग किया।

बच्चों ने उत्साहपूर्वक इस गतिविधि में भाग लिया। वे उन मशीनों की कार्यप्रणाली को जानने के विषय में काफी उत्सुक थे, जो वे दैनंदिन जीवन में अपने चारों ओर देखते हैं। इन मॉडल्स को बाद में राष्ट्रीय बाल संग्रहालय तथा आविष्कारक क्लब में प्रदर्शित किया गया।

स्लोगन लेखन कार्यशाला

15 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के पुस्तकालय ने 15 जून, 2011 को स्लोगन लेखन गतिविधि का आयोजन किया गया। आर्य बाल गृह के बच्चों सहित लगभग 90 बच्चों ने इस गतिविधि में भाग लिया। इस गतिविधि के आयोजन का मुख्य उद्देश्य बच्चों को स्लोगन लेखन, इसके महत्व, कविता एवं स्लोगन में भिन्नता तथा स्लोगन लेखन के कौशल से परिचित करवाना था।

बच्चों को शराबखोरी, नशीले पदार्थों के सेवन तथा अवैध तस्करी के विरुद्ध राष्ट्रीय अभियान से संबंधित विभिन्न विषयों पर स्लोगन लिखने को कहा गया। बच्चों ने सार्थक स्लोगन लिखे और उन पर आधारित सुंदर आर्ट वर्क भी तैयार किये। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चे भली प्रकार से नशीले पदार्थों की लत के दुष्प्रभावों को समझ सके। सभी स्लोगन्स में से सर्वश्रेष्ठ स्लोगन चुने गए और उन्हें क्षेत्रीय स्तर के लिए नामांकित किया गया।

ग्रीटिंग कार्ड तथा बुक मार्क कार्यशाला

15-18 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के प्रकाशन अनुभाग ने 15 से 18 जून, 2011 तक चार दिवसीय ग्रीटिंग कार्ड तथा बुक मार्क कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में 35 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के दौरान, बच्चों को भावनाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम से विभिन्न रूपों में ग्रीटिंग कार्ड के उपयोग के विषय में बतलाया गया।

बच्चों ने अपनी सृजनात्मक शक्ति का उपयोग करते हुए सुंदर ग्रीटिंग कार्ड तथा बुक मार्क तैयार किये, जिन पर उन्होंने पक्षी, फूल, पत्तियां आदि बनाईं। इस कार्यशाला के माध्यम से बच्चों को सुंदर चित्र बनाने व अपनी भावनाओं को कलमबद्ध करने का अवसर मिला। बच्चों ने इस कार्यशाला का भरपूर आनंद उठाया।

'आइये संग्रहालयों को जानें – जहाँ खजाने छिपी हैं'

15, 22 तथा 24 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के राष्ट्रीय बाल संग्रहालय द्वारा 'आइये संग्रहालयों को जाने – जहाँ खजाने छिपे हैं' कार्यक्रम के अंतर्गत क्रमशः 15, 22 व 24 जून, 2011 को इसके सदस्य बच्चों को दिल्ली के तीन प्रमुख संग्रहालयों – राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय तथा राष्ट्रीय संग्रहालय ले जाया गया।

15 जून को संग्रहालय तकनीक क्लब के 40 बच्चों को राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय ले जाया गया। इस संग्रहालय मे बच्चों ने विभिन्न स्टफ्ड पशुओं, धरती के निर्माण को दर्शाने वाले मॉडल, धरती पर जीवन के विकास, पारिस्थितिकीय संतुलन, खाद्य श्रृंखला, ऊर्जा संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों तथा बहु चर्चित मिथकों आंदोलन तथा विभिन्न पारिस्थितिकीय परिस्थितियों जैसे जलयुक्त धरती व रेगिस्तान में जीवन के संबंध में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने विलुप्त प्रायः प्राणियों के संबंध में भी आवश्यक जानकारी प्राप्त की।

22 जून को संग्रहालय तकनीक क्लब के 40 बच्चों को राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय में ले जाया गया। संग्रहालय के कर्मचारियों ने आगन्तुक बच्चो को निर्देशित भ्रमण कराया गया तथा उन्हें संग्रहालय की विभिन्न दीर्घाओं, कलाकृतियों तथा उनके ऐतिहासिक महत्व के विषय में बतलाया गया। बच्चे महात्मा गांधी द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले चरखे तथा उनके कपड़ों, बर्तनों, चश्मे व चप्पलों को देखकर काफी प्रसन्न हुए। इसके अलावा बच्चो ने भारत के स्वतंत्रता–संग्राम का नेतृत्व करने वाले महात्मा गांधी से संबंधित पेंटिंग्स, स्कल्पचर, मानव आकार के मॉडल, काष्ठ कार्य तथा धातु कार्य को भी देखा। संग्रहालय का अनोखा संग्रह सत्य, शांति और अहिंसा के गांधीवादी मूल्यों को बखूबी बखान कर रहा था।

24 जून को संग्रहालय तकनीक क्लब के 40 बच्चों को राष्ट्रीय संग्रहालय ले जाया गया। यह एक राष्ट्रीय महत्व का संग्रहालय है। यहाँ बच्चों ने भारतीय व विदेशी मूल की 5000 वर्षों से भी पुरानी सांस्कृतिक विरासत से जुड़े 2,00,000 से अधिक कृतियों को देखने का अवसर मिला। इसमें विभिन्न सृजनात्मक परंपराओं का संग्रह है, जो कि अनेकता में एकता को प्रतिबिम्बित करती हैं। इस संग्रहालय से बच्चों को भारतीय कला, संस्कृति और इतिहास के वैविध्य की गहनता और व्यापकता के विषय में जानने को मिला।

विभिन्न युगों में संचार के साधन

16 से 18 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के राष्ट्रीय बाल संग्रहालय ने 16 से 18 जून, 2011 तक 'विभिन्न युगों में संचार माध्यम' विषयक एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में 38 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विभिन्न युगों में उपयोग में लाये जाने वाले संचार माध्यमों तथा उनके विकास के विषय मे जानकारी प्रदान करना था।

कार्यशाला के प्रथम दिन 16 जून, 2011 को बच्चों को एक पॉवर पॉइन्ट प्रस्तुतिकरण दिखलया गया, जिसमें प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक के विभिन्न संचार माध्यमों को प्रदर्शित किया गया था।

कार्यशाला के दूसरे दिन 12 तून, 2011 को, इस विषय पर आधारित एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यशाला के अंतिम दिन, 18 जून, 2011 को बच्चों ने केंद्रीय विषय पर आधारित गेम्स व प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लिया। सहभागिता प्रमाणपत्र भी प्रदान किये गए।

एन.सी.ई.आर.टी. का भ्रमण

17 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के कम्प्यूटर अनुभाग ने एन.सी.ई.आर.टी. के भ्रमण का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत बच्चों ने पुस्तक प्रकाशन से संबंधित पर्याप्त जानकारी प्राप्त की। इस भ्रमण में 32 बच्चों ने भाग लिया। इसके पश्चात् बच्चों को सी.आई.ई.टी. ले जाया गया, जो कि एन.सी.ई.आर.टी. का ही स्कंध है। वहाँ बच्चों ने 'जब साँप ने मुझे काटा' तथा 'दारा शिकोह' शीर्षक दो रोचक नाटकों को देखा। उन्होंने फिल्म शूटिंग, वीडियो कैप्चरिंग, कम्प्यूटर के माध्यम से संपादन आदि की तकनीकों को भी सीखा।

विज्ञान पार्क कार्यशाला

21–25 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन इन्वेन्टर्स क्लब द्वारा 21 से 25 जून, 2011 तक एक विज्ञान पार्क कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विज्ञान पार्क में लगे प्रदर्शों के विषय में जानकारी प्रदान करना था कि वे काम कैसे करते हैं।

बच्चों ने स्वयं भी कई मॉडल तैयार किये, जैसे कि टैन्क, सौर पैनल, स्विंग ब्रिज, पनडुब्बी, स्पोर्ट्स कार, होवित्ज़र आदि जो कि विज्ञान की विभिन्न शाखाओं, जैसे कि मशीन, ताप, प्रकाश, ऊर्जा विज्ञान आदि से संबंधित थे।

कार्यशाला में व्यावहारिक कार्य करने की वजह से बच्चों ने इसका भरपूर आनंद उठाया। इससे उन्हें विज्ञान के विभिन्न सिद्धांतों को सरलतापूर्वक समझने का अवसर मिला। इन मॉडल्स को बाद में इन्वेन्टरी क्लब तथा राष्ट्रीय बाल संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया।

शतरंज टूर्नामेन्ट

21–25 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के मिलेजुले कार्यकलाप अनुभाग ने 21 से 25 जून, 2011 तक एक शतरंज टूर्नामेंट का आयोजन किया। इस टूर्नामेन्ट में 25 बच्चों ने भाग लिया। इस टूर्नामेन्ट में बच्चों ने शतरंज पर अपना हाथ आजमाया। इस टूर्नामेन्ट के माध्यम से बच्चों को न केवल शतरंज खेलने का अवसर मिला बल्कि उन्होंने खेल को खेल की भावना से खेलना भी सीखा।

दन्त–परीक्षण शिविर

22 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के कार्यक्रम अनुभाग ने 22 जून, 2011 को जन स्वास्थ्य दन्त चिकित्सा विभाग, मौलाना आजाद इन्स्टिट्यूट ऑफ डेन्टल साइन्सेज के साथ मिलकर एक निःशुल्क दन्त–परीक्षा शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर का राष्ट्रीय बाल भवन के लगभग 135 बच्चों ने लाभ उठाया। इस शिविर का संचालन जन–स्वास्थ्य दन्त चिकित्सा विभाग, मौलाना आज़ाद इन्स्टीट्यूट ऑफ डेन्टल साइन्सेज़ के नेतृत्व में 11 डॉक्टरों के एक दल ने किया।

दन्त परीक्षण के अलावा, बच्चों को मुख की स्वच्छता तथा ब्रश करने की सही तकनीकों के विषय में जानकारी प्रदान करने वाली एक लघु प्रदर्शनी भी लगाई गई।

इन्टरनेट सुरक्षा कार्यशाला

22 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के कम्प्यूटर अनुभाग ने 22 जून, 2011 को एनसीईआरटी हॉल में एक दिवसीय इंटरनेट सुरक्षा कार्यशाला को आयोजित किया। इस कार्यशाला में 172 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों को उनके द्वारा विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर डाले गये व्यक्तिगत विवरण के दुरुपयोग, इंटरनेट के सही उपयोग, ऑनलाइन निजता का महत्व तथा ऑनलाइन खतरों से बचने के विषय में जागरूक करना था।

'जागो टीन्स' नामक गैर सरकारी संगठन से विशेषज्ञ के रूप में पधारी सुश्री लीना गर्ग ने व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा इस विषय पर आधारित एक पॉवर पॉइन्ट प्रस्तुतीकरण भी पेश किया, जिसमें साइबर–बुलिंग तथा साइबर एब्यूज़ जैसे विषय सम्मिलित थे। बच्चों ने इस विषय पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी में भी भाग लिया।

यह कार्यशाला काफी लाभकारी रही। 172 बच्चों ने इंटरनेट सुरक्षा से जुड़े अपने विचार व शंकाओं को अभिव्यक्त किया तथा अपनी सभी शंकाओं का तत्काल समाधान प्राप्त किया। एनसीईआरटी के शिक्षक प्रशिक्षुओं ने भी इस कार्यशाला में भाग लिया। प्रमाणपत्र भी प्रदान किये गए।

बाल भवन केन्द्रों तथा जवाहर बाल भवन, मांडी के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

24 जून, 2011

जवाहर बाल भवन, मांडी तथा दिल्ली के विभिन्न बाल केन्द्रों के बच्चों ने 24 जून, 2011 को राष्ट्रीय बाल भवन के ओपन ऍअर थियेटर मे एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में देशभक्ति गीत, योग व स्केटिंग प्रदर्शन, कव्वाली, भंगड़ा, गिद्धा, हरियाणवी व राजस्थानी नृत्य व विषयाधारित गीत जैसे कि शराबखोरी, नशाखोरी व अवैध तस्करी के विरुद्ध राष्ट्रीय अभियान आदि पर गीत सम्मिलित थे। इस कार्यक्रम बच्चों ने ग्रीष्मकालीन सत्र के दौरान सीखी गई विभिन्न प्रदर्शन कलाओं को प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पीतमपुरा बाल केन्द्र के बच्चों द्वारा प्रस्तुत राजस्थानी कालबेलिया नृत्य था, जिसमें पारंपरिक नृत्य के माध्यम से उन्होंने नशीले पदार्थों से दूर रहने के संदेश को प्रसारित किया। यह प्रदर्शन पारंपरिक माध्यमों से सामाजिक संदेश देने का उत्कृष्ट दृष्टांत था। उन्होंने संदेश के प्रसारण के लिए बैनरों, पोस्टरों आदि का भी उपयोग किया। इस कार्यक्रम से बच्चों का विश्वास बढ़ा चूँकि इसके माध्यम से उन्हें मंच पर आने और अपनी प्रतिभा से सबको परिचित कराने का अवसर मिला।

एशियन अकैडमी ऑफ आर्ट, मारवाह स्टूडियो, नोएडा का भ्रमण

24 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के कम्प्यूटर अनुभाग ने एशियन एकेडेमी ऑफ आर्ट, मारवाह स्टूडियो, नोएडा के भ्रमण का आयोजन किया, जहाँ बच्चों ने साउन्ड स्टूडियो, मल्टीमीडिया लैब, फोटो स्टूडियो तथा प्रोफेशनल न्यूज़ रीडर स्टूडियो देखा। इस भ्रमण के लिए 32 बच्चों को ले जाया गया। उन्हें शूटिंग, एडिटिंग, फ्लेमिंग, बैकग्राउन्ड ध्वनि संपादन आदि की व्यापक जानकारी प्रदान की गई।

समापन समारोह

25 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के ग्रीष्मकालीन सत्र का समापन समारोह 25 जून, 2011 को राष्ट्रीय बाल भवन के ओपन ऍअर थियेटर में आयोजित किया गया। बच्चों ने इस समारोह में उत्साहपूर्वक भाग लिया और राष्ट्रीय बाल भवन में ग्रीष्मकालीन सत्र के दौरान जो कुछ सीखा था, उसका प्रदर्शन किया।

इसके अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम जैसे विषयाधारित गीत, लोक नृत्य व नाटक के कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए, जो बच्चों की अर्जित प्रतिभा को अभिव्यक्त कर रहे थे। समारोह का मुख्य आकर्षण कत्थक और भरतनाट्यम नृत्य रूपों की जुगलबंदी था, जो कि इन दो विभिन्न शास्त्रीय नृत्य रूपों का शानदार सम्मिलन था।

श्रीमती इन्द्राणी चौधुरी, प्रभारी निदेशक ने भी उपस्थित जनों को संबोधित किया। प्रभारी निदेशक ने सभी बच्चो को आशीर्वाद दिया और सबोधित किया। उन्होंने बच्चों से नियमित रूप से राष्ट्रीय बाल भवन आने के लिए कहा, जिससे उनकी प्रतिभा को और अधिक विकसित किया जा सके। इस अवसर पर राष्ट्रीय बाल भवन के विभिन्न कार्यक्रमों व विभिन्न गतिविधियों को दर्शाने

वाली एक फोटो प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका उद्घाटन श्री पी. चौधुरी, उप निदेशक(प्रशा0), राष्ट्रीय बाल भवन ने किया।

रंगोली कार्यशाला

25 जून, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन के गृह प्रबंधन अनुभाग ने 25 जून, 2011 को एक दिवसीय रंगोली कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में लगभग 45 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य बच्चों को रंगोली के विविध रूपों तथा देश के विभिन्न भागों में रंगोली बनाने में प्रयोग में लाई जाने वाली विविध प्रकार की सामग्री, रंगों का सम्मिश्रण, रंगोली के डिज़ाईन के रूप तथा रंगोली बनाने में रसोई में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं के प्रयोग के विषय में बताना था। बच्चों ने स्वयं अपनी प्रतिभा का उपयोग करते हुए सुंदर रंगोली के डिज़ाईन तैयार किये। यह कार्यशाला बच्चों के लिए एक रोचक अनुभव रही।

नशाखोरी तथा अवैध तस्करी के विरूद्ध अंतरराष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय बाल भवन के बच्चों द्वारा प्रस्तुतीकरण

26 जून, 2011

शराबखोरी, नशाखोरी तथा अवैध तस्करी के विरूद्ध अंतरराष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में सामाजिक न्याय एवं आधिकारिता मंत्रालय ने एक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल, माननीय सामाजिक न्याय एवं आधिकारिता मंत्रालय श्री मुकुल वासनिक, सचिव, सामाजिक न्याय एवं आधाकारिता मंत्रालय, श्री के.एम. आचार्या तथा सचिव, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता तथा राष्ट्रीय बाल भवन की अध्यक्ष श्रीमती अंशु वैश की उपस्थिति में शास्त्री भवन हॉल में राष्ट्रीय बाल भवन के बच्चों ने एक मनमोहक प्रस्तुति को पेश किया। बच्चों की सृजनात्मकता देखते ही बनती थी, जब बच्चों ने तम्बाकू, नशीले पदार्थ, शराबखोरी आदि के विरोध में एक पुस्तक के नमूने से हिन्दी, बंगाली, कन्नड़, पंजाबी व मराठी में स्लोगन निकाले और इन्हें माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल तथा माननीय सामजिक न्याय एवं आधिकारिता मंत्री श्री मुकुल वासनिक के हाथों में सौंपा, जिन्होंने पारंपरिक वेशभूषा में आए पाँच क्षेत्रों – केंद्रीय, उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी व पश्चिमी क्षेत्रों के प्रतिनिधि बच्चों को यह स्लोगन सौंपकर इस अभियान का उद्घाटन किया। दो बच्चों ने क्षेत्रीय भाषाओं में स्लोगन बोले। श्री के.एम. आचार्य, सचिव, सामाजिक न्याय व मानव संसाधन विकास मंत्रालय भी इस अवसर पर उपस्थित थे। इस अवसर पर बच्चों द्वारा इस अभियान के अंग के रूप में चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों पर आधारित एक दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति भी प्रस्तुत की।

सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम
मंगोल एथनिसिटी के बच्चों का आर्ट फेस्टिवल

2–12 जुलाई, 2011 उलानबातार, मंगोलिया

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के माध्यम से मंगोलिया दूतावास द्वारा नियोजित किये जाने पर 2 से 12 जुलाई, 2011 तक उल्हानबातार, मंगोलिया में आयोजित होने वाले 'मंगोल एथनिसिटी के बच्चों के आर्ट फेस्टिवली' में भाग लेने के लिए 10 बच्चों तथा 2 अनुरक्षकों का एक प्रतिनिधि मंडल भेजा गया। ये बच्चे देश भर के संबद्ध राज्य बाल भवनों से थे।

इस सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम तथा इस फेस्टिवल के माध्यम से प्रतिभागियों को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विशेष रूप से पारंपरिक अभिव्यक्तियों और रीति–रिवाज़ों को समझने और दूसरों के साथ बाँटने का अवसर मिला। दस दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय बाल भवन के प्रतिनिधिमंडल ने नैरामाडाल तथा उलानबातार में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों व गतिविधियों में भाग लिया तथा सभी की प्रशंसा प्राप्त की।

यह प्रतिनिधिमंडल दस दिनों तक नैरामाडाल बाल केन्द्र में ठहरा। पहले दिन भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने सभी आयोजित देशों के साथ ध्वजारोहण समारोह में भाग लिया, भारत का ध्वज फहराया गया तथा भारत के विषय में भाषण दिया। शाम को, प्रतिनिधिमंडल द्वारा सांस्कृतिक संध्या में एक मोहक समूहगान प्रस्तुत किया गया।

दूसरे दिन, भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने विभिन्न पारंपरिक भारतीय पोशाकों, मेकअप, पारंपरिक भारतीय गहनों, भारतीय कला व पेंटिंग्स, भारत संगीत वाद्यों तथा भारतीय ध्वज का प्रदर्शन किया। उन्होंने भारतीय नृत्यों तथा संगीत का भी प्रदर्शन किया और आगंतुकों के माथों पर स्वागत के रूप में कुमकुम का टीका भी लगाया। प्रतिनिधिमंडल ने नैरामाडाल के सांस्कृतिक केंद्र में आयोजित फैशन शो में भी भाग लिया।

अगले दो दिनों के दौरान भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने चंगेज़ खां गैलोरियल तथा मंगोलियन नेशनल थियेटर का भ्रमण किया। आयोजकों द्वारा एक पिकनिक तथा दर्शनीय स्थल दिखाने का भ्रमण भी आयोजित किया गया।

पाँचवें दिन, बच्चे आर्ट फेस्टिवल, उलानाबातार में उद्घाटन समारोह के दौरान प्रस्तुत किये जाने वाले कार्यक्रम का अभ्यास करने के लिए उलानाबातार गये। इसके पश्चात् बाल केन्द्र के निदेशक ने नैरामादाल में सभी प्रतिनिधिमंडलों के अनुरक्षकों का स्वागत किया। छठे दिन, बच्चों ने विभिन्न खेलों में भाग लिया, क्योंकि यह खेल दिवस दिवस था। सातवें दिन बच्चे प्रदर्शन का अभ्यास करने उलानाबतार गये।

आठवें दिन, बच्चे प्रदर्शन का पूर्वाभ्यास करने उलानाबातार थियेटी गए, जहाँ शाम को एक कैम्प फायर का भी आयोजिन किया गया।

नवें दिन, भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने एक आर्ट फेस्टिवल के उदघाटन समारोह के दौरान शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किये। शाम को, नैरामादाल में 'नैन्म्वेट' के दौरान बच्चों ने लोक गीत तथा फ़्यूज़न जान्स प्रस्तुत किये।

अगले दिन, सभी प्रतिनिधिमंडलों ने मंगोलिया के बाज़ारों में खरीदारी की। शाम को, शिक्षकों के प्रदर्शन आयोजित किये गए, जिसमें सुश्री नेहा वत्स (जो कि भारतीय प्रतिनिधिमंडल की एक अनुरक्षक थी) ने मनमोहक भारतीय गीत गाकर सबको मोहित कर दिया।

ग्यारहवें दिन, नदाम फेस्टिवल के दौरान भारतीय प्रतिलिधिमंडल ने मंगोलिया की राष्ट्रीय दिवस परेड में भाग लिया। भारतीय प्रतिनिधिमंडल परेड स्टेडियम से शान के साथ भारतीय ध्वज को थामे हुए निकला। शाम को नैरामादाल में बाल महोत्सव का समापन समारोह था जहाँ भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने रंगबिरंगी पोशाकें पहनें अन्य प्रतिनिधियों के साथ भारतहीय व मंगोलियन नृत्यों को प्रस्तुत किया।

अंतिम दिन, प्रतिनिधि मंडल एक दूसरे से अलग हुए। भारतीय प्रतिनिधिमंडल ट्रैकिंग के लिए तथा भारतीय दूतावास घूमने गया।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल की सक्रिय सहभागिता तथा मनमोहक प्रदर्शनों की सभी प्रतिभागियों तथा दर्शकों द्वारा काफी प्रशंसा की गई।

स्थानीय बाल श्री

6–7 जुलाई, 2011

6–7 जुलाई, 2011 को राष्ट्रीय बाल भवन में दिल्ली राज्य का स्थानीय बाल श्री शिविर आयोजित किया गया। स्थानीय स्तर बाल श्री सम्मान की चयन प्रक्रिया का प्रारंभिक चरण है। प्रतिभागियों का चार सृजनात्मक क्षेत्रों – सृजनात्मक कला, सृजनात्मक प्रदर्शन कला, सृजनात्मक लेखन तथा सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण में मूल्यांकन किया जाता है। राष्ट्रीय बाल भवन, जवाहर बाल भवन, मान्डी, बाल भवन केन्द्रों तथा सदस्य स्कूलों के बच्चों सहित 154 बच्चों ने इस स्थानीय स्तर के शिविर में भाग लिया। सृजनात्मक प्रदर्शन कला में 37, सृजनात्मक कला में 49, सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण में 39 तथा सृजनात्मक लेखन में 229 बच्चों ने भाग लिया।

इस शिविर का प्रारंभ 6 जुलाई, 2011 को एक तनावमुक्ति के सत्र के साथ हुआ, जिसका संचालन सुश्री इंद्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा राष्ट्रीय बाल भवन के एन.टी. आर.सी. हॉल में किया गया। इस सत्र का आरंभ बाल श्री के संक्षिप्त परिचय तथा यह बताने के साथ हुआ कि प्रतिभागियों से क्या अपेक्षित है। इसके पश्चात् प्रतिभागियों ने विभिन्न सृजनात्मक खेलों में भाग लिया। इस सत्र से बच्चों का अपना तनाव कम करने में सहायता हो सकी तथा मूल्यांकन प्रक्रिया प्रारंभ होने से पूर्व उनकी घबराहट कम हो सकी।

राष्ट्रीय बाल भवन के 12 स्टॉफ सदस्य, जो कि उपरोक्त विषय क्षेत्रों का अच्छा ज्ञान रखते हैं, प्रतिभागियों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए विशेषज्ञ थे। प्रथम सत्र 6 जुलाई, 2011 को तनावमुक्ति के सत्र के पश्चात् हुआ। बच्चों को विशेषज्ञों द्वारा बार–बार स्मरण कराया गया कि किस प्रकार सहज रूप मे मौलिकता के साथ इन गतिविधियों को करना है। बच्चों को उनके सहभागिता के विषय क्षेत्र के अनुरूप परीक्षकों द्वारा उनकी सृजनात्मकता का मूल्यांकन करने के लिए अलग–अलग गतिविधियां करने को दी गई। 7 जुलाई, 2011 को दूसरे सत्र के साथ इस शिविर का समापन हुआ।

2008, 2009 तथा 2010 के बाल श्री विजेताओं के लिए विशेष कार्यक्रम

22 जुलाई, 2011

2008, 2009 तथा 2010 के बाल श्री विजाताओं के लिए 22 जुलाई, 2011 को राष्ट्रीय बाल भवन के मेखला झा रंगस्थल में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया। माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने इस अवसर पर उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा सभी 147 पुरस्कृत बच्चों से मिलकर उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम में डॉ. अमरजीत सिंह, सांयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा व साक्षरता),

सूचना व प्रसारण मंत्रालय भी उपस्थित थे। यह हमारे देश के अत्यधिक सृजनशील 147 बच्चों व उनके माता–पिता के लिए गौरवपूर्ण क्षण था।

दो विभिन्न रूप से सक्षम बच्चों ने पुष्पगुच्छ प्रदान कर माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल का स्वागत किया। श्रीमती इन्द्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रभारी निदेशक ने माननीय मंत्री महोदय का पधारने के लिए तहे दिल से आभार व्यक्त किया तथा कहा कि ये सृजनशील बच्चे वास्तव में सौभाग्यशाली हैं कि इन्हें 25 जुलाई, 2011 को होने वाले सम्मान समारोह से पूर्व ही माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल जी का आशीर्वाद मिल रहा है। प्रभारी निदेशक ने विश्वास व्यक्त किया कि माननीय महोदय की उपस्थिति, उनके आशीर्वाद से तथा उनके प्रेरणास्पद शब्दों से बाल श्री विजेताओं को अपनी सृजनात्मकता का और अधिक विकास करने की प्रेरणा मिलेगी।

माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल प्रत्येक पुरस्कार विजेता से मिले व आशीर्वाद दिया। इसके पश्चात् माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने उपस्थित जनों को संबोधित किया। माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि राष्ट्रीय बाल भवन में बच्चों के साथ समय बिताना उनके लिए सदैव आनन्ददायक रहा है उन्होंने कहा कि हम भविष्य के नागरिकों की आँखों में आकांक्षाएं स्पष्ट देख रहे हैं। माननीय मंत्री महोदय ने कहा, 'यहाँ मैं कला, प्रदर्शन कला, विज्ञान व लेखन के क्षेत्र देश के अग्रणी नागरिकों को देख रहा हूँ।' उन्होंने यह भी कहा, 'हर आदमी में सृजनात्मकता का अंश विद्यमान रहता है, सृजनात्मकता का स्तर प्रत्येक में जरूर भिन्न हो सकता है और जरूरी नहीं कि सभी को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का अवसर मिल जाए किन्तु राष्ट्रीय बाल भवन ऐसी थोड़ी सी संस्थाओं में से एक है जो कि बच्चों को एक भिन्न दुनिया में ले जातपा है अर्थात् 'पुस्तकों की दुनिया से' 'सृजनात्मकता की दुनिया' में ले जाता है। माननीय मंत्री महोदय को इस बात से प्रसन्नता हुई कि ये बाल श्री सम्मान प्राप्तकर्ता हम सबसे अधिक सृजनशील हैं तथा 'बच्चों की दुनिया' में एकता विद्यमान है। मंत्री महोदय ने कहा कि व्यापार लोगों में भेद करता है और कला हम सबको जोड़ती है और जहाँ भी वे जाएंगे, वे राष्ट्रीय बाल भवन की संपन्नता और विविधता के संदेश को ले जाएंगे। माननीय मंत्री महोदय ने राष्ट्रीय बाल भवन को हमारी सांस्कृतिक विरासत को विकसित करने के लिए बधाई दी। उन्होंने यह भी कहा कि सृजनात्मकता को और आगे विकसित किया जाना चाहिए तथा इसे केवल कला, प्रदर्शन कला, विज्ञान तथा लेखन तक ही सीमित नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि हमें पाठ्यक्रमों तथा उन धारणाओं में बदलाव करना होगा, जो कि एक डॉक्टर को एक संगीतकार तथा एक अर्थशास्त्री को एक लेखक या एक लेखक को अर्थशास्त्री नहीं बनने देतीं। इस दृष्टि से पाठ्यचर्या को बदलने की ज़रूरत है, जिससे कि हम एक विषय क्षेत्र से दूसरे विषय–क्षेत्र में भी जा सकें। उन्होंने कहा कि ब्रह्माण्ड की कोई सीमा नहीं है। उन्होंने सम्मान प्राप्तकर्ताओं से कहा कि "शिक्षा का उद्देश्य धन कमाना नहीं अपितु एक देश का अच्छा नागरिक बनना है तथा साक्षरता से अधिक ज्ञान महत्वपूर्ण है क्योंकि कई बार देखा जाता

है कि निरक्षर व्यक्ति साक्षर व्यक्ति से अधिक ज्ञान रखता है अथवा अधिक समझदार होता है। उन्होंने सम्मान प्राप्तकर्ताओं से यह भी कहा कि हम सब एक बड़े परिवार के सदस्य हैं हमारे जीवन में जो भी महत्वपूर्ण है, वो वास्तव में बच्चे ही लेकर आते हैं।"

माननीय मंत्री महोदय ने सम्मान प्राप्तकर्ताओं द्वारा प्रदर्शन भी देखा, जिसने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया।

राष्ट्रीय बाल भवन का 2008, 2009 तथा 2010 का बाल श्री सम्मान समारोह

25 जुलाई, 2011

25 जुलाई, 2011 को विज्ञान भवन के प्लेनरी हॉल में राष्ट्रीय बाल भवन का 2008, 2009 तथा 2010 का बाल श्री सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें देश भर के 147 सर्वाधिक सृजनशील बच्चों अर्थात् 'बाल श्री सम्मान प्राप्तकर्ताओं' को डॉ. डी. पुरन्देश्वरर, माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री द्वारा बाल श्री सम्मान 2008, 2009 तथा 2010 प्रदान किये गए।

समारोह में श्रीमती अंशु वैश, सचिव, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता व अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन, श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन, डॉ. अमरजीत सिंह, संयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग) ने अपनी उपस्थिति से समारोह की शोभा बढ़ाई। राज्य बाल भवनों के निदेशक, अनुरक्षक, राष्ट्रीय स्तर के चयन से जुड़े विशेषज्ञ, सम्मान प्राप्तकर्ताओं के माता–पिता, विभिन्न राज्य चैनलों से जुड़े प्रतिष्ठित मीडियाकर्मी तथा राष्ट्रीय बाल भवन के स्टॉफ सदस्य भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

स्वागत भाषण श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवनद्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने सम्मानित अतिथियों, पुरस्कार विजेताओं, विजेताओं के माता–पिता, अनुरक्षकों, विशेषज्ञों तथा समारोह में उपस्थित सभी का स्वागत किया। उपाध्यक्ष महोदय ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक क्षण है, जब माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को सम्मानित करेंगी। उन्होंने यह भी कहा कि किस प्रकार डॉ. पुरन्देश्वरी, सम्प्र. अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल तथा श्रीमती अंशु वैश, सचिव स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग व अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन के साथ मिलकर साक्षरता से जुड़ी विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन की गहनतापूर्वक देखभाल कर रही हैं तथा उनके ये प्रयास 'ज्ञान के संसार' को

'अवसरों के संसार' में तबदील करने में किस प्रकार सफल रहे हैं। उन्होंने कहा कि सम्मान प्राप्तकर्ता अपने संबंध राज्यों/क्षेत्रों के नेता हैं। उन्होंने कहा कि सम्मान प्राप्तकर्ताओं के अभिभावकों ने उन्हें विभिन्न मूल्य दिये हैं तथा उन्हें बाल भवन आंदोलनल के साथ जोड़ा है तथा यह सम्मान प्राप्त कर बाल श्री विजेताओं ने वास्तव
में अपने क्षेत्र में जाकर 'पढ़ने और दूसरों को पढ़ाने' के संदेश को प्रसारित करना चाहिए। उन्होंने सम्मान प्राप्तकर्ताओं से 'शिक्षा के अधिकार' के आंदोलन को आगे ले जाने को कहा।

माननीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री ने बाल श्री सम्मान एक विजेता को प्रदान करते हुए

इसके पश्चात् श्रीमती अंशु वैश, सचिव, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग तथा अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन ने संबोधित किया। अध्यक्ष महोदया ने बाल श्री योजना के विषय में संक्षिप्त जानकारी दी और कहा, "आज के बच्चों को कल के समाज के जिम्मेदार और रचनात्मक सदस्य के रूप में तब तक विकसित नहीं किया जा सकता जब तक कि उसके शारीरिक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए एक अनुकूल वातावरण उन्हें प्रदान नहीं किया जाता। प्रत्येक राष्ट्र, चाहे वह विकसित हो या विकासशील, अपने भविष्य को बच्चों की स्थिति से जोड़कर ही सुनिश्चित कर सकता है ..... बच्चों की अनदेखी करने का अर्थ होता है पूरे समाज का नुकसान। यदि बच्चों से उनका बचपन छीन लिया जाए – सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक व मानसिक रूप से – तो सामाजिक प्रगति, आर्थिक सशक्तिकरण तथा शांति, सामाजिक स्थायित्व तथा अच्छी नागरिकता के लिए मानव संसाधन का सामर्थ्य नहीं रहेगा। इसीलिए हमारे संविधान के निर्माताओं ने, बच्चों की भूमिका उनके श्रेष्ठतम विकास पर बल दिया है।"

सचिव, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता व अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन ने उल्लेख किया कि 1995 में जब बाल श्री योजना का प्रारंभ हुआ, तब से 257 बच्चे यह सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने इस तथ्य पर प्रसन्नता व्यक्त की कि 2008–2010 में, देश भर में फैले कई नये संबद्ध बाल भवनों के बच्चे भी सृजनात्मक उत्कृष्टता के इस अभियान में राष्ट्रीय बाल भवन के साथ जुड़े। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में सम्मान प्राप्त करने वाले बच्चों की संख्या में वृद्धि होना सामान्य रूप से बाल भवन आंदोलन और विशेष रूप में इस योजना की लोकप्रियता के बढ़ने को प्रतिबिम्बित करता है और राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा प्रोत्साहन और अनुकूल वातावरण प्रदान किया जाना इस योजना की नित बढ़ती लोकप्रियता को सुनिश्चित करता है। उन्होंने 2008, 2009 तथा 2010 के बाल श्री विजेताओं को इस सम्मान हेतु चयनित किये जाने के लिए हमारे देश के असंख्य बच्चों को अपनी सृजनात्मक योग्यता से प्रेरित करने के लिए बधाई दी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि वे

और बच्चों को निरंतर प्रेरित करते रहेंगे। सचिव, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग व अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन का विश्वास था कि ये बच्चे देश को नई ऊँचाईयों तक ले जाएंगे। अंत में, उन्होंने बाल श्री सम्मान प्राप्त करने वाले बच्चों को आशीर्वाद प्रदान करने के लिए डॉ.डी. पुरन्देश्वरी, माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री का धन्यवाद किया।

संध्याकाल का मुख्य केन्द्र बाल श्री सम्मानों का वितरण था। प्रतिभाशाली सम्मान प्राप्तकताओं को सृजनात्मकता के विविध क्षेत्रों – सृजनात्मक कला, सृजनात्मक प्रदर्शन कला, सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण तथा सृजनात्मक लेखन में उत्पन्न प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया।

अपने बच्चों को डॉ. डी. पुरन्देश्वरी, माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री के हाथों सम्मानित होता देखना अभिभावकों के लिए मंत्रमुग्ध कर देने वाला था। चयन प्रक्रिया के तीन चरणों के पश्चात् यह सम्मान प्राप्त करना विजेताओं के लिए भावुक तथा गौरवपूर्ण क्षण था। उनके चेहरे गर्व से चमक रहे थे, जब डॉ. डी. पुरन्देश्वरी, माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री ने उन्हें सम्मान प्रदान किये, जिसमें एक फलक, एक प्रशस्ति पत्र तथा रुपये 10,000/– का किसान विकास पत्र सम्मिलित था।

सुश्री हेतल, एक अलग प्रकार से योग्य बच्चा, जिसे सृजनात्मक कला में उत्कृष्टता के लिए किया गया, के साथ माननीय मंत्री

माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय बाल भवन की संकल्पना पं. जवाहर लाल नेहरू ने एक ऐसे संस्थान के रूप में की थी, जो बच्चों को रटने वाली शिक्षा देने की बजाय बच्चों की सृजनात्मकता का विकास करने में सहायक हो सके तथा उन्हें अपनी आंतरिक प्रतिभा तथा सृजनात्मकता को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान कर सके।

माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि यह सम्मान प्राप्त करने वाले बच्चों ने न केवल बाल भवन को गौरवान्वित किया है अपितु हमें भी गौरवान्वित किया है और यह प्रसन्नता का विषय है कि देश के विभिन्न भागों से बच्चे यह सम्मान प्राप्त करने के लिए एक जैसी वेशभूषा में आए हैं, जो एकीकृत भारत के भविष्य को प्रतिबिम्बित करता है। सम्मान प्राप्तकर्ताओं द्वारा प्रदर्शित अनुशासन से वे बहुत प्रसन्न थीं तथा उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हमारा भविष्य सुरक्षित हाथों में है और यही बच्चे हमारे देश के नई ऊँचाईयों पर ले जाएंगे। माननीय मंत्री महोदया ने कहा कि बच्चों के मस्तिष्क में केवल तथ्य और जानकारी डाल देने भर का अर्थ शिक्षा नहीं है, जिन्हें वे ठीक से समझ भी नहीं पाते। उन्होंने सभी को यह समझाने का प्रयास किया कि केवल तथ्यों को इकट्ठा करना ही पर्याप्त नहीं अपितु मस्तिष्क की एकाग्रता अधिक महत्वपूर्ण है।

माननीय मंत्री महोदया ने विश्वास व्यक्त किया कि स्कूल को बच्चों के व्यक्तित्व को निखारना चाहिए, जहाँ शिक्षा आंतरिक सौंदर्य को निखारती है। उन्होंने इस तथ्य पर अप्रसन्नता व्यक्त की कि पिछले कुछ वर्षों में हम शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों से भटक गए हैं। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द का उदाहरण दिया और कहा कि बच्चे का व्यापक समग्र विकास ही उसे अच्छा तथा सार्थक व उपयोगी नागरिक बनाती है तथा न केवल उसके परिवार पर अपितु व्यापक रूप से समाज में इसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने कहा कि हमें बच्चे में अंकों, उपलब्धियों तथा पुरस्कारों पर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि हमें बच्चों को उनके वातावरण को समझने, समाज में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने में उनकी मदद करनी चाहिए और यह बाल भवन ही है, जो बच्चों को उनमें सामर्थ्य को पहचानने, अपना मूल्यांकन करने, अपनी शक्तियों को पहचानने और अपने सर्वश्रेष्ठ को प्रदर्शित करने में बच्चों की सहायता करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि आज भिन्न रूप से समर्थ बच्चे बड़ी संख्या में यह सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। माननीय मंत्री महोदया ने कहा कि मानव संसाधनविकास मंत्रालय शिक्षा प्रणाली में सुधारों के लिए भरसक प्रयास कर रहा है जिसका उद्देश्य है केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा व्यापक सतत् मूल्यांकन को लागू किया जाना। उन्होंने आशा व्यक्त की कि अन्य बोर्ड भी केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का अनुसरण करेंगे। माननीय मंत्री महोदया ने सम्मान प्राप्तकर्ता बच्चों के अभिभावकों को भी बधाई दी क्योंकि उनके सहयोग के बिना बच्चे बाल भवन नहीं आ पाते। उन्होंने यह भी आशा व्यक्त की कि अभिभावक बच्चों को उस विषय क्षेत्र को चुनने देंगे जिसे बच्चा चुनना चाहे।

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा, "बच्चे हमारे देश की अमूल्य धरोहर हैं तथा हमें उन्हें शोषण तथा अभावों से बचाने के लिए प्रयास करने होंगे।" अंत में उन्होंने पुनः बाल श्री विजेताओं और उनके अभिभावकों को बधाई दी। धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती इन्द्राणी चौधूरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा प्रस्तुत किया गया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

12 अगस्त, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन में 12 अगस्त, 2011 को 64वां स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया। सभी स्टॉफ सदस्य तथा उस समय चल रहे एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम के सभी प्रशिक्षु शिक्षक समारोह के लिए बाल भवन के सामने वाले मैदान में एकत्र हुए। समारोह का आरंभ राष्ट्रगान के साथ हुआ। झण्डा राष्ट्रीय बाल भवन की प्रभारी निदेशक श्रीमती इन्द्राणी चौधूरी ने फहराया। इसके बाद बच्चों ने पतंगे भी उड़ाईं। जवाहर बाल भवन, मण्डी में भी स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया। मण्डी में भी राष्ट्रीय बाल भवन के उपाध्यक्ष द्वारा झण्डा फहराया गया। उन्होंने गांडी के

ग्रामीण बच्चों को संबोधित किया और उन्हें बताया कि हमें यह आज़ादी कितनी कठिनाईपूर्वक और कितने संघर्षों के बाद हुई है।

शराबखोरी, नशाखोरी व अवैध तस्करी के विरूद्ध राष्ट्रीय अभियान पर कार्यक्रम

12 अगस्त, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन ने 12 अगस्त, 2011 को मेखला झा रंगस्थल में "शराबबन्दी, नशाखोरी व अवैध तस्करी के विरूद्ध अभियान" विषय पर छह सम्मेलनों की श्रृंखला में पहला सम्मेलन आयोजित किया। दिल्ली, एन.सी.आर. के विभिन्न स्कूलों के 40 बच्चों ने उक्त विषय के अंतर्गत हुई चर्चा में वक्ता के रूप में भाग लिया। इस सम्मेलन का उप–विषय थे – 'नशीली दवाई दर्द, गौत और अकेलापन देती हैं तथा जीवन, मित्र व खुशियां हमारी छीन लेती हैं; नशीले पदार्थ हमसे धन से बहुत ज्यादा ले लेती हैं; नशीली दवाएं – ईलाज या आँसू' आदि। सुश्री सुमति घोष, एक मनोचिकित्सक तथा श्री वाई.डी. माथुर, पूर्व सहायक निदेशक(विज्ञान), राष्ट्रीय बाल भवन पैनल में थे। कार्यक्रम के दौरान पैनल के सदस्यों ने भी बच्चों से बातचीत की।

नशीले पदार्थों की लत और उसके दुष्प्रभावों के विषय में बच्चों ने कितनी जानकारी प्राप्त की है, यह जानने के लिए एक पूर्व परीक्षा तथा एक पश्च परीक्षा आयोजित की गई। वक्ताओं का विचार था कि नशीले पदार्थों के सेवन से समाज तथा समुदाय के लिए बहु आयामी समस्याएं पैदा हो सकती हैं, इस समस्या से लड़ा जा सकता है।

शराबखोरी, नशीली दवाओं के सेवन तथा अवैध तस्करी के विरूद्ध राष्ट्रीय अभियान की केस स्टडी

26 अगस्त, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन ने 'शराबखोरी, नशीली दवाओं के सेवन तथा अवैध तस्करी के विरूद्ध अभियान' विषय पर 26 अगस्त, 2011 को मेखला झा रंगस्थल में एक केस स्टडी का आयोजन किया गया। दिल्ली तथा एन.सी.आर. के 10 स्कूलों के 20 बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। श्री वाई.डी. माथुर, पूर्व सहायक निदेशक(विज्ञान), राष्ट्रीय बाल भवन तथा श्रीमती एम. उमा, एक जीवन कौशल विशेषज्ञ पैनलिस्ट थे।

प्रत्येक स्कूल को एक नशे की लत वाले केस को लेने को कहा गया तथा उसके अतीत व वर्तमान की स्थितियों का गहन अध्ययन करने को कहा गया। प्रतिभागियों ने अपने सब्जेक्ट्स के साक्षात्कार लिए तथा उनके केस को पॉवर पॉइन्ट प्रेजेन्टेशन, फ्लो–चार्ट व वीडियो क्लीपिंग के माध्यम से प्रस्तुत किया। केस स्टडीज़ ने दर्शाया कि नशीले पदार्थों की लत वाले ये लोग या तो ग्रामीण क्षेत्रों से थे, जो कि इसके नुकसानदायक परिणामों से अनभिज्ञ थे या किशोर थे जो साथियों के दबाव की वजह से या केवल मनोरंजन के लिए नशीली दवाओं का सेवन करते थे। केस स्टडीज़ ने नशीली दवाओं के सेवन के घातक परिणामों पर भी प्रकाश डाला। सरकारी विद्यालय के एक छात्र ने अपने पिता की केस स्टडी को लिया, जो कि शराब पीते थे तथा बच्चे ने अपने परिवार पर शराब के बुरे प्रभावों के विषय में विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम के दौरान पैनल के सदस्यों ने बच्चों से बातचीत की। बच्चों द्वारा नशीले पदार्थों के सेवन तथा इससे होने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी के मूल्यांकन के लिए एक पूर्व परीक्षा व पश्च परीक्षा भी आयोजित की गई।

शराबखोरी, नशीली दवाओं के सेवन तथा अवैध तस्करी के विरूद्ध राष्ट्रीय अभियान पर सम्मेलन, केस स्टडी तथा पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता

30 अगस्त, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन ने 30 अगस्त, 2011 को मेखला झा रंगस्थल में "शराबखोरी, नशीली दवाओं के सेवन तथा अवैध तस्करी के विरूद्ध अभियान" विषय पर छह सम्मेलनों की श्रृंखला में दूसरा सम्मेलन आयोजित किया। उक्त विषय पर चर्चा में राष्ट्रीय बाल भवन के 2 सदस्य बच्चों ने वक्ता के रूप में भाग लिया। इस सम्मेलन के उप विषय थे, "हज़ार उपाय बताना आसान है पर एक ईलाज पाना मुश्किल; नशीली दवाएं जीवन को टुकड़े–टुकड़े कर देती हैं; शराबखोरी कोई खेल नहीं है" आदि। श्री वाई.डी. माथुर, पूर्व सहायक निदेशक(विज्ञान), राष्ट्रीय बाल भवन, श्रीमती एम.उमा, एक जीवन कौशल विशेषज्ञ पैनलिस्ट थे। पैनल के सदस्यों ने भी कार्यक्रम के दौरान अपने ज्ञान को बच्चों के साथ बांटा। नशीली दवाओं की लत और तराके दुष्प्रभावों के विषय में बच्चों के ज्ञान का मूल्यांकन करने के लिए एक पूर्व–परीक्षा तथा एक पश्च–परीक्षा भी आयोजित की गई।

26 अगस्त, 2011 को हुई केस स्टडी प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ चयनित टीम को अपने केस को प्रस्तुत करने को कहा गया, जिससे कि प्रतिभागियों को समाज में नशीले पदार्थों के वर्चस्व को कम करने के लिए उठाये जाने वाले ठोस कदमों के विषय में बताया जा सके।

"शराबखोरी, नशीली दवाओं के सेवन तथा अवैध तस्करी के विरूद्ध अभियान" विषय पर एक पोस्टर बनाने की कार्यशाला भी आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में राष्ट्रीय बाल भवन के 8 सदस्य बच्चों ने भाग लिया। पोस्टरों के माध्यम से प्रतिभागियों ने इस सामाजिक अभिशाप के विभिन्न कारणों तथा संभव उपायों को चित्रित किया। पोस्टर बहुत सुंदर तरीके से इस अभिशाप के कारणों को चित्रित कर रहे थे जिसमें सामजिक असगठन; दोस्तों का दबाव, किशोर के परिवार से संबंधित कारक तथा आवश्यक कारण प्रमुख हैं।

ईद–उल–फ़ितर समारोह

3 सितम्बर, 2011

राष्ट्रीय बाल भवन में 3 सितम्बर, 2011 को ईद–उल–फितर मनाया गया। राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य बच्चों, राष्ट्रीय प्रशिक्षण संसाधन केन्द्र के प्रशिक्षु शिक्षक तथा राष्ट्रीय बाल भवन के स्टाफ सदस्यों ने इस समारोह में भाग लिया। श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन तथा श्रीमती इन्द्राणी चौधुरी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन इस अवसर पर उपस्थित थे। मोहक कव्वालियों, गजलों से युक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम राष्ट्रीय बाल भवन के प्रदर्शन कला अनुभाग के स्टाफ और सदस्य बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

शराबखोरी, नशीली दवाओं के सेवन तथा अवैध तस्करी के विरूद्ध राष्ट्रीय अभियान के लिए राष्ट्रीय बाल भवन की स्थानीय स्तर की गतिविधियां – एम.एस.जे.ई. परियोजना

27 सितम्बर, 2011

27 सितम्बर, 2011 से एक नुक्कड़ नाटक गतिविधि को आयोजित किया गया, जिसमें सम्बद्ध स्कूलों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। इसमें 14 चयनित टीमों ने भाग लिया और प्रदर्शन किय। रॅयान इंटरनेशनल स्कूल, नोएडा को सर्वश्रेष्ठ चुना गया।

30 सितम्बर, 2011

पोस्टर मेकिंग, कहानी लेखन, कविता तथा स्लोगन लेखन, सम्मेलन तथा केस स्टडी का आयोजन विज्ञापन के आधार पर पंजीकरण करवाने वाले छात्रों के लिए किया गया। इन गतिविधियों में लगभग 40 बच्चों ने भाग लिया।

"शराबखोरी, नशीली दवाओं के सेवन तथा अवैध तस्करी के विरूद्ध राष्ट्रीय अभियान" का क्षेत्रीय स्तर के शिविर – एम.एस.जे.ई. परियोजना

12–13 अक्तूबर, 2011

दो क्षेत्रीय स्तर के शिविर – केंद्रीय क्षेत्र तथा पश्चिमी क्षेत्र क्रमशः जवाहर बाल भवन, भोपाल तथा चिल्ड्रन्स ड्रीमलैण्ड बाल भवन, राजकोट में आयोजित किये गए। केन्द्रीय क्षेत्र के शिविर में 11 टीमों ने भाग लिया जबकि पश्चिमी क्षेत्र में 15 टीमों ने भाग लिया।

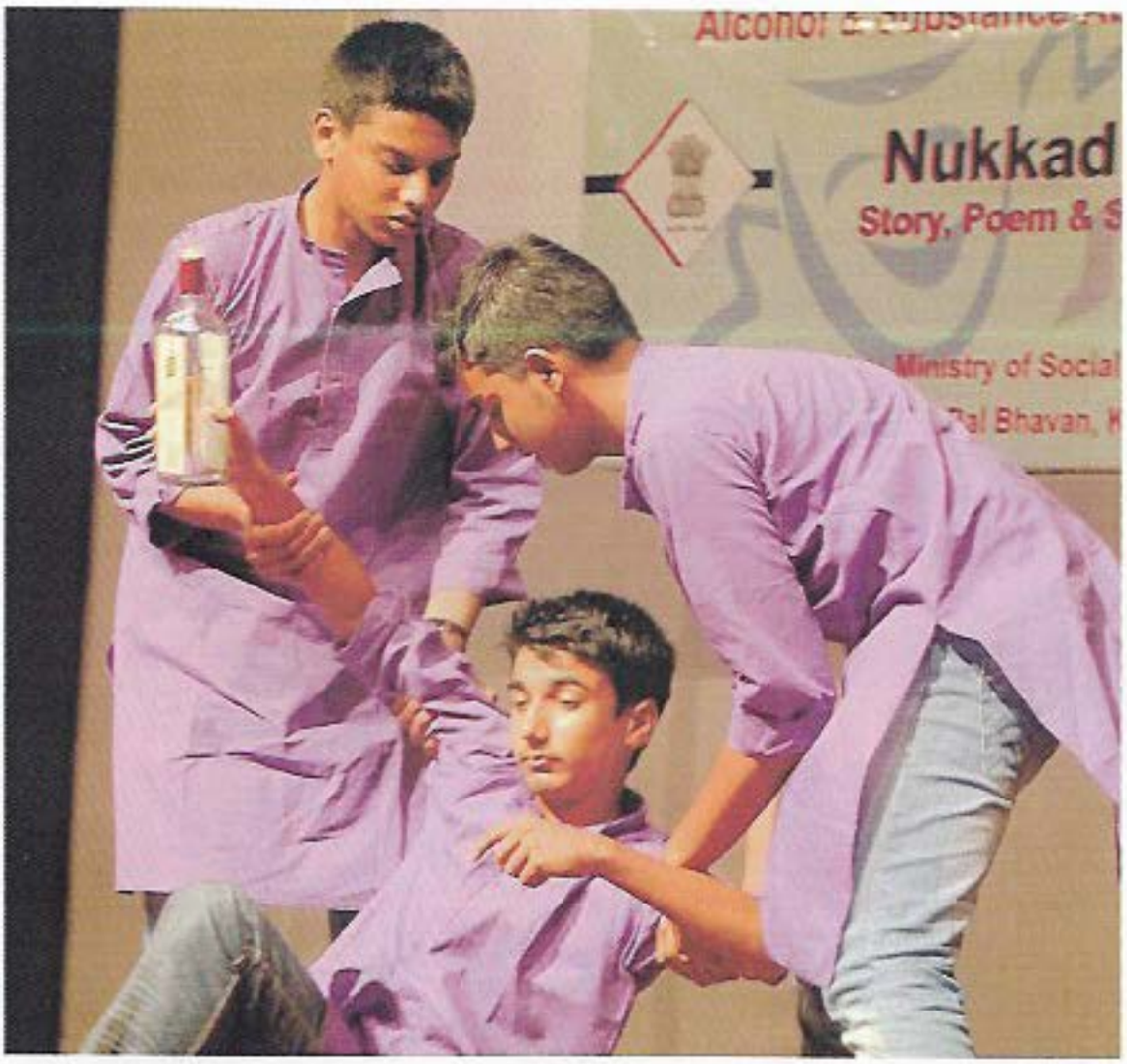

नशीली दवाओं के सेवन तथा अवैध तस्करी के विरूद्ध जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करते बच्चे

19–20 अक्तूबर, 2011

दक्षिण क्षेत्र–I तथा दक्षिण क्षेत्र –II का संयुक्त क्षेत्रीय शिविर श्री सत्य साई बाल भवन तिरूअनंतपुरम् में 19–29 अक्तूबर, 2011 को आयोजित किया गया। कुछ स्थानीय कारणो तथा आरक्षण की अनुपलब्धता की वजह से केवल चार टीमें इस शिविर में भाग ले पाईं।

21–22 अक्तूबर, 2011

उत्तर क्षेत्र का शिविर पठानिया बाल भवन, रोहतक में 21 व 22 अक्तूबर, 2011 को आयोजित किया गया। इस शिविर में उत्तरी क्षेत्र के विभिन्न बाल भवनों की 5 टीमों ने भाग लिया।

चाचा नेहरू और बड़ा मज़ा (राष्ट्रीय बाल सभा)

14 नवम्बर से 20 नवम्बर, 2011

रिपक मैके, चाइल्ड रिलीफ एण्ड यू (CRY) तथा एन.आई.डी., अहमदाबाद के साथ मिलकर एक कार्यक्रम 14 से 20 नवम्बर, 2011 के दौरान आयोजित किया गया। इस वर्ष की राष्ट्रीय बाल सभा का केन्द्रीय विषय था – 'चाचा नेहरू और बड़ा मज़ा'। देश भर के 76 संबद्ध बाल भवनों से लगभग 457 बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। 52 बाल भवन केन्द्रों तथा जवाहर बाल भवन, मण्डी के बच्चों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।

14 नवम्बर, 2011 को इस बाल सभा का उद्घाटन माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल द्वारा पं. जवाहर लाल नेहरू के 122वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 122 गुब्बारों को हवा में उड़ाकर "हम बच्चे मतवाले हैं" गीत की धुन के बीच किया गया। माननीय मंत्री महोदय ने पं. नेहरू के 122वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक डोर में बंधी 122 पतंगों को भी उड़ाया।

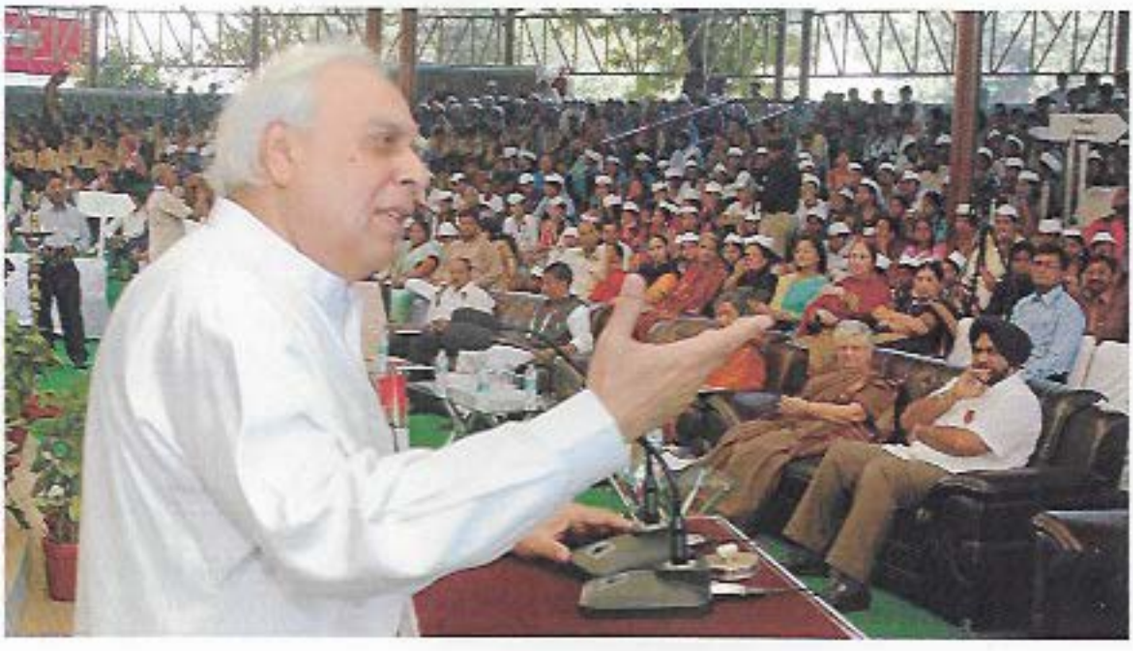

माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री बाल दिवस के अवसर पर बच्चों को सम्बोधित करते हुए

राष्ट्रीय बाल भवन के खुले रंगमंच में माननीय मंत्री महोदय ने सरस्वती वाचन के बीच पारंपरिक दीप जलाकर बाल उत्सव के प्रारंभ की घोषणा की। माननीय मंत्री महोदय ने बाल दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय बाल भवन तथा विभिन्न सम्बद्ध बाल भवनों के बच्चों द्वारा शानदार कार्यक्रम के बधाई दी। छोटी–छोटी बातों पर उत्साह दिखाते हुए तथा एक उत्सुक बालक की भांति व्यवहार करते हुए उन्होंने भारत के बच्चों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि जब भी बाल भवन आते हैं, तो सारे प्रशासनिक दबाव भूल जाते हैं।

राष्ट्रीय बाल भवन के बच्चे देशभक्ति पर नृत्य प्रस्तुत करते हुए

मंत्री महोदय ने साथ में यह भी कहकर राष्ट्रीय बाल भवन के स्टाफ –सदस्यों का उत्साहवर्धन किया कि राष्ट्रीय बाल भवन और इसकी शाखाओं में बच्चे वास्तविक शिक्षा प्राप्त करते हैं जो कि केवल सैद्धांतिक तथा पुस्तक आधारित बातें नहीं हैं बल्कि क्रियाकलाप आधारित ज्ञान है। वास्तविक शिक्षा प्रकृति से सीख कर प्राप्त की जाती है। हम अपने राष्ट्र को एक सुंदर राष्ट्र बना सकते हैं। एक–दूसरे से सीखना महत्वपूर्ण है। 21वीं सदी में सभी अभिभावक अपने बच्चों को अकादमिक रूप से उत्कृष्ट देखना चाहेंगे किंतु यह बच्चों को स्वयं तय करना होगा कि वे अपने देश और समाज के लिए क्या कर सकते हैं।

हमें उन बच्चों को यहाँ लाना चाहिए जिनके पास वो सुविधाएं नहीं हैं, जो हमें प्राप्त हैं तथा जो प्रकृति के साथ सामंजस्य में रहते हैं। हमें उनसे भी सीखना चाहिए। दूसरों के कष्टों को जानने के लिए हमें उनके स्थान पर तथा उन परिस्थितियों में अपने को रखकर देखना चाहिए, तभी समाधान प्राप्त किये जा सकते हैं। उन्होंने उपस्थित जनों से यह भी कहा कि वे अधिक से अधिक बच्चों के हित के लिए भारत के हर कोने में बाल भवन देखना चाहते हैं। उन्होंने बच्चों से अधिक से अधिक पेड़ लगाने तथा पर्यावरण का संरक्षण करने का भी आह्वान किया।

राष्ट्रीय बाल भवन चाचा नेहरू की संकल्पना का साकार रूप था। माननीय मंत्री महोदय ने नेहरू जी के 122वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय बाल भवन और बच्चों को बधाई दी।

माननीय मंत्री बच्चों के साथ जिन्होंने सदन प्रकरण पर अभिनय किया

राष्ट्रीय बाल भवन, बाल भवन केन्द्रों तथा जवाहर बाल भवन, मांण्डी के 80 बच्चों एवं सबद्ध बाल भवनों व बाल केन्द्रों के प्रतिनिधियों ने मिलकर 'चाचा नेहरू अपने हाथ फूल उमंग के बीज उगाए' गीत गाया। बच्चों द्वारा केंद्रीय विषय आधारित शास्त्रीय नृत्य भी प्रस्तुत किये गए। श्रीमती अंशु वैश, सचिव, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, डॉ. अमरजीत सिंह, संयुक्त सचिव, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग तथा श्रीमती गीता धर्मराजन, अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन तथा मंत्रालय के कई वरिष्ठ अधिकारी एवं गणमान्य अतिथि भी इस अवसर पर मौजूद थे। अतिथियों ने राष्ट्रीय बाल भवन के मुख्य मैदान में रचनात्मक मेले को भी देखा। इस रचनात्मक मेले में बाल भवन की विभिन्न गतिविधियां प्रदर्शित की गई थीं। बच्चों के लिए 122 विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गई। 'बापू और इन्दु को जोड़ने वाले पत्र' विषयक एक विशेष प्रदर्शनी भी तीन मूर्ति फाउन्डेशन के सहयोग से राष्ट्रीय बाल भवन के संग्रहालय में आयोजित की गई।

राष्ट्रीय बाल भवन में बाल दिवस पर बच्चों के मुस्कराते चेहरे

इस सबके अलावा बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों तथा कार्यशालाओं, जैसे कि नृत्य, मेहन्दी, लोक नृत्य, जिल्दसाज़ी, मास्क मेकिंग, काष्ठ कार्य, कोलाज मेकिंग, क्ले मॉडलिंग, सृजनात्मक लेखन, पोस्टर मेकिंग, शतरंज, कठपुतली तथा विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया जो कि चाचा नेहरू की 122वीं जयंती के अवसर पर 122 गतिविधियां आयोजित की गई थीं। बच्चों ने श्री आसिफ मियां तथा श्रीमती वीणा देवी से क्रमशः पतंग बनाना तथा पेपरमैशी को सीखा। श्री राजकुमार, कलाकार ने बच्चों को क्ले–मॉडलिंग की कला सिखाई।

महात्मा गांधी समिति द्वारा अहिंसा, शांति और एकीकरण के प्रतीक चरखे को प्रदर्शित किया गया। सदस्य बच्चो ने चरखे पर सूत कातकर आनंद उठाया। बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का प्रसार करने के लिए दिल्ली सरकार द्वारा निःशुल्क पौधों का वितरण किया गया। CRY द्वारा आयोजित उडी साँप और सीढ़ी गेम तथा सैन्ड आर्ट गतिविधि का बच्चों ने भरपूर आनन्द उठाया। बच्चों ने कार्यशालाओं तथा अन्य सृजनात्मक गतिविधियों जैसे प्रश्न मंच, मुहावरों की अन्त्याक्षरी, नेहरू जी के जीवन के विभिन्न आयामों पर डायरी लिखने आदि में भाग लिया तथा भारत एक खोज के विभिन्न एपीसोड भी देखे। पूरे कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने फूड कोर्ट, जैसे कि विशेष रूप से इसी उद्देश्य से बनाया गया था, में स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाया।

श्री रितेश और रजनीश मिश्रा, शास्त्रीय गायक बच्चों के लिए गायन करते हुए

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों तथा बच्चों ने स्पिक मैके द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा प्रदर्शन, जैसे कि सितार वादक, पद्म विभूषण पं. देबू चौधरी, इलियाना सिरारिसटी द्वारा ओडिसी नृत्य, सुश्री रानी खानम द्वारा कथक नृत्य तथा श्री रितेश, श्री रजनीश मिश्रा, जो कि प्रसिद्ध गायक राजन व साजन मिश्रा के पुत्र हैं, का गायन तथा टी.आई.पी.ए. के कलाकारों द्वारा संगीत व नृत्य के प्रदर्शनों का आनन्द उठाया।

बच्चों को इन प्रतिष्ठित कलाकारों से बातचीत करने का भी अवसर मिला। अर्पण ट्रस्ट के बच्चों द्वारा प्रस्तुत, सुषमा सेठ द्वारा निर्देशित 'ताशेर देश' नामक नाटक के प्रस्तुतिकरण ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह नाटक गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती को समर्पित था। सौर

कुकर गतिविधि, रोबोटिक्स कार्यशाला तथा एनआईडी, अहमदाबाद द्वारा आयोजित विशेष एनीमेशन कार्यशाला ने बच्चो को मंत्रमुग्ध कर दिया। बच्चों ने अंतरराष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव का भी आनन्द उठाया, जो कि एनआईडी, अहमदाबाद के सहयोग से आयोजित किया गया था। बच्चों ने 'चाचा नेहरू और बड़ा मज़ा' कार्यक्रम के दौरान नाटक, नृत्य, संगीत, कठपुली, कला तथा शिल्प व सृजनात्मक लेखन की कार्यशालाओं में भाग लिया तथा राष्ट्रीय बाल भवन की पूर्व निदेशक डॉ. मधु पंत की उपस्थिति में 18 नवम्बर, 2011 को कई कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

"तशेर देश" – बच्चे रविन्द्र नाथ टैगोर का नाटक मंचन करते हुए

'चाचा नेहरू और बड़ा मज़ा' कार्यक्रम के औपचारिक समापन की पूर्व संध्या पर 19 नवम्बर, 2011 को, बच्चों का उत्साहवर्धन करने के लिए दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित उपस्थित थीं। चूंकि ये बाल भवन की प्रथम अध्यक्ष श्रीमती इन्दिरा गांधी की भी जयंती थी, माननीय मुख्यमंत्री ने सबसे पहले श्रीमती इंदिरा गांधी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। राष्ट्रीय बाल भवन की अध्यक्ष द्वारा भी पुष्पांजलि अर्पित की गई।

इसके पश्चात् उन्होंने बच्चों को संबोधित किया और उन्हें श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा दिखाये गए मार्ग पर चलने को कहा। उन्होंने अपने बचपन के अनुभव भी बांटे। बच्चों ने उनसे कुछ प्रश्न भी पूछे जिनके उन्होंने उत्साहपूर्वक उत्तर दिये। बच्चे उनके उत्तरो से अपने को एकाग्रचित्त कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते चलने के उनके मार्गदर्शन से गहराई तक प्रभावित हुए।

श्रीमती शीला दीक्षित, मुख्यमंत्री, दिल्ली 'चाचा नेहरू और बड़ा मज़ा कार्यक्रम' में बच्चों के साथ। साथ में अध्यक्षा, राष्ट्रीय बाल भवन।

राष्ट्रीय बाल सभा का समारोह 20 नवम्बर को राष्ट्रीय बाल भवन के खुले रंगमंच में आयोजित किया गया। इसका प्रारंभ फोटोग्राफिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ हुआ। फोटो प्रतियोगिता के विजेताओं को श्रीमती गीता धर्मराजन, अध्यक्ष तथा श्री ब्रजेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा सम्मानित किया गया।

इसके पश्चात् बच्चों को सहभागिता प्रमाणपत्र वितरित किये गए तथा नेहरू जी से संबंधित पुस्तकें प्रदान कर गईं। राष्ट्रीय बाल भवन की अध्यक्ष व राष्ट्रीय बाल भवन के उपाध्यक्ष ने इस अवसर पर बच्चों को सम्बोधित किया और आशीर्वाद दिया।

अंतरराष्ट्रीय बाल कला व संस्कृति महोत्सव, 2011

कुआलालाम्पुर, मलेशिया
6–12 दिसम्बर, 2012

प्रारंभिक अंतरराष्ट्रीय बाल कला व संस्कृति महोत्सव, 2011 दिनॉक 6–12 दिसम्बर, 2011 तक कुआलालाम्बपुर, मलेशिया में आयोजित किया गया। इस महोत्सव का उद्देश्य संगीत, कोशल तथा नृत्य के क्षेत्रों में बच्चों की कलात्मक प्रतिभा को दिखाना था। यह महोत्सव मलेशिया के प्रधानमंत्री की पत्नी और **प्रेमाता** की संरक्षक, मलेशिया की प्रथम महिला यागम दातिन पदुका सेरी रोसमाह मानसार की संकल्पना का साकार रूप था। इस महोत्सव के संयोजक व सह–संयोजक प्रेमाता नंगारा, मलेशिया का प्रधानमंत्री कार्यालय, मलेशिया का राष्ट्रीय संस्कृति व कला विभाग, इस्ताना बुराया तथा मलेशिया का सूचना, संचार व संस्कृति मंत्रालय था।

इस महोत्सव में मलेशिया सहित निम्नलिखित नौ (9) देशों ने भाग लिय :–

1. मलेशिया
2. पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना
3. भारत
4. जापान
5. रिपब्लिक ऑफ कोरिया
6. फिलीपीन्स
7. कतार
8. सिंगापुर
9. श्रीलंका

भारत से निम्नलिखित प्रतिनिधिमंडल ने इस महोत्सव में भाग लिया :

1.	श्री अरूण कुमार	प्रतिनिधिमंडल के अध्यक्ष	(मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रतिनियुक्त)
2.	श्री राजेन्द्र कुमार वधवा	प्रतिनिधिमंडल के सदस्य	(प्रभारी अधिकारी, राष्ट्रीय बाल भवन)
3.	श्रीमती परमिन्दर बसु	प्रतिनिधिमंडल की सदस्य	(कार्यक्रम संयोजक, राष्ट्रीय बाल भवन)
4.	श्री चन्द्रमणि	प्रतिनिधिमंडल के सदस्य	(कोरियोग्राफर)
5.	मास्टर एडविन चर्चिल थंगराज	विद्यार्थी (गीतकार)	(बाल श्री विजेता, सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण, 2008)
6.	मास्टर सिद्धार्थ कुमार	विद्यार्थी (संगीतकार)	(बाल श्री विजेता, सृजनात्मक प्रदर्शन कला, 2008)
7.	सुश्री कंजिका पाण्डे	विद्यार्थी(संगीतकार, नर्तकी)	(बाल श्री विजेता, सृजनात्मक लेखन,2008)
8.	सुश्री वी. मानसी मेहर	विद्यार्थी (नर्तकी)	(बाल श्री विजेता, सृजनात्मक कला, 2009)
9.	मास्टर सिद्धार्थ नागराजन	विद्यार्थी (संगीतकार)	(बाल श्री विजेता, सृजनात्मक प्रद प्रदर्शन कला, 2009)
10.	मास्टर अरिंदम सोम	विद्यार्थी (संगीतकार)	(बाल श्री विजेता, सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण, 2009)
11.	सुश्री नेहा जगदीश	विद्यार्थी(नर्तकी)	(बाल श्री विजेता, सृजनात्मक प्रदर्शन कला, भाई मिस्त्री 2010)
12.	मास्टर चन्द्रमौलि कंदाचार	विद्यार्थी (नर्तक,गीतकार)	(बाल श्री विजेता, सृजनात्मक प्रदर्शन कला, 2010)
13.	सुश्री रश्मि रविशंकर	विद्यार्थी (नर्तकी,गीतकार)	(बाल श्री विजेता, सृजनात्मक प्रदर्शन कला 2010)
14.	सुश्री शिवांगी चतुर्वेदी	विद्यार्थी (नर्तकी)	बाल श्री प्रतिभागी, 2008
15.	सुश्री पूजा, सी.एस.	विद्यार्थी (नर्तकी)	बाल श्री प्रतिभागी, 2008
16.	सुश्री ईशा विदेही	विद्यार्थी (नर्तकी)	बाल श्री प्रतिभागी, 2010
17.	मास्टर देवांश कलोनी	विद्यार्थी (गीतकार)	बाल श्री प्रतिभागी, 2010

18.	सुश्री बितानुका देव	विद्यार्थी (नर्तकी)	बाल श्री प्रतिभागी, 2010
19.	श्री जाकिर खान लंगा	पारंपरिक कलाकार	राष्ट्रीय बाल भवन
20.	मास्टर विनय कुमार	विद्यार्थी (गीतकार)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
21.	मास्टर सौमित्र भट्टाचार्या	विद्यार्थी (गीतकार)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
22.	मास्टर प्रान्शु कुकरेती	विद्यार्थी (गीतकार)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
23.	सुश्री दिया दत्त	विद्यार्थी (नर्तकी)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
24.	सुश्री रिया सिंह	विद्यार्थी (नर्तकी)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
25.	सुश्री मानसी	विद्यार्थी (नर्तकी)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
26.	सुश्री स्वाति	विद्यार्थी (नर्तकी)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
27.	सुश्री रजनी	विद्यार्थी (नर्तकी)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
28.	सुश्री रितु	विद्यार्थी (नर्तकी)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
29.	सुश्री दिशा	विद्यार्थी (नर्तकी)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
30.	सुश्री रिया संधू	विद्यार्थी (नर्तकी)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
31.	सुश्री लिखिता	विद्यार्थी (गीतकार,नर्तकी)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
32.	सुश्री श्रेष्ठा	विद्यार्थी (नर्तकी)	सदस्य बालक, राष्ट्रीय बाल भवन
33.	सुश्री पल्लवी	विद्यार्थी (गीतकार)	सदस्य, जवाहर बाल भवन, मांडी
34.	सुश्री रूखसाना	विद्यार्थी (गीतकार)	सदस्य बालक, बाल भवन केन्द्र,ओखला

6 दिसम्बर, 2011 को एच.ओ.डी. बैठक के साथ सान्वय पुत्र होटल, कुआलालाम्पुर में स्वागत भोज किया गया। विभिन्न देशों के टीम प्रमुख (ग्रुप लीडर) को सम्मानित किया गया। श्री अरूण कुमार, भारत के दल के प्रमुख को सम्मानित किया गया। अगले दिन 7 दिसम्बर, 2011 को पैन्गुंग सारी, इस्ताना बुदाया में ग्रुप ब्रीफिंग आयोजित की गई, जिसके बाद फिलीपीन्स, श्रीलंका, जापान, भारत, कोरिया तथा कतार के दलों के वैले स्टूडियो में इस्तान बुदाया में प्रदर्शन का अभ्यास किया। सिंगापुर ने रियर वैगन, इस्ताना बुदाया ने रियर वैगन, इस्तान बुदाया में तथा पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना ने सेरी सियन्तन, इस्तान बुदाया में प्रदर्शन का अभ्यास किया

शाम को पैन्गुंग सारी, इस्तान बुदाया में सभी देशों ने **गाला नाइट अभ्यास** किया।

8 दिसम्बर, 2011 को नाश्ते के पश्चात् गाला नाइट प्रदर्शन का अभ्यास सभी देशों ने प्रातः 9:00 बजे पैन्गुन्गा सारी, इस्तान बुदाया में प्रारंभ किया जिसके बाद मलेशिया (प्रेमाता सेनी म्यूजिक), पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना, फिलीपीन्स (बाओ बाल गायन दल) तथा श्रीलंका के कन्ट्री नाइट प्रदर्शन का अभ्यास हुआ।

शाम को प्रेमाता सेनी गायन दल, प्रेमाता सेनी तारी, सिंगापुर, फिलीपीन्स (सन्टीन्लूपा साइन्स हाई स्कूल सेन्डाला) जापान, भारत, कोरिया तथा कतार ने प्रदर्शन का अभ्यास किया। रात्रि भोज के पश्चात् मलेशिया (प्रेमाता सेनी म्यूजिक, पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना, फिलीपीन्स (बाओ बाल गायन दल) तथा श्रीलंका के कन्ड्री नाइट प्रदर्शन का अभ्यास हुआ।

मलेशिया में महोत्सव में बच्चे अभिनय करते हुए

अगले दिन 9 दिसम्बर, 2011 को सभी देशों ने पैन्गुन्गा सारी, इस्तानबुदाया के गाला नाइट प्रदर्शन का अभ्यास प्रारंभ किया। रात्रि भोज के पश्चात् सभी देशों का गाना नाइट प्रदर्शन कैंगुग सारी इस्तान बुदाया में हुआ।

10 दिसम्बर, 2011 को प्रातःकाल में प्लेनरी हॉल, कुआलालामपुर, कन्वेशन सेंटर (के.एल.सी. सी.) में सभी देशों का एक्सपो प्रेमाता नेगारा का उद्घाटन समारोह हुआ। इसके पश्चात् पैंगुंग सारी, इस्तान बुदाया में दोपहर में मलेशिया (प्रमाता सेनी कॉयर), सिंगापुर, जापान, भारत के कन्ट्री नाइट प्रदर्शन के अभ्यारा हुए। शाम को पैंगुंग सारी में प्रेमाता, सेनी कॉयर, सिंगापुर, जापान, भारत कन्ट्री नाइट प्रदर्शन हुए।

अगले दिन 11 दिसम्बर, 2011 को नाश्ते के पश्चात् कॉम्प्लैक्स क्राफ्ट तथा केसल टॉवर में जापान तथा भारत का टूर हुआ तथा इसके बाद प्रेगाता रोनी तारी, कोरिया, फिलीपीन्स (मुन्टीपुला साइन्स हाई स्कूल रोन्डाला) द्वारा कन्ट्री नाइट प्रदर्शन का अभ्यास किया गया। इसके पश्चात् शाम को इन्होंने कन्ट्री नाइट प्रदर्शन प्रस्तुत किये।

अंतिम दिन 12 दिसम्बर, 2011 को कॅम्प्लेक्स क्राफ्ट तथा के.एल. टॉवर में मलेशिया, पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना, कोरिया, फिलीपीन्स, कतार तथा श्रीलंका को टूर–2 आयोजित किया गया। इसके पश्चात् के.एल.आई.ए. में प्रदर्शन के लिए प्रतिभागियों का प्रस्थान प्रारंभ हुआ।

6 दिसम्बर, 2011 को सभी देशों के लिए आयोजित स्वागत भोज में या भग दातो 'नोरलिज़ा रोफली', महानिदेशक, नेशनल डिपार्टमेन्ट फॉर कल्चर एण्ड आर्ट्स तथा या भग दतुक सिटी अज़िज़ाह शेख अबोद, अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय बाल कला महोत्सव तथा प्रेमाता एक्स्पो ने अतिथियों का स्वागत किया, जिसके बाद या भग द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। दातुक सीटी अज़ियाह शेख़ के बाद स्वागत रात्रि भोज हुआ और उस देश का प्रदर्शन हुआ, जहां आयोजन हो रहा था तथा प्रतिनिधि मंडलों को परिचय हुआ। अंत में प्रतिनिधि मंडलों के प्रमुखों की बैठक हुई।

सभी 9 देशो के बच्चों द्वारा वहीं तत्काल तैयार किया गया एक विशेष गीत व नृत्य 'जोगेट मलेशिया एण्ड वन मलेशिया' मुख्य आकर्षण रहा। दैनिक कार्यक्रमों के अंत में गीत तथा नृत्य का

यह कार्यक्रम 'जोगेट मलेशिया एण्ड वन मलेशिया' प्रस्तुत किया गया, जिसमें सभी बच्चे अपने देश के राष्ट्रीय ध्वज थामे हुए थे और पारंपरिक वेशभूषा में 'विश्व की एकता और शांति' को प्रदर्शित कर रहे थे।

अंतरराष्ट्रीय बाल कला व संस्कृति महोत्सव, 2011 में भारत के प्रदर्शन के विषय में

7 मिनट तक गाला प्रदर्शन :– इसमें वादन, नृत्य, गायन को एक साथ प्रस्तुत किया गया। इसमें विभिन्न वाद्य जैसे कि सिन्थेसाइज़र, ड्रम्स, मोहनवीणा सम्मिलित थे। नृत्य में कथक, भरतनाट्यम तथा लोकनृत्य भारत की केंद्रीय विषय को रेखांकित करते हुए एक साथ प्रस्तुत किया गया। गायक बच्चों ने हिन्दुस्तानी गायन प्रस्तुत किया। इरा फ्यूज़ ने उपयुक्त रूप से सामंजस्य, लय और भावनाओं का सम्मिश्रण प्रदर्शित किया।

20 मिनट तक कन्ट्री प्रदर्शन :– यह 'टिग–टिग नील गगन के तारे' गीत के साथ प्रारंभ हुआ, जिसके पश्चात् किसी कार्यक्रम को वंदना से प्रारंभ करने की परंपरा का निर्वाह करते हुए 'गणेश वंदना' को प्रस्तुत किया गया। दो गीत – विश्व शांति पर 'शांति गीत' तथा ग्रामीण जीवन व आधुनिकता के सम्मिश्रण को दर्शाने वाले राजस्थानी लोक गीत 'चला चला रे' प्रस्तुत किया गया। अंत में कथक व भरतनाट्यम नृत्यों की जुगलबन्दी के साथ देशभक्ति गीत वन्द मातरम् प्रस्तुत किया गया।

प्रत्येक प्रदर्शन पर आयोजक देश की ओर से प्रशंसा व सम्मान प्राप्त हुआ।

क्षेत्र स्तरीय बाल श्री शिविर

12 दिसम्बर, 2011 – 3 फरवरी, 2012

क्षेत्र स्तरीय बाल श्री शिविर, जो कि बाल श्री त्रिस्तरीय चयन प्रक्रिया का दूसरा चरण है, का प्रारंभ पटना में पूर्वी क्षेत्र के साथ हुआ। सृजनात्मकता की जाँच के लिए टूल्स राष्ट्रीय बाल भवन के निर्णायक मंडल के सदस्यों द्वारा बनाये गए।

इस वर्ष क्षेत्र स्तरीय शिविर पटना, वडोदरा, भोपाल, रोहतक तथा दिल्ली में आयोजित किये गए। भारत के विभिन्न राज्यों से 456 बच्चों ने इन शिविरों में भाग लिया। जिन राज्यों में कोई बाल भवन नहीं है, वहाँ के बच्चों ने पूर्वी क्षेत्र के शिविर में भाग लिया। उन्हें मुख्य सचिव के माध्यम से भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था।

प्रत्येक क्षेत्रीय स्तर के शिविर के प्रारंभ से एक दिन पूर्व राष्ट्रीय बाल भवन के निर्णायक मंडल के सदस्यों ने बाह्य विशेषज्ञों के साथ एक बैठक की, जिसमें उन्हें चयन प्रक्रिया तथा योजना के अन्य नियमों से परिचित कराया गया। तनाव मुक्ति के सत्रों के अंतर्गत विभिन्न तनाव–मुक्ति कराने वाले खेल खिलाये गए।

केंद्रीय क्षेत्र का क्षेत्र स्तरीय बाल श्री चयन शिविर 12–15 दिसम्बर, 2011 तक जवाहर बाल भवन, भोपाल में आयोजित किया गया। सृजनात्मकता के चार विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत 80 बच्चों ने

भाग लिया। 19 बच्चों ने सृजनात्मक लेखन में तथा 20 बच्चों ने सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण विषय क्षेत्र में भाग लिया।

उत्तरी क्षेत्र का क्षेत्रीय स्तर का बाल श्री चयन शिविर 26 –31 दिसम्बर, 2011 तक पठानिया बाल भवन, रोहतक(हरियाणा) में आयोजित किया गया। चार विभिन्न विषय क्षेत्रो में 42 बच्चों ने भाग लिया। 12 बच्चों ने सृजनात्मक प्रदर्शन कला, 11 बच्चों ने सृजनात्मक कला, 11 बच्चों ने सृजनात्मक लेखन तथा 8 बच्चों ने सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण विषय क्षेत्र के अंतर्गत भाग लिया।

पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्र स्तरीय बाल श्री चयन शिविर 2–5 जनवरी, 2012 तक बाल भवन, वडोदरा में आयोजित किया गया। इस शिविर में 108 बच्चों ने भाग लिया। 28 बच्चों ने सृजनात्मक प्रदर्शन कला में, 31 बच्चों ने सृजनात्मक कला में, 24 बच्चों ने सृजनात्मक लेखन में तथा 24 बच्चों ने सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण विषय क्षेत्र में अंतर्गत भाग लिया।

पूर्वी क्षेत्र का शिविर 15–18 जनवरी, 2012 तक बिहार बाल भवन, पटना (बिहार) में आयोजित किया गया। इस शिविर में 43 सृजनशील बच्चों ने भाग लिया। सृजनात्मक प्रदर्शन कला में 11 बच्चों ने, सृजनात्मक कला में 12 बच्चों ने, सृजनात्मक लेखन में 10 बच्चों ने तथा सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण विषय क्षेत्र में 10 बच्चों ने भाग लिया।

दक्षिणी क्षेत्र–। तथा दक्षिणी क्षेत्र–।। के बाल श्री चयन शिविर एक साथ 2–3 फरवरी को आयोजित किये गए, जिनमें विभिन्न विषय क्षेत्रो में क्रमशः 89 तथा 94 बच्चों ने भाग लिया। दक्षिणी क्षेत्र–। में 22 बच्चों ने सृजनात्मक प्रदर्शन कला में, 26 बच्चों ने सृजनात्मक कला में, 20 बच्चों ने सृजनात्मक लेखन में तथा 21 बच्चों ने सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण विषय क्षेत्र के अंतर्गत भाग लिया। दक्षिण क्षेत्र –।। में 25 बच्चों ने सृजनात्मक प्रदर्शन कला में, 25 बच्चों ने सृजनात्मक कला, 20 बच्चों ने सृजनात्मक लेखन में तथा 23 बच्चों ने सृजनात्मक वैज्ञानिक नवीकरण विषय क्षेत्र के अंतर्गत भाग लिया।

प्रत्येक क्षेत्रीय स्तर का शिविर दो दिन तक चला, जिसमें बच्चों के उनके विषय क्षेत्र के अनुरूप उनकी सृजनात्मक क्षमता के अंकन के लिए अलग–अलग गतिविधियां करने को दी गईं।

क्रिसमस उत्सव

24 दिसम्बर, 2011

24 दिसम्बर, 2011 को राष्ट्रीय बाल भवन के एन.टी.आर.सी. हॉल में क्रिसमस उत्सव मनाया गया, जिसमें बाल भवन केन्द्र के 60 बच्चों ने, राष्ट्रीय बाल भवन के 30 सदस्य बच्चों ने, एनटीआरसी के 100 शिक्षकों ने तथा राष्ट्रीय बाल भवन के स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। श्री गया प्रसाद, निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन, श्री प्रबीर चौधुरी, उपनिदेशक(प्रशा0); श्रीमती आशा भट्टाचार्य, सहायक निदेशक (विज्ञान); डॉ. रश्मि शर्मा, संग्रहालयाध्यक्ष तथा कार्यक्रम संयोजक इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

क्रिसमस की सजावट जैसे कि क्रिसमस ट्री, क्रिसमस हट, टायोरैमाय, स्टार्स, रिबन तथा लाइट्स को प्रदर्शित किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत कैरल्स के, गीत, कविताओं आदि के

गायन के साथ हुई। बाल भवन केन्द्र, शकरपुर के बच्चों ने 'टिम –टिम नील गगन के तारे' गीत गाया। कुछ बच्चों ने ईशु के जन्म की कथा तथा उनके उपदेशों को सुनाया।

श्री गया प्रसाद ने विभिन्न त्योहारों, विशेष रूप से क्रिसमस जैसे त्योहारों के महत्व के विषय में बतलाया तथा बच्चों को सशक्त और सृजनात्मक बनाने के लिए प्रेरित किया। श्री राजू टंडन, राष्ट्रीय बाल भवन के स्टाफ सदस्य ने सैंटा क्लॉज की वेशभूषा धारण कर अपने जादू के पिटारे से बच्चों में चॉकलेट और उपहार बाँटे। बच्चे सैंटा क्लॉज़ से उपहार प्राप्त कर बहुत प्रसन्न हुए।

अंत में सभी ने पारंपरिक खाद्य पदार्थ जैसे कि केक, वैफर्स, पैटीज़ आदि का आनंद उठायां

फन डे सेलिब्रेशन

17 जनवरी, 2012

राष्ट्रीय बाल भवन समाज कल्याण के साथ–साथ मनोरंजक गतिविधियों को भी आयोजित करता रहता है। इसी श्रृंखला में राष्ट्रीय बाल भवन ने कैंसर पीड़ित बच्चों के लिए दि फन डे को आयोजित किया।

यह कार्यक्रम 17 जनवरी, 2012 को कैंसर पेशेन्ट्स एण्ड एसोसिएशन के सहयोग से आयोजित किया गया।

फन डे एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसे प्रतिवर्ष सर्दियों में आयोजित किया जाता है जब कैंसर पीड़ितों को एक दिन अपनी सारी परेशानियां भुलाने के लिए सूर्य की रोशनी में बाहर ले जाया जाता है।

कैंसर से पीड़ित बच्चे बाल भवन की गतिविधियों में भाग लेते हुए

इस कार्यक्रम में लगभग 50 बच्चे थे। इस अवसर पर एक लघु मेले का भी आयोजन किया गया था, जिसका बच्चो ने काफी लुत्फ उठाया। प्रत्येक बच्चों को राष्ट्रीय बाल भवन के उपाध्यक्ष श्री ब्रजेश प्रसाद द्वारा एक गुलाब की कली भेंट कर स्वागत किया गया। बच्चों ने राष्ट्रीय बाल द्वारा आयोजित विभिन्न सृजनात्मक कला व शिल्प की गतिविधियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने अपने शिक्षकों तथा राष्ट्रीय बाल भवन के अन्य सदस्य बच्चों के साथ छोटी रेलगाड़ी की सैर की। अंत में प्रत्येक बच्चे को उपहार दिये गए और भोजन कराया गया। इस दिन बच्चों को बहुत अच्छा लगा और राष्ट्रीय बाल भवन उनके चेहरों पर मुस्कान लाने मे सफल रहा। कुछ बच्चे कैंसर के अंतिम चरण में थे किंतु चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही, वे अपने दर्द को, ईलाज को और अस्पताल के वातावरण को भुला सके, जब उन्होंने राष्ट्रीय बाल भवन की विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया।

पिछले वर्षों में भी राष्ट्रीय बाल भवन सांस्कृतिक शिल्प ग्राम में उनके लिए ऐसी गतिविधियां आयोजित करता रहा है।

विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के लिए एन.एम.एन.एच. के साथ मिलकर राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा आयोजित कार्यक्रम

31 जनवरी, 2012 से 4 फरवरी, 2012

राष्ट्रीय बाल भवन विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करता है। इसी क्रम में राष्ट्रीय बाल भवन ने विशेष बच्चों के लिए 31 जनवरी, 2012 से 4 फरवरी, 2012 तक एक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसका समापन समारोह 8 फरवरी, 2012 को आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय (एन.एम.एन.एच.) के सहयोग से बाल भवन परिसर में आयोजित किया गया था। विशेष बच्चों के स्कूल, गैर सरकारी संगठनों तथा अन्य स्कूलों के बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। विभिन्न श्रेणी के बच्चों जैसे शारीरिक, मानसिक रूप से अशक्त, दृष्टि बाधित, श्रवण बाधित बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य विशेष ज़रूरत वाले बच्चों को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अपने पर्यावरण, परिवेश, प्रकृति तथा एनीमल, बर्ड क्ले मॅडलिंग, वेस्ट पेपर क्राफ्ट, नेचर पेंटिंग, नृत्य, काष्ठ कार्य आदि की गतिविधियों के माध्यम से वन्य जीवन से परिचित कराना था। विभिन्न गतिविधियां स्टाफ ने बड़ी सावधानीपूर्वक विशेष ज़रूरत वाले बच्चों को कराईं।

प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया, जिनके लिए उन्हें समापन समारोह में पुरस्कार प्रदान किये गए। सभी प्रतिभागियों को कार्यक्रम के दौरान प्रतीकात्मक उपहार प्रदान किये गए तथा अल्पाहार दिया गया। 36 स्कूलों के लगभग 300 छात्रों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

वेबसाइट रि–डिजाइनिंग

7 फरवरी, 2012

राष्ट्रीय बाल भवन के कार्यक्रम अनुभाग द्वारा 7 फरवरी, 2012 को मेखला झा ऑडिटोरियम में 7 एक वेबसाइट रि–डिज़ाइनिंग कार्यशाला को आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में निम्नलिखित स्कूलों के 32 बच्चों ने भाग लिया :–

1. केन्द्रीय विद्यालय, विकास पुरी
2. केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर–2, आर.के. पुरम्
3. डी.सी. आर्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल,
4. एगिटी इन्टरनेशनल स्कूल
5. बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतम पुरा
6. रॅयान इंटरनेशनल स्कूल, नोएडा
7. राजकीय कन्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, शाहदरा
8. रामजस कन्या सीनियर सेकेन्डरी स्कसूल
9. राजकीय सह–शिक्षा सेकेन्डरी स्कूल

10. रेयान इंटरनेशनल, मयूर विहार–।।।
11. मयूर पब्लिक स्कूल, आई.पी. एक्सटेंशन
12. पठानिया बाल भवन, रोहतक, हरियाणा
13. राष्ट्रीय बाल भवन, कोटला रोड,

निम्नलिखित बाल श्री विजेताओं ने भी इस कार्यशाला में भाग लिया

1.	सरिता द्विवेदी	इलाहाबाद से
2.	शंशाक अम्बारदाद	दिल्ली से
3.	अनिप्शा दास	दिल्ली से
4.	दर्शिल शास्त्री	वडोदरा से
5.	मोइश्चिल विस्वास	कोलकाता से
6.	आर्ची गोदी	भोपाल से
7.	हितेन्द्र श्रीवास्तव	ग्वालियर से

मुण्डा ग्रुप के दो सदस्यो प्राची तथा जोन्ना ग्रोवर ने इस कार्यशाला में बच्चों के साथ बातचीत की। सबसे पहले उन्होंने बच्चों से पूछा कि उन्हें राष्ट्रीय बाल भवन के बारे में पता कैसे चला? बच्चों ने अलग–अलग उत्तर दिये। इसके बाद उन्होंने पूछा कि बाल भवन के लिए कोई एक शब्द देना हो तो वे उसे एक शब्द में क्या कहेंगे। बच्चों ने काफी रोचक उत्तर दिये – स्वर्ग, बच्चों का भविष्य, दूसरा घर आदि। मानव संसाधन विकास मत्रालय की निदेशक सुश्री सुपर्णा एस. पचौरी, निदेशक तथा राष्ट्रीय बाल भवन के निदेशक श्री गया प्रसाद ने
भी बच्चों का मार्गदर्शक किया। बच्चों ने पृष्ठ–दर–पृष्ठ वेबसाइट को रि–डिज़ाइनिंग के सुझाव दिये। होम पेज के लिए उन्होंने सुझाव दिये कि इसमें शुंभकर होना चाहिए, ऑटोमैटिक स्लाइड शो पिक्चर, कलर कंस्ट्रास्ट,
स्किप बटन होने चाहिए तथा प्रवेश प्रक्रिया और सरल व छोटी होनी चहिए। उन्होंने यह भी सुझाव दिये कि वेबसाइट में अपलोडिंग की भी सुविधा होनी चाहिए, जिससे कि बच्चे अपनी गतिविधियों को अपलोड कर सकें।

सभी उपस्थित बच्चों के सुझावों के आधार पर नई वेबसाइट को डिज़ाइन किया गया।

अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम

1. मंगोल जाति–उलानवटार, गंगोलिया के बच्चों का कला उत्सव

देश भर से चयनित दस बच्चों और राष्ट्रीय बाल भवन से 2 सहचरों ने गंगोल जाति–उलानवटार, मंगोलिया के बच्चो के कला उत्सव में 2 से 12 जुलाई, 2011 तक भाग लिया। भारतीय प्रतिनिधिमंडल बच्चों ने देशभक्ति गीत और शास्त्रीय नृत्य का प्रदर्शन किया जिसकी अत्यंत सराहना हुई। भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने नदाम समारोह के दौरान राष्ट्रीय दिवस परेड में भी हिस्सा लिया। भारतीय टीम द्वारा प्रस्तुत गंगोलिया नृत्य की अत्यंत सराहना हुई।

2. अंतरराष्ट्रीय बच्चों का कला व सांस्कृतिक समारोह – कुआलांपुर मलेशिया

देश भर से चयनित तीस बच्चों सहित राष्ट्रीय बाल भवन, जवाहर बाल भवन, मंडी और बाल भवन केन्द्रों के सदस्य बच्चों व राष्ट्रीय बाल भवन के 3 सहचरों व मानव संसाधनविकास मंत्रालय के एक प्रतिनिधि ने प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख के रूप में 6 से 12 दिसम्बर, 2011 तक कुआलालंपूर मलेशिया में बच्चों ने अंतरराष्ट्रीय कला व सांस्कृतिक समारोह में हिस्सा लिया।

इस समारोह में नौ देशों नामतः मलेशिया, चीन, भारत, जापान, कोरिया, फिलिपिन, कतार, सिंगापुर व श्रीलंका ने भाग लिया। भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने 7 मिनट का कार्यक्रम और 20 मिनट का का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसकी भूरि–भूरि प्रशंसा हुई। सभी बच्चों द्वारा सामूहिक रूप से प्रस्तुत संगीतमय गीत और नृत्य "जोगेट मलेशिया" और "एक मलेशिया" प्रस्तुती ने 'विश्व एकता और शांति' का संदेश प्रवाहित किया।

राजभाषा कार्यान्वयन

राष्ट्रीय बाल भवन का हिन्दी अनुभाग कार्यालयीय कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए हिन्दी की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए राष्ट्रीय बाल भवन के अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील है। यह अनुभाग नवीन एवं योजनाबद्ध तरीके से कार्य कर रहा है।

वर्ष 2010–2011 के दौरान अनुभाग द्वारा किये जाने वाले कार्यों के अंतर्गत धारा 3(3) का पूरा अनुपालन किया गया। हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट, अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट मंत्रालय तथा गृह मंत्रलाय (राजभाषा विभाग) में यथा समय भेजी गई। वर्ष 2010–2011 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गई, जिनमें मंत्रालय, केन्द्रीय सचिवालय, हिंदी परिषद् तथा संस्था (बाल भवन) के अधिकारियों ने भाग लिया। बाद में बैठकों के कार्यवृत्त संबंधित विभागों के भेजे गए। इन बैठकों में आगामी तिमाही में आयोजित होने वाले संभावित कार्यक्रमों/प्रकाशनों पर भी चर्चा की गई। बाल भवन के प्रायः सभी प्रकाशन, निमंत्रण–पत्र, पोस्टर, प्रमाण–पत्र, हिंदी अथवा द्विभाषी रूप में प्रकाशित किये गये। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अधिकारियों–कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूक करने तथा कार्यालयीय कार्यों को सुनियोजित तरीके से कार्यान्वित करने के उद्देश्य से जाँच–बिन्दु बनाये गये, ताकि उनका अनुपालन करते हुए वे अपने–अपने अनुभागों में राजभाषा संबंधी कार्यों को भली–भाँति कर सकें। इस संबंध में अनुभागों को व्यक्तिशः(व्यक्ति विशेष के नाम से) आदेश भी जारी किए गए। इन सभी आदेशों का अनुभागों द्वारा पालन किया जा रहा है।

वार्षिक कार्यक्रमों के अनुसरण में 16 से 29 सितम्बर 2011 की 3 से 18 तारीख तक राष्ट्रीय बाल भवन में 'हिंदी पखवाड़ा' आयोजित किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रम/प्रतियोगिताओं के अंतर्गत –स्वरचित काव्य रचना एवं प्रस्तुतीकरण, पोस्टर व नारे बनाना, मुहावरों का प्रयोग, श्रुतलेखन, वक्तृत्व प्रतियोगिता का आयोजन किया गया व वर्ग 'घ' के कर्मचारियों के लिए मुहावरा व श्रुतलेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। हिंदी टंकण प्रतियोगिता कम्प्यूटर पर आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में हिंदी–अहिंदी भाषी तथा वर्ग 'घ' के कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और नकद पुरस्कार प्राप्त किये। हिंदी अनुभाग का निरन्तर प्रयास रहता है कि सभी कार्यक्रमों की प्रेस विज्ञप्ति तैयार करके समाचार–पत्रों में भेजी जाए। इसके अतिरिक्त वर्षपर्यंत बाल भवन में आयोजित कार्यक्रमों, साहित्यिक शिविरों तथा मौलिक लेखन गतिविधियों में भी इस अनुभाग का सहयोग रहा। कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में एक कर्मचारी को हिंदी प्रशिक्षण के लिए भेजा गया जिसने हिन्दी आशुलिपि में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

राष्ट्रीय बाल भवन के अनुदेशक बच्चों को हिंदी और अंग्रेजी में प्रशिक्षण देते हैं। राष्ट्रीय बाल भवन का पुस्तकालय और अन्य अनुभाग बच्चों को हिंदी भाषा के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने के लिए विशेष कार्यक्रम करते हैं जिनमें से एक है सृजनात्मक लेखन।

एन.टी.आर.सी. कार्यशालाओं की सूची

1. ग्रीष्मकालीन सृजनात्मक कला कार्यशाला
   18 मई से 21 जून, 2011

2. मिलेजुले प्रशिक्षण कार्यक्रम
   5 जुलाई से 6 अगस्त, 2011

3. मिलेजुले प्रशिक्षण कार्यक्रम
   16 अगस्त से 20 सितम्बर, 2011

4. मिलेजुले प्रशिक्षण कार्यक्रम
   27 सितम्बर से 9 नवम्बर, 2011

5. मिलेजुले प्रशिक्षण कार्यक्रम
   25 नवम्बर से 30 दिसम्बर, 2011

6. मिलेजुले प्रशिक्षण कार्यक्रम
   6 जनवरी से 10 फरवरी, 2012

7. मिलेजुले प्रशिक्षण कार्यक्रम
   21 फरवरी से 27 मार्च, 2011

म्यूज़ियम मे 01 अप्रैल 2011 से 31 मार्च 2012 तक लगाई गई प्रदर्शनियां

1. इंदु और बापू को जोड़ने वाले पत्र

2. बच्चों के प्रिय चाचा– आधुनिक भारत के संस्थापक

3. बच्चों की अभिव्यक्तियां

हमारे प्रकाशन

राष्ट्रीय बाल श्री सम्मान पत्रिका 2009 एवं 2010

कर्मचारी परिचय

1. श्री गया प्रसाद, निदेशक (अतिरिक्त प्रभार)
2. श्रीमती इन्द्राणी चौधुरी, उपनिदेशक (कार्यक्रम समन्वय एवं अनुसंधान)
3. श्री पी0 चौधुरी, उपनिदेशक(प्रशासन)
4. श्रीमती आशा भट्टाचारजी, सहायक निदेशक(विज्ञान)
5. डॉ0 रश्मि शर्मा, संग्रहालयाध्यक्ष (संग्रहालय)
6. श्री राजेन्द्र कुमार बधवा, प्रभारी अधिकारी (फोटोग्राफी)
7. श्री सत्य नारायण लाल कर्ण, प्रभारी अधिकारी(मिलेजुले कार्यकलाप)
8. श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, प्रभारी अधिकारी (बा.भ.केन्द्र)
9. श्री राजीव गुप्ता, सहायक लेखा अधिकारी
10. श्रीमती बसन्ती गरियाली, कार्यालय सहायक
11. श्री दिनेश कुमार, कार्यालय सहायक
12. श्रीमती नीलम सरीहन, कार्यालय सहायक
13. श्रीमती रेनू भल्ला, कार्यालय सहायक
14. श्रीमती पोन्नमा जोस, निदेशक की वैयक्तिक सहायक
15. श्री अश्वनी कुमार भट्ट, आयोजक(आविष्कारक क्लब में संयोजक)
16. श्री जगदीश कुमार कोली, प्रबंधक (प्रकाशन)
17. श्री एस.एन. शर्मा, सुरक्षा अधिकारी–सह–केयर टेकर
18. श्रीमती परमिन्दर चौधुरी, कार्यक्रम आयोजक.
19. श्री जय भगवान राणा, वरि. प्रशिक्षक (शारीरिक शिक्षा)
20. श्री ऋषभ अरोड़ा, वरि. प्रशिक्षक (कम्प्यूटर)
21. श्री आशीष भट्टाचारजी, वरि. प्रशिक्षक (फोटोग्राफी)
22. श्री मनोज कुमार मिश्रा, वरि. प्रशिक्षक (रेडियो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स)
23. श्री जितेन्द्र वीर कालरा, हिंदी अनुवादक (3.12.2009 से तीन वर्ष के लिए भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के फोटो डिविज़न में प्रतिनियुक्ति पर)
24. श्री राणा प्रताप मुखर्जी, सहायक प्रबंधक (प्रदर्शन कला)
25. श्री रहमत खान लंगा, कलाकार (प्रदर्शनकला)
26. श्री नत्थी लाल यादव, कलाकार (प्रदर्शनकला)
27. श्री जगदीप सिंह बेदी, कलाकार (प्रदर्शनकला)
28. श्री भगवती प्रसाद पाण्डेय, कलाकार (प्रदर्शनकला)
29. श्री चन्दर मणि, कलाकार (प्रदर्शनकला)
30. कु0 नेहा वत्स, कलाकार (प्रदर्शनकला)
31. श्री ओ0पी0 शर्मा, कलाकार
32. श्री सतीश पारचा, पर्यवेक्षक (बा.भ.केन्द्र–वरि. ग्रेड)
33. श्रीमती नीलम चावला, प्रवर श्रेणी लिपिक
34. श्रीमती मरियम्मा मैथ्यू, प्रवर श्रेणी लिपिक
35. श्रीमती गुरदीप कौर, प्रवर श्रेणी लिपिक
36. श्री राजू टंडन, प्रवर श्रेणी लिपिक
37. श्रीमती शोभा ज़ेवियर, प्रवर श्रेणी लिपिक
38. श्री परेश गोयल, प्रवर श्रेणी लिपिक

39. श्रीमती विनोद सांगवान, कनि. आशुलिपिक (हिंदी)
40. श्रीमती अनीता राय, कनि. आशुलिपिक (हिंदी)
41. श्रीमती अनीता, कनि. आशुलिपिक (कनि. अंग्रेजी)
42. सुश्री प्रतिज्ञा, कनि. पुस्तकालय–सह–प्रशिक्षक
43. श्री मेहताब हुसैन, कनि. प्रशिक्षक (लकड़ी का काम)
44. श्री नागेन्द्र सिंह बिष्ट, वरि. प्रशिक्षक (क्ले–मॉडलिंग)
45. श्री जय प्रकाश तंवर, कनि. प्रशिक्षक (लकड़ी का काम)
46. श्री प्रकाश चन्द, कनि. प्रशिक्षक(सिलाई)
47. श्री देवेन्द्र कुमार, कनि. प्रशिक्षक (जिल्दसाज़ी)
48. श्री काशी नाथ, कनि. प्रशिक्षक (मॉडलिंग)
49. श्री राजीव कुमार, कनि. प्रशिक्षक (बुनाई)
50. श्री धीरेन्द्र कुमार, कनि. प्रशिक्षक (एँअरो मॉडलिंग)
51. श्रीमती उषा किरण बरूआ, कनि. प्रशिक्षक (शारीरिक शिक्षा)
52. श्री नीरज कुमार, कनि. प्रशिक्षक (शारीरिक शिक्षा)
53. श्री मोहन कुमार, कनि. प्रशिक्षक (जूडो)
54. श्री अमित सिंह, कनि. प्रशिक्षक (डार्क रूम)
55. श्री वासुदेव, कनि. कलाकार (संग्रहालय)
56. सुश्री स्मृति अरोड़ा, कनि. कलाकार (संग्रहालय)
57. श्री मोती लाल, कनि. गॉडलर
58. श्रीमती चन्द्रकान्ता शर्मा, पर्यवेक्षक (बा.ग.केन्द्र)
59. श्री संजय कुमार जैन, पर्यवेक्षक (बा.ग.केन्द्र)
60. श्रीमती रजनी देवी, वार्डन, छात्रावास
61. श्री मदन लाल मेहता, इलेक्ट्रीशियन
62. श्री अरविन्द कुमार चौहान, स्टेज तकनीशियन–सह–इलेक्ट्रीशियन
63. श्री मनोज कुमार वर्मा, कनि. इलेक्ट्रीशियन
64. श्री चमन लाल, अवर श्रेणी लिपिक
65. श्री विनोद सिंह बिष्ट, अवर श्रेणी लिपिक
66. श्रीमती सीमा चौहान माथुर, अवर श्रेणी लिपिक
67. श्री जगदम्बा प्रसाद यादव, अवर श्रेणी लिपिक
68. श्रीमती माया रानी, अवर श्रेणी लिपिक
69. श्री चिरंजी लाल, अवर श्रेणी लिपिक
70. श्री सुनील कुमार, चालक
71. श्री ब्रिज कुमार, चालक
72. श्री हर्षमणि सेमवाल, चालक
73. श्री प्रदीप भट्ट, चालक
74. श्री आर.के. रामास्वामी, तकनीकी सहायक
75. श्री अश्विनी कुमार, तकनीकी सहायक
76. श्री राम सिंह साही, रसोईया
77. श्री सन्नू , मिस्त्री
78. श्री गोपाल राम आर्य, पुस्तकालय परिचारक
79. श्री भंवर सिंह, कनि. गेस्टेटनर ऑपरेटर
80. श्री सरोप राम, बस संवाहक–सह–क्लीनर
81 श्री गेंदा राम, माली
82. श्री गुंसाई राम, माली
83. श्री रति राम, माली
84. श्री धीर सिंह, माली
85. श्री सुरेन्द्र सिंह, माली

86. श्री रमेश कुमार, माली
87. श्री साहिब सिंह मीणा, माली
88. श्री जय राम, माली
89. श्री सुखदेव, चपरासी
90. श्री रमेश प्रसाद यादव, चपरासी
91. श्री प्रेम सिंह साही, चपरासी
92. श्रीमती गीता साही, चपरासी
93. श्री जगदीश चन्दर, चपरासी
94. श्री सुधीर कुमार, चपरासी
95. श्रीमती दयावती, मददगार
96. श्री मुन्ना लाल, मददगार
97. श्री तिलक राम, मददगार
98. श्री गनपत, अनुभागीय परिचारक (31.03.2012 को सेवानिवृत्त)
99. श्री राम विनोद सिंह, अनुभागीय परिचारक
100. श्री नेत्र सिंह बिष्ट, अनुभागीय परिचारक
101. श्री गोविन्द सिंह बिष्ट, अनुभागीय परिचारक
102. श्री राम दीन, अनुभागीय परिचारक
103. श्री जाने, अनुभागीय परिचारक
104. श्री कैलाश चन्द, अनुभागीय परिचारक
105. श्री तारकेश्वर गौंड, अनुभागीय परिचारक
106. श्री महेश कुमार, मैदान रक्षक
107. श्री जसवंत सिंह सैनी, मैदान रक्षक
108. श्री छोटे लाल, बेलदार (31.3.2012 को सेवानिवृत्त)
109. श्री मोहन सिंह सैनी, बेलदार
110. श्री लायक सिंह, बेलदार
111. श्री राम दुलारे, बेलदार
112. श्री महादेव, बेलदार
113. श्री बाबू राम, चौकीदार
114. श्री श्याम सिंह, चौकीदार
115. श्री कंवर पाल, चौकीदार
116. श्री अशोक कुमार तोमर, चौकीदार
117. श्री मोहन लाल, चौकीदार
118. श्री डूंगर सिंह, चौकीदार
119. श्री प्रकाश, चौकीदार
120. श्री धन पाल सिंह, चौकीदार
121. श्री जय चंद, चौकीदार
122. श्री हरेन्द्र सिंह, चौकीदार
123. श्री दुर्गा प्रसाद, चौकीदार
124. श्री महेन्द्र सिंह, चौकीदार
125. श्री उमेश कुमार, चौकीदार
126. श्री किशन लाल, सफाई कर्मचारी
127. श्री अमृत सिंह, सफाई कर्मचारी
128. श्री बिल्लू, सफाई कर्मचारी
129. श्री बिशन स्वरूप, सफाई कर्मचारी
130. श्री दास, सफाई कर्मचारी
131. श्री कालीचरण, सफाई कर्मचारी
132. श्रीमती किरन देवी, सफाई कर्मचारी

133. श्री होरी लाल, सफाई कर्मचारी
134. श्री रमेश कुमार, सफाई कर्मचारी
135. श्री नितिन, सफाई कर्मचारी
136. श्रीमती अनुराधा, सफाई कर्मचारी
137. श्री बाबू लाल मीणा, सफाई कर्मचारी

टिप्पणी :– सुश्री अमिता शाह, निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन – इंदिरा गांधी कला व संस्कृति केन्द्र, मारिशस में प्रतिनियुक्ति पर

भारत में बाल भवन
सम्बद्ध बाल भवनों की क्षेत्रवार सूची

पूर्वी क्षेत्र

पश्चिम बंगाल

1. **श्री सुदीप श्रीमल**
निदेशक, जवाहर शिशु भवन,
94/1 चौरंगी रोड,
कोलकाता–700020, (पश्चिम बंगाल)

फोन नं. 24405425, मो0 9830332535
फैक्स 033–2440 3890
ई–मेल – dis_play_@vsnl.com

2. **श्री प्रबल दत्ता**
रविप, जवाहर शिशु भवन,
बालतिकुरी, हावड़ा–711113
(पश्चिम बंगाल)

फोन नं. 033–26532317
(मो.) 09433532682

ओड़ीसा

3. **श्री आर.सी. सामंत रे**
निदेशक व सदस्य सचिव,
राज्य जवाहर बाल भवन, गवर्नमेंट एस्टेट,
पोखरीपुट मेन रोड, एअरोड्रोम एरिया,
भुवनेश्वर–751020 (ओड़ीसा)

फोन नं. 0674–6541523
(मो.) 09238616967

4. **श्री शंकरारान जेना**
निदेशक जिला बाल भवन कटक,
मॉडर्न पब्लिक स्कूल बिल्डिंग, बिड़ानसी
कटक–753014 (ओड़ीसा)

(मो.) 09437539425
फोन नं. 0671–2604813, 2312478,
2421337, 233487

5. **श्री डी.के. मोहंती**
सदस्य सचिव एवं निदेशक,
बाल भवन, जिला ज्योतिर्मयी महिला समिति,
ग्वालसिंह, (निकट डी. एस. लॉ. कॉलेज)
डाकघर ठाकुरपटना,
केंद्रपाड़ा–754250 (ओड़ीसा)

फोन नं. 06727–220745
ई–मेल: jyotirmayee_2000@yahoo.co.in
(मो.) 09437504626, 09238730760

6. श्रीमती सोमगद्रा त्रिपाठी
निदेशक,
जिन्दल बाल भवन, अंगूल,
जिन्दल स्कूल परिसर,
जिन्दल स्टील एण्ड पावर लिमिटेड,
गॉंग–निशा, छेन्दीपाड़ा रोड,,
एसएच 63, अंगूल–759130 (उड़ीसा

(मो) 09777443167
ई–मेल : somabhadra.t@angul.jspl.com

मणिपुर

7. सुश्री जी. सत्यवती देवी
संयुक्त निदेशक,
मणिपुर बाल भवन,
समाज कल्याण विभाग निदेशालय परिसर,
दूसरा एम. आर. गेट., इम्फाल–795001
(मणिपुर)

फोन नं. 0385–2448532

झारखंड

8. श्री गणेश रेड्डी
सचिव,
झारखंड राज्य बाल भवन,
सिटिजन्स फाउन्डेशन,
7, बेतार केन्द्र निवारन पुर,
रांची – 834002(झारखंड)

ई–मेल : mail2jbb@gmail.com
फोन नं. 0651–3205777
फैक्स नं. 0651–24817777
9431176777, 9334466777

9. श्री बी.एस. जायसवाल
निदेशक,
आशा–लता बाल भवन,
सेक्टर वी–डी
बोकारो स्टील सिटी–827006
जिला – बोकारो
झारखंड

फोन नं. 0654–2297766
(मो.) 9431127778

नागालैण्ड

10. निदेशक(समाज कल्याण)
समाज कल्याण विभाग,
नागालैण्ड सरकार,
कोहिमा – 797001

मिज़ोरम

11. निदेशक(समाज कल्याण)
समाज कल्याण विभाग,
मिज़ोरम सरकार,
आईज़ोल – 796007

बिहार

12. सुश्री ज्योति परिहार
निदेशक,
बिहार बाल भवन, 'किलकारी',
राष्ट्रभाषा परिसर
रीदपुर, पटना – 1
फोन नं. 0612–645227
(मो.) 09431880112
ई–मेल : jyoti_parihar@yahoo.com
info@bbbk.in

13. सुश्री विनीता झा
मदर टेरेसा बाल भवन,
मदर टेरेसा विद्यापीठ आवास,
क्लब रोड, एम.डी.डी.एम. कॉलेज के सामने,
रमना, मुज्जफरपुर,
बिहार
पिन कोड : 842002
(मो.) 094314–51523

14. श्री अर्जुन कुमार
यूनीक क्रिएटिव एज्यूकेशन सोसायटी
स्टेशन रोड, सिंघियाघाट,
जिला – समस्तीपुर
बिहार,
पिन कोड : 848236
(मो) 9905689901, 9430077962
9939704543

गोरखपुर

15. वेद माता चिल्ड्रन एकेडमी
सरजू केनाल रोड, डाक–लबनापर
गोरखपुर, जिला बस्ती–272001
(उत्तर प्रदेश)
(मो) 9451670567

पश्चिम क्षेत्र

केन्द्रशासित प्रदेश

16. श्रीमती मंजीत कौर
बाल भवन बोर्ड, सर्किट हाउस के सामने,
दादरा व नगर हवेली संघ शासित क्षेत्र,
सिल्वासा 396230
फोन नं. 0260–2642287
फैक्स 026–2640577
(मो.) 9824677855

17. श्रीमती मधु अहलुवालिया
निदेशक बाल भवन बोर्ड,
दमन व दीव संघ शासित क्षेत्र,
स्पोर्ट्स क्लब, मोती दमन – 396220
फोन नं. 0260–2230941
(मो): 9898337101

18. श्री प्रेमजीत बारिया
निदेशक, बाल भवन बोर्ड,
लुहारवाडा, दीव–362520
फोन नं. 0287–5254516
(मो.): 09374017136

महाराष्ट्र

19. श्रीमती सुमन शिन्दे
निदेशक,
महाराष्ट्र राज्य जवाहर बाल भवन,
नेताजी सुभाष पथ,
चरनी रोड (वेस्ट)
मुम्बई– 400004 (महाराष्ट्र)
फोन नं. 022–23693991
(मो.) 09967282857,
फैक्स 022–23614189
ई–मेल : balbhavan_2006@yahoo.co.in
balbhavanmumbai@gmail.com

20. श्रीमती मीरा पाउस्कर
सॉई बाल भवन,
25, सॉई दीप, जय नगर,
निकट दशमेश नगर,
ओरामानपुरा, औरंगाबाद – 430001
(महाराष्ट्र)
ई–मेल : Meera.pauskar@gmail.com
फोन नं. 0240–2339179, 2474913
(मो.) 094227162151,
फैक्स 0240–2359788

21. श्री प्रमोद पाटिल
अध्यक्ष
जयहिन्द बाल भवन,
देवपुर, धुले–424002 (महाराष्ट्र)
फोन नं. 02562–223036
(मो.) 09423191105

22. **श्री मधुकर रैमुल**
निदेशक, रोटरी बाल भवन — फोन नं. 07261–232618
अग्रेसन चौक, देवलगाँव राजा –443204,
जिला बुलदाना (महाराष्ट्र)

23. **साई बाल भवन**
द्वारा श्री सुभाष डी. संदनशिवे — (मो.) 09823405923
58, नंदनवन हाउसिंग सोसायटी,
निकट साई बाबा मंगल कार्यालय,
नकाने रोड,देवपुर
धुले–424002 (महाराष्ट्र)

24. **श्री सुनील सुतावने**
निदेशक, — फोन नं. 0240–2484794, 2472234
गरवारे बाल भवन,
बी–1, एन–7, सीआईडीसीओ
औरंगाबाद – 431001 (महाराष्ट्र)

25. **प्रो. डॉ. एम. फारूख अंसारी**
सदफ (SADAF) एजुकेशन सोसायटी
कमरा नं. 48, न्यू एमएचएडीए कॉलोनी,
क्र0 सं0 30/1–2,
मालेगाँव (जिला–नासिक),
महाराष्ट्र, पिन कोड : 423203

नागपुर

26. **डॉ. रंजना पारखी** — फोन नं. 0712–2243127
निदेशक
ताराबाई सैंगरपावर बाल भवन,
221/बी, बजाज नगर,
नागपुर–10

गुजरात

27. **श्री मनसुखभाई जोशी**
मानद सचिव, बाल भवन — (मो) 09825229900
चिल्ड्रंस ड्रीमलैंड्स, — फोन नं. 0281–2440930
नेहरू उद्यान, रेस कोर्स,
राजकोट– 360001 (गुजरात)

28. सुश्री श्वेता प्यारा
निदेशक, बाल भवन सोसाइटी,
सायाजी बाग के पीछे,
करेली बैन्क, वड़ोदरा– 390018 (गुजरात)
(मो) 09373223158
फोन नं. 0265–2792718
फैक्स 0265–2795937
ई मेल: balbhavanbrd@gmail.com

29. श्री दीपक के. खंदेरिया
निदेशक,
(मो) 9898787929
कुसुम बहन अदानी बाल भवन,
अक्षयगढ़–362229,
जिला. जूनागढ, केशोड (गुजरात)
फोन नं. 02871–236039 / 309909 / 309244

30. श्री हेमंत नानावती
निदेशक,
रूपायतन बाल भवन,
गिरी तलेती, भवनाथ,
जूनागढ – 362004
फोन नं. 0285–2627573
(मो) 09825268645

31. श्री जे.एम. पटेल
निदेशक
बा श्री वी.एन. सोलंकी (मोगर) बाल भवन,
सेक्टर – 28 बी / एच दत्त मंदिर,
गांधी नगर – 382028 (गुजरात)
(मो) 099255520541
फोन नं. 079–23210477

32. श्री देवचंदभाई सवालिया
निदेशक,
लालचंदभाई वोरा बाल भवन,
द्वारा बाल केलावनी मंदिर
जिला अमरेली, बगासरा –365440
फोन नं. (02796)–222479
(मो) 9426965234

33. बाल भवन, वन्धवान
वन्धवान केलावनी मण्डल,
सुरेन्द्र नगर, गोहशाला
वधवान – 363030 (गुजरात)
फोन नं. 02752–243440

34. श्री शास्त्री भानुप्रकाशदास
प्रबंध न्यासी
श्री महात्मा गांधी, बाल भवन,
श्री नारायण गुरूकुल
छाया मुख्य मार्ग, टी ओ. ए डाकखाना छाया,
तहसील / जिला पोरबन्दर – 360575
फोन नं. 91–286–2245973
(मो) 9825230451

35. **श्री जे.एन. सोलंकी**
निदेशक,
श्री एन.के.सोलंकी (मोगर), बाल भवन,
ओवर ब्रिज के सामने,
नादियाड जिला–खेदा,
गुजरात – 387001
फोन नं. 0268–2568851
(मो) 09426567778

36. **प्रो. हीरा लाल शाह**
निदेशक,
बाल भवन, अगरेली, श्री गिरधारीभाई बाल संग्रहालय,
रामजी मंदिर के सामने, रांकरवाडा,
अगरेली–365601 (गुजरात)
फोन नं. 02792–222118
(मो) 09426715034

37. **श्री भारत पटेल**
सचिव
सरदार पटेल बाल भवन
मिल रोड, नादियाड,
जिला खेदा,
गुजरात – 387001
फोन नं. 0286 2566196
ई–मेल :nadiad@sardarpatelbalbhavan.com

38. **सुश्री मृणाल दीक्षित**
निदेशक,
पार्थ गतिविधियां – बाल भवन
अनेरी महिला विकास मंडल,
प्लॉट नं. 2225/बी, 'पूजा पार्क',
वाधा वाडी रोड,
भावनगर–364002 (गुजरात)
(मो) 9426914395

39. **श्री हसमुख उपेध्या**
निदेशक,
शिशुविहार बाल भवन,
कृष्णा नगर, भावनगर,
गुजरात–364001
(मो) 09825942075

40. **श्री गोर नरेन्द्र सागर**
सचिव,
कच्छ एमेच्योर एस्ट्रोनॉमर्स क्लब
एस–4,सन्ध्या अपार्टमेंट,
जिला पंचायत के सामने,
भुज (कच्छ), पिन कोड – 370001

41. **श्री मोहन बी. देव**
अध्यक्ष,
रमनलाल गुलाबचंद शाह विशेष शिक्षा केन्द्र, (मो) 9825138201
देगम, तहसील पारडी, जिला वलसाड, वाया वापी,
गुजरात – 396191

42. **श्री शास्त्री रामकृष्णदास** फोन: 02633–240107
निदेशक, मो0. 9913458525
श्री स्वामीनारायण बाल भवन,
मनलपदा – धर्मपुर,
तहसील धर्मपुर, जिला वलसाड,
गुजरात, पिन कोड – 396050

गोवा

43. **श्रीमती सुमन पेडनेकर**
निदेशक, बाल भवन, दूरभाष – 0832–2226823
परेड मैदान के सामने, फैक्स – 2223001
कम्पाल, पणजी–403001 (मो) 9960322074
(गोवा)

राजस्थान

44. **श्रीमती चरनजीत ढिल्लन** फोन नं. 0141–2359917
निदेशक, बाल भवन, जयपुर, फैक्स 0141–2354514
508, अंजनी मार्ग, (मो.) 9829056002,
हनुमान नगर एक्सटेंशन, ई–मेल : dhillon_charan@gmail.com
सिरसी रोड, जयपुर – 302021 (राजस्थान)
balbhavanjaipur@gmail.com

45. **वीना मेमोरियल बाल भवन**
वीना मेमोरियल रीवा (एसएसाईईडब्ल्यूए) सोसायटी
अजय निवास, (मो) 9928054046
गुलाब मार्ग,
करौली – 322241 (राजस्थान)

हरियाणा

46. **सुश्री अमनदीप कौर**
मानद सचिव,
09915484948 (श्रीमती बाजवा)
बाल भवन, चण्डीगढ,
द्वारा भारतीय बाल कल्याण परिषद्,
संघ राज्य शाखा, सेक्टर 23–बी,
चण्डीगढ़ (हरियाणा)

47. **श्री सज्जन सिंह**
महासचिव, बाल भवन गुड़गाँव,
द्वारा जिला बाल कल्याण परिषद,
डी.आई.जी. निवास के सामने, सिविल लाईन्स,
गुड़गाँव – 122001 (हरियाणा)
फोन नं. 0124–2324288, 2328288

48. **डॉ0 जी.एस. अधिकारी**
निदेशक, हरियाणा राज्य बाल भवन,
गयुमन, करनाल–132037 (हरियाणा)
(मो0) 9896273032
फोन नं. 0184–2273719

49. **श्री अमित पी. कुमार**
अध्यक्ष,
जिला बाल कल्याण अधिकारी, बाल भवन
नारनौल द्वारा जिला बाल विकास परिषद्,
निजामपुर रोड, नारनौल (हरियाणा)
फोन नं. 01282–251202, 250208
फैक्स – 01282–251200
(मो) 9813268311

50. **श्री कुशमामदर यादव**
महासचिव, बाल भवन हिसार,
द्वारा–हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद्,
जिला शाखा, हिसार, (हरियाणा)
फोन नं. 01662–237027
(मो) 09896690315

51. **श्री कमलेश शास्त्री**
अध्यक्ष, बाल भवन, भिवानी
हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद्,
जिला शाखा, भिवानी – 127021(हरियाणा)
फोन नं. 01664–242426

52. **श्री मिलन पंडित**
निदेशक
बाल भगन, हिसार रोड
द्वारा जिला बाल कल्याण परिषद्,
अम्बाला सिटी –134003 (हरियाणा)
फोन नं. 0171–2556751
फैक्स नं. 0171–2556963

53. **श्री सी.एम. भटनागर**
बाल भवन, फरीदाबाद,
द्वारा हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद्,
जिला शाखा, निकट बस स्टैण्ड एन.आई.टी.,
फरीदाबाद –121001 (हरियाणा)
फोन नं. 0129–2418215

54. **श्रीमती कमलेश चेहर**
बाल भवन सिरसा,
द्वारा जिला बाल कल्याण परिषद्,
बरनाला रोड, सिरसा – 125055(हरियाणा)
फोन नं. 01666–222602

55. **श्री सुशील कुमार पांचाल**
निदेशक
बाल भवन कुरुक्षेत्र,
द्वारा जिला बाल कल्याण परिषद्,
सेक्टर 13, अर्बन एस्टेट, कुरूक्षेत्र (हरियाणा)
ई–मेल: sushilpanchal@yahoo.co.in
फोन नं. 01744–222340

56. **श्री ए.एस. दहिया**
निदेशक, बाल भवन रोहतक,
द्वारा हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद्,
जिला शाखा, रोहतक (हरियाणा) – 124001
फोन नं. 01262–253819

57. **श्री मनोज तिवारी**
निदेशक,
सलवान बाल भवन,
सलवान पब्लिक स्कूल,
सेक्टर–15(II), गुडगाँव–122001
ई–मेल: admin@salwangurgaaon.com
फोन नं. 0124 2333956
(मो) 09811285244

58. **शांति बाल भवन**
1053, सेक्टर 31–बी,
चण्डीगढ़ (हरियाणा)

59. पठानिया बाल भवन
रोहतक(हरियाणा)

पंजाब

60. श्री नरेन्द्र कुमार बंसल
अध्यक्ष,
बाल भवन, कोटकपुरा,
सादा राम मैमोरियल सी0सेकेंडरी स्कूल,
जैतू रोड, कोटकपुरा–151204 फोन नं. 01635–221186
(पंजाब)

जालंधर

61. अध्यक्ष
गीता मंदिर चैरीटेबल सोसायटी(रजि.)
अर्बन एस्टेट फेरा–I,
जालंधर–144022

जम्मू एवं कश्मीर

62. श्रीमती ललिता नंदा
निदेशक, फोन नं. 2546271
जम्मू बाल भवन, (गो) 9419166821
87–पंजीतीर्थी, जम्मू–18001(जम्मू एवं कश्मीर)

63. डॉ. रेनू नन्दा
निदेशक, शांति निकेतन बाल भवन, फोन नं. 0919–2553726
गार्डन एवेन्यू, रोड नं. 1, (मो) 94191–95900
गेस्ट हाउस रोड,
डाकखाना विनायक बाज़ार,
जम्मू तवी–180001
(जम्मू एवं कश्मीर)

64. फा. कुरियाकोस टी.
निदेशक, फोन नं. 01912481222
सेंट जॉन बाल भवन,
सेंट जॉन्स पुनर्वास केन्द्र,
द्वारा बिशप हाउस,
जम्मू कैंट–1800003
जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

65. **सुश्री आतिका बानो**
कश्मीर बाल भवन
मजलिसन निसा जम्मू एवं कश्मीर,
सोपोर, कश्मीर–193201

फोन नं. 0751984–2234738
(मो) 09419039827

उत्तरांचल

66. **श्री आर.एल. भट्ट**
प्रभारी,
बी.एच.ई.एल. बाल भवन,
सेक्टर– I, बीएचईएल,
हरिद्वार–249403
(उत्तराखंड)

फोन नं. 01334–285688
फैक्स नं. 01334–23183, 223954

67. **आर्क बाल भवन**
एम.डी.डी.ए. कुलेकरा विला
3, सहस्त्रधारा रोड,
देहरादून, उत्तराखंड 248001

(मो) 9412054216
ई–मेल: sarch.birdcount@gmail.com

68. **श्री विनोद रावत**
निदेशक,
गोपेश्वर बाल भवन
कृतो जनशिक्षा समिति,
गोपेश्वर, चमोली(उत्तराखंड)

(मो) 01372.252381
ई–मेल : vinodrawatnd@gmail.com

दिल्ली

69. **राज्य सचिव**
उत्तर रेलवे
भारत स्काऊट एंड गाइडस,
राज्य मुख्यालय,
एनेक्सी–II बड़ौदा हाऊस,
कस्तूरबा गाँधी मार्ग
नई दिल्ली – 110001

हिमाचल प्रदेश

70. **श्री राकेश खेर**
निदेशक
आधारशिला बाल भवन,
आधारशिला स्कूल,
गाँव एवं डाकखाना मरंदा, तहसील पालमपुर,
जिला. कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)
पिन कोड 176102

(मो) 09218606017
09218406017
09218406018
09218506018

71. **डॉ. सुधीर अवस्थी**
निदेशक,
हमारा अपना बाल भवन, कांगड़ा — फोन नं. 01892–238112
हमारा अपना अंग्रेजी विद्यालय, शाहपुर — (मो) 09882562212
जिला कांगड़ा(हिमाचल प्रदेश)
पिन कोड : 176206

दक्षिण क्षेत्र–I

आंध्र प्रदेश

72. **श्रीमती पी. सन्ध्या, एम.बी.ए**
निदेशक एवं विशेषाधिकारी, — फोन नं. 040–23233956, 23299948
जवाहर बाल भवन, — (मो) 09849909183
पब्लिक गार्डन, नामपल्ली — फैक्स : 040–23299948
हैदराबाद–500004(आंध्र प्रदेश)

73. **श्रीमती रमादेवी**
निदेशक,
बाल भवन, — फोन नं. 09290023565
हारा नेहरू मैमोरियल हाई स्कूल,
मालाकपेट, ओल्ड सिटी, हैदराबाद,
आंध्र प्रदेश, पिन कोड 500036

74. **श्रीमती विनय ए. शीला**
मुख्य अध्यापिका
साफदरिया गर्ल्स हाई स्कूल,
हुमायूं नगर,
हैदराबाद–500028

75. **श्री रामी रेड्डी**
निदेशक — फोन नं. 09441255177
बाल भवन, कॉलेज रोड, गड़वाल,
महबूब नगर जिला, आन्ध्र प्रदेश,
पिन कोड– 509125

76. **श्री जी. गणेश**
अधीक्षक प्रभारी, जिला बाल भवन, — फोन नं. 09440738247
निकट चिल्ड्रन्स पार्क, कुरनूल,
जिला कुरनूल
आन्ध्र प्रदेश
पिन कोड – 518001

77. **बी. हरगोपाल**
निदेशक,
जिला बाल भवन,
द्वारा बापुर बाल भवन परिसर,
निकट ओवर ब्रिज, ऑफिसर्स लाइन, फोन नं. 0994993710
जिला चित्तूर,
आन्ध्र प्रदेश, पिन कोड – 517001

78. **श्रीमती डी. झांसी**
निदेशक,
जिला बाल भवन, फोन नं. 09912500516
द्वारा जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम,
हनमकुंडा, जिला वारंगल,
आन्ध्र प्रदेश, पिन कोड – 506001

79. **श्री पी. प्रभाकर**
निदेशक, फोन नं. 09440037622
जिला बाल भवन,
फायर स्टेशन के सामने, निज़ामाबाद,
आन्ध्र प्रदेश, पिन कोड – 503001

80. **श्रीमती राधा**
निदेशक, फोन नं. 09866934173
जिला बाल भवन,
आई.एम.ए. बिल्डिंग के सामने, मनिल्ला गुडेम
खम्मम, जिला खम्मम,
आन्ध्र प्रदेश, पिन कोड – 507002

81. **श्रीमती अलीवेलु**
अधीक्षक, फोन नं. 09490750537
बाल भवन,
द्वारा आन्ध्र अकादमी ऑफ आर्ट्स, मुत्यलम्मदु,
निकट भारतीय स्टेट बैंक, विजयवाड़ा, जिला कृष्णा,
आन्ध्र प्रदेश, पिन कोड – 500011

82. **श्रीमती शारदा**
निदेशक,
जिला बाल भवन,
द्वारा म्यूनिसिपल चिल्ड्रन्स पार्क, गांधी नगर, (मो) 09550007974
काकीनाड़ा, जिला पूर्व गोदावरी , फोन नं. 08842–354181
आन्ध्र प्रदेश, पिन कोड – 533004

83. **श्रीमती विजय कुमार**
अधीक्षक,
जिला बाल भवन, निकट कलेक्टरेट, चिलकालापुडी,
मछलीपट्टनम, जिला कृष्णा, फोन नं. 09491346793
आन्ध्र प्रदेश, पिन कोड–521002

84. **डॉ. एस. रमेश**
निदेशक, फोन नं. 09440585616
चाचा बाल भवन,
भारतीय स्टेट बैंक के सामने, मेन रोड, राजम,
जिला श्रीकाकुलम,
आन्ध्र प्रदेश, पिन कोड–532127

85. **श्री रामचंद्र मूर्ति**
अधीक्षक प्रभारी, फोन नं. 9394825831
जिला बाल भवन, हिल कॉलोनी, नागार्जुन सागर,
नलगोन्डा जिला,
आन्ध्र प्रदेश, पिन कोड – 508202

86. **कैप्टन एन. वेंकटेश्वरलु**
सचिव,
पी.सी.एस.पी. बाल भवन, (मो) 9440675123, 9849746818
विशाखा चाइल्ड स्पॉन्सरशिप प्रोग्राम, 0891–2732171
कार्यालय सं.–3, सूर्य किरण अपार्टमेंट,
पैलेस लेआउट, पेड्डावॉल्टेयर, विलेज,
(आंध्र प्रदेश), पिन कोड – 530017

87. **श्रीमती चंदना डे**
सचिव, बाल भवन, फोन नं. 08728–2722
एन.टी.पी.सी. टाउनशिप, फैक्स नं. 272111
रामागुंडम, क्वार्टर नं. डी–5/10, पी.टी.एस.
डाकघर–ज्योति नगर–505215
(आंध्र प्रदेश)

88. **श्री एस. राधाकृष्णन्**
निदेशक, फोन नं. 08623–225123
बाल भवन, फैक्स नं. 08623–222311
द्वारा स्पेस सेंट्रल स्कूल, ई–मेल : sradha@shar.gov.in
अंतरिक्ष विभाग, आईएसआरओ–एसडीएससी एसएचएआर
श्रीहरिकोटा–524124 (आंध्र प्रदेश)

89. **श्री पी. नारायण रेड्डी**
निदेशक,
बालाजी बाल भवन,
सुधाना लिटिल सिटीजन हाई स्कूल परिसर,
आर.सी. रोड, तिरुपति–517502
(आंध्र प्रदेश)
(मो) 0917705897
फोन नं. 0877–2234480, 2240642

90. **सुश्री जी. सुभद्रा**
निदेशक,
नेल्लौर बाल भवन,
120, द्वारका टॉवर्स,
टेक्कमिटा, नेल्लौर–524003
(आंध्र प्रदेश)
फोन नं. 0861–2336208, 2336106
(मो) 9848627158
ई–मेल balbhavan_nellore@yahoo.com

<u>कर्नाटक</u>

91. **श्री के. वी. कृष्णामूर्ति**
मुख्य संयोजक
जिला जवाहर बाल भवन,
बन्नीमण्टप, मैसूर–570015
(मो) 0960300196, 9448914794
फोन नं. 0821–2495486
फैक्स 0821–2498031

92. **सुश्री दिव्या नारायनप्पा**
प्रशासनिक अधिकारी,
बाल भवन सोसायटी, कब्बन पार्क,
बंगलूरू – 560001 (कर्नाटक)
फोन नं. 080–22864189
फैक्स 22864189

93. **सुश्री मंजुला रमन**
अध्यक्ष,
अनुभूति बाल भवन
192, चौथा ब्लॉक, 12–ए मुख्य मार्ग,
कोरामंगला लेआउट, बंगलूरू–560034
फोन नं. 080–25320650
ई–मेल : manjularaman@gmail.com

94. **श्री एस. रामू**
निदेशक,
जवाहर बाल भवन,
डोड्डाबाल्लापुर रोड, दबरपेट,
दबरपेट रेलवे स्टेशन के सामने,
नेलामंगला (टी. क्यू.),
बंगलूरू ग्रामीण जिला कर्नाटक
फोन नं. 09980137066
09448157427

95. **श्री केशव कुमार**
निदेशक
नटराज बाला नाट्य केंद्र,
पहला क्रॉस, चैनल एरिया,
राजेन्द्र नगर, शिमोगा–577201 (कर्नाटक)
फोन नं. 08182–223402
फैक्स 08182–277251

96. **श्रीमती हबीबा एन. पाशा**
निदेशक व अध्यक्ष,
माउंटेन व्यू बाल भवन,
विद्या नगर, चिकमंगलूर–577101 (कर्नाटक)
फोन नं. 08262–222534
08262–223034
ई-मेल: mvi_school@ yahoo.co.in

97. **सुश्री विनोदा के.एम.**
निदेशक,
बाल भवन, सं. 13/28, जोसेफ नगर,
सागर 577401 (कर्नाटक)
फोन नं. 08183–236228
(मो) 9341994750

98. **श्री के.जी. नटराज**
निदेशक,
विद्या बाल भवन,
बनवारा रेलवे स्टेशन के सामने,
09448157427
बनवारा, हासन जिला
(कर्नाटक)
फोन नं. 9448610448

99. **श्री एन.एस. राव**
निदेशक,
फोन नं. 08135 321400
आसरे बाल भवन,
आसरे वरप्रद निलय, मारुति नगर,
प्रेसीडेन्सी स्कूल के सामने,
सीरा टाउन, तुमकुर जिला
(कर्नाटक)
(मो) 9448157427

100. **श्री के. सुनील कुमार**
ए.पी.जे. कलाम बाल भवन,
निकट दूरभाष केन्द्र,
09448157427
हनुमन्तापुरा,
कोरटागेरे, मधुगिरि शिक्षा डिस्ट्रिक्ट,
तुमकुर, कर्नाटक
फोन नं. 0944865998

दक्षिण क्षेत्र–II

केरल

101. **श्री सी.आर. दास**
कार्यकारी निदेशक,
जवाहर बाल भवन,
चेम्बुक्कवु त्रिचूर–680020 (केरल)
ई–मेल : balbhavanthrissur@gmail.com
फोन नं. 0487–2370560, 2332909
(मो) 9447937960

102. **श्री के. थंकप्पन**
कार्यकारी निदेशक,
जवाहर बाल भवन, कोल्लम,
शास्त्री जंक्शन, कोल्लम–691001 (केरल)
फोन नं. 0474–2744365
(मो) 9495474915

103. **श्री टी. शशी कुमार**
मानद कार्यकारी निदेशक,
जवाहर बाल भवन चिल्ड्रन्स लाईब्रेरी,
कोट्टायम–686001 (केरल)
फोन नं. 0481–2563004

104. **रा.रेजी. चाको**
निदेशक, रोटरी क्लब ऑफ कोचीन,
बाल भवन एण्ड वोकेशनल ट्रेनिंग रोटर,
पनामपिल्ली नगर,
कोचीन–692018 (केरल)
फोन नं. 31–484–2315430, 2315439
ई मेल : mail@rotarychochin.org

105. **श्री अब्राहम अरक्खल**
निदेशक,
जवाहर बाल भवन,
अल्लापुज्जा – 6880011 (केरल)
(मो) 09846302221
फोन नं. 0477–2260622

106. **डॉ. मालिनी**
प्राचार्या,
केरल राज्य जवाहर बाल भवन,
कनक्कुन्नु, विकास भवन डाकघर
तिरूअनंतपुरम – 695033
(मो) 9446770080
फोन नं. 0471–2316477

107. **श्री एस. हरि कृष्णन**
निदेशक, रंगप्रभात बाल भवन,
अलुम्थरा, वेंजारामूदु
डाकघर तिरूअनंतपुरम् – 695607
(केरल)
(मो) 9387803639
फोन नं. 0472–2872344

108. **श्री एम. नन्दकुमार**
मानद कार्यकारी निदेशक
सुश्रुत बाल भवन,
विथुरा – 695551 (केरल)
फोन नं. 04722–858687
(मो) 919446336334, 9446358334

109. **श्री एम. नंदकुमार**
अध्यक्ष,
श्री सत्य साई बाल भवन,
श्री सत्य साई अनाथालय ट्रस्ट
9/1108, अजीत बिल्डिंग, सस्थामंगलम,
तिरूअनंतपुरम् – 695010
फोन नं. 0471–2721422
फैक्स नं. 0471–2723522

<u>तमिलनाडु</u>

110. **श्री एस. थंगानायगम**
कार्यपालक अधिकारी
जवाहर बाल भवन, तमिलनाडु,
राजकीय संगीत महाविद्यालय परिसर, ग्रीनवेज़ रोड,
चेन्नई – 600028 (तमिलनाडु)
फोन नं. 044–24618162
फैक्स नं. 24618167
(मो) 9444461186

111. **जवाहर बाल भवन**
पेरियार मैट्रिक्यूलेशन स्कूल परिसर,
पेरियार नगर, चेन्नई,
तमिलनाडु, पिन कोड – 600082

112. **जवाहर बाल भवन**
विस्डम मैट्रिकुलेशन स्कूल परिसर,
कृष्णमूर्ति नगर, व्यासारपाडी,
चेन्नई, तमिलनाडु
पिन कोड – 6001018

113. **जवाहर बाल भवन**
जिला राजकीय संगीत विद्यालय,
67, मेडिकल हाउसिंग क्वार्टर्स,
सम्पत् नगर, इरोड–11
तमिलनाडु

114. **करूर जिला जवाहर बाल भवन**
लक्ष्मी नटराजन विद्या निकेतन स्कूल परिसर,
राजाजी स्ट्रीट, करूर, 639001,
तमिलनाडु

115. **जवाहर बाल भवन**
तिरुमति लक्ष्मी लोगानाथन मैट्रिकयूलेशन स्कूल परिसर,
धर्मराज कोली स्ट्रीट,
आरकोट –632503, जिला वेल्लौर,
तमिलनाडु

116. **जवाहर बाल भवन**
सं. – 84 सत्य मूर्ति स्ट्रीट,
शिवगंगा–630561

117. **जवाहर बाल भवन**
जिला राजकीय संगीत विद्यालय,
तिरुचेंदूर सलाई, तूतीकोरिन,
तमिलनाडु

118. **जवाहर बाल भवन**
राजकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल परिसर,
उथगमण्डलम्,
तमिलनाडु

119. **जवाहर बाल भवन**
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परिसर,
अल्ली नगरम्, थेनी – 625531
तमिलनाडु

120. **जवाहर बाल भवन**
जिला राजकीय संगीत विद्यालय परिसर,
थुलसी इल्लम, 16, पवलकुन्दु मदालयम्,
तिरूवनामलई, तमिलनाडु
पिन कोड – 606601

121. **जवाहर बाल भवन**
रंधिनासमापति पर्यावरणीय परिसर,
117–ए, डॉ. अन्ना सलाई,
भारतीय जीवन बीमा, बैक साईड,
नागक्कल – 637001,
तमिलनाडु

122. **जवाहर बाल भवन**
जिला राजकीय संगीत विद्यालय परिसर,
कॉर्पोरेशन प्ले ग्राउण्ड,
विल्लुपुरम्
तमिलनाडु
पिन कोड 605602

123. **जवाहर बाल भवन,**
जिला राजकीय संगीत विद्यालय परिसर–2,
पुदु थेरू, कड्डलोर,
तमिलनाडु

124. **जवाहर बाल भवन**
सेतुपति लक्ष्मीबाई राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
नागेरकोल, जिला कन्याकुमारी,
तमिलनाडु

125. **श्री वी. जेबल**
क्षेत्रीय सहायक निदेशक, कला व संस्कृति केन्द्र, फोन नं. 0452–22661795
16/157, अलगार कोविल सलाई, (मो) 09842761765
मदुरै (तमिलनाडु)

126. **श्री थिरू आर. गुणशेकरन**
निदेशक,
जवाहर बाल भवन, पुडुकोट्टई, (मो) 09443153122
कला व संस्कृति केन्द्र, फोन नं. 0431–2423122
22/13, समद स्कूल स्ट्रीट,
काजा नगर, तिरूचिरापल्ली 620020 (तमिलनाडु)

127. **श्री हेमनाथन**
निदेशक,
जवाहर बाल भवन रोलम, फोन नं. 0427–2443594, 2330021
राजकीय संगीत विद्यालय परिसर, फैक्स 0427–330004, 330021
शारदा कॉलेज रोड,
फेयरलैंड्स, पोस्ट सेलम 636016
तमिलनाडु

128. **श्री वी. जयपाल**
क्षेत्रीय सहायक निदेशक एवं निदेशक,
जवाहर बाल भवन,
न. 73 –ए मीट्टू रट्टीट, फोन नं. 044–23624238
कांचीपुरम– 631502 (मो) 944133105
जिला तमिलनाडु

129. **श्री आर. गुथु (एरा.कुमार)**
निदेशक, जवाहर बाल भवन तिरूनलवेली,
क्षेत्रीय कला व संस्कृति केन्द्र,
तमिलनाडु, देव संस्कृति केन्द्र भवन, फोन नं. 04651–281622
820/8 ट्रेक्टर स्ट्रीट, एन.जी.ओ. 'ए' कॉलोनी,
तिरूनलवेली–627007

130. **श्री आर. मुथु**
निदेशक, जवाहर बाल भवन, तंजावुर
व क्षेत्रीय सहायक निदेशक, फोन न. 04362–30121
कला व संस्कृति विभाग, फैक्स 04362–30121
नं.–5, मनीगेहालई रट्टीट, मुथामिल नगर,
मेडिकल कॉलेज रोड,
तंजौर–613007 (तमिलनाडु)

131. **श्री एस. नंदकुमार**
निदेशक,
जवाहर बाल भवन, (मो) 9443040120
शिक्षा विभाग, पुडुचेरी सरकार, फोन नं. 0413–2225751
पुडुचेरी

उत्तर प्रदेश

132. श्री हरिभाऊ खांडेकर
निदेशक,
बाल भवन, 16/99–ए,
फूल बाग,
कानपुर.– 208009 (उत्तर प्रदेश)
(मो) 09839807482
फोन नं. 0512–2313129

133. श्रीमती जयदास गुप्ता
निदेशक,
जवाहर बाल भवन,
जवाहर लाल नेहरू मैमोरियल फण्ड,
आनन्द भवन, इलाहाबाद – 211002 (उत्तर प्रदेश)
(मो)09335411450
फोन नं. 0532–2467078
फैक्स नं. 0532–2467096
ई–मेल : jlnmdald@dataone.in

134. श्रीमती साधना जैन
सचिव,
बाल भवन, रिहन्द नगर,
एन. एच.–2, क्वाटर नं0 डी–215
एन.टी.पी.सी. टाउनशिप, रिहन्द नगर
जिला सोनभद्र – 231223 (उत्तर प्रदेश)
फोन नं. 05446–242108
(मो) 9452339275

135. सुश्री अनिता अग्रवाल
निदेशक,
बाल भवन ऊर्जा विहार,
एन.टी.पी.सी. फिरोज़ गांधी ऊँचाहार थर्मल पॉवर प्रोजेक्ट,
डाकघर ऊँचाहार, जिला रायबरेली,– 229406 (उत्तर प्रदेश)
फोन नं. 05314–290270
फैक्स नं. 05314–21063

136. डॉ. राजकुमारी
निदेशक, पं. कन्हैयालाल पुंज बाल भवन,
सीतामढ़ी, संत रविदास नगर,
जिला भदोही – 221309 (उत्तर प्रदेश)
फोन नं. 09838335726
05414–236662

137. डॉ. अमित जैन
निदेशक,
अमित बाल भवन, फिरोज़ाबाद,
अमित एजुकेशनल व सोशल वैलफेयर सोसायटी,
439, इंदिरा कॉलोनी, कोटला चुंगी,
रायपुर रोड, फिरोज़ाबाद – 283203
(उत्तर प्रदेश)
(मो) 09837208441
0941242602

138. **श्रीमती उषा कुमार**
सचिव बाल भवन,
डी–65, एन.टी.पी.सी. दादरी,
विद्युत नगर
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश – 201008
(मो) 9971546502
फैक्स एवं फोन नं. 0120–2671182 / 2672785

139. **श्री विकास मेहंदी नक़वी**
निदेशक,
बाल भवन, अमरोहा,
नवादा ग्रामोद्योग विकास समिति
मोहल्ला बंगला, अमरोहा, (जे.पी. नगर)
पिन कोड – 244221 (उत्तर प्रदेश)
(मो) 094110071882

140. **बाल भवन, मुरादाबाद**
यूनिटी चिल्ड्रन एकेडमी सिरसी,
मो० सराय सादिक, दलाल सिरसी,
मुरादाबाद(उत्तर प्रदेश)
(मो) 09411431912

141. **डॉ. शिव शंकर केवट**
निदेशक,
रपीड बाल भवन,
शिव शारीरिक शिक्षा पर्यावरण सोसायटी,
460, निकट गायत्री मंदिर,
अंतीया तालाब,
झांसी (उत्तर प्रदेश)
(मो) 09669259229
09839131888
09455257643

142. **बाल भवन एन.टी.पी.सी. औरेया**
आलोक नगर, एन.टी.पी.सी. औरेया
डाकखाना डिबियापुर
जिला औरेया (उ.प्र.)
पिन कोड– 206244
फोन नं. 05683–24492

मध्य प्रदेश

143. **श्री पवन शर्मा**
अध्यक्ष,
बाल भवन,
स्टेडियम परिसर, ग्वालियर
(मध्य प्रदेश)
फोन नं. 07512–2349511

144. **सुश्री ममता चतुर्वेदी**
राहायक संयोजक,
जवाहर बाल भवन, ग्वालियर
129, मयूर नगर, थातीपुर,
ग्वालियर(मध्य प्रदेश)

145. **श्री अखिलेश जैन**
सहायक संयोजक,
इंदौर बाल भवन
29/3, पुराना पलासिया,
महिला एवं बाल कल्याण अनुभाग,
इंदौर (मध्य प्रदेश)
फोन नं. 0731–2576332
फैक्स नं. 0731–2566331
(मो) 09826616663
ई–मेल: indore 2007@rediffmail.com
balbhavanindore@rediffmail.com

146. **श्रीमती मनीषा लुम्बा**
निदेशक,
बाल भवन जबलपुर,
केशरवानी कॉलेज,
लोहियापुल, गरहा फाटक,
जबलपुर (मध्य प्रदेश)
फोन नं. 9826385681

147. **सहायक संयोजक,**
बाल भवन उज्जैन
महिला एवं बाल विकास अनुभाग,
विक्रम कीर्ति मंदिर के निकट,
कोठी रोड, उज्जैन (मध्य प्रदेश)
फोन नं. 9893008817

148. **श्री आर.के. शुक्ला**
कार्यक्रम अधिकारी,
महिला बाल विकास कार्यालय,
निकट आयुक्त कार्यालय,
शिवा (मध्य प्रदेश)
फोन नं. 07662–254759

149. **श्रीमती चन्द्रमती गुप्ता**
निदेशक,
बाल भवन सागर,
एच आई जी 1, कोशी एवम् पद्माकर नगर,
मकरोनिया के सामने वाले क्वार्टर्स, मकरोनिया
सागर – 470003,
(मध्य प्रदेश)
फोन नं. 07582–232415
(मो) 09827817408

150. डॉ. उमाशंकर नगायच
निदेशक,
जवाहर बाल भवन, भोपाल,
1250 –II स्टॉप, तुलसी नगर,
भोपाल (मध्य प्रदेश)
फोन नं. 0755–2558259

151. अध्यक्ष,
अभिनव बाल भवन
केयर वैलफेयर सोसायटी,
239, पुतलीघर कॉलोनी, शाहजहानाबाद,
भोपाल – 462001
(मध्य प्रदेश)
(मो) 9826014818

152. सुश्री माया सोनी
अध्यक्ष,
आदर्श महिला विकास एवं व्यावसायिक शिक्षा समिति,
अर्जुन नगर, उत्तरी करोंदिया,
जिला – सिधी,
(मध्य प्रदेश)
(मो) 07822–250014

153. श्री दिनेश राय
बाल भवन छिंदवाडा
नेहरू युवा विकास संगठन,
गाँव एवं डाकखाना तगिया,
जिला छिंदवाड़ा,
पिन कोड–480559
(मध्य प्रदेश)
फैक्स नं. 07149–272292
ई–मेल : nyvs_chw@rediffmail.com

<u>छत्तीसगढ़</u>

154. श्री सी.डी. मैथ्यू
महाप्रबंधक, एच.आर.
जिंदल बाल भवन
जिंदल स्टील एण्ड पॉवर लिमिटेड
पोस्ट बॉक्स नं. 16, खरसिया रोड,
रायगढ़ – 496001
(छत्तीसगढ़)
फोन नं. 07762–227001
(मो) 9827477130

155. जिंदल बाल भवन, तमनार
डाकघर , तमनार, जिला रायगढ
(छत्तीसगढ़)
(मो) 9303451988

156. **बाल भवन एन.टी.पी.सी.–सीपत** फोन नं. 07752–246535
एनटीपीसी लिमिटेड
सीपत सुपर थर्मल पॉवर प्रोजेक्ट,
उज्ज्वल नगर, जिला बिलासपुर,
छत्तीसगढ़,
पिन कोड – 495006

राष्ट्रीय बाल भवन से सम्बद्ध बाल केन्द्रों की सूची

1. **श्री राजमणि कौल**
निदेशक,
परमसुख आदिवासी बाल केन्द्र, (मो) 09452320012
परमसुख आदिवासी साहित्यिक संस्थान फोन नं. 05334–236188
पौखर, डाकघर पचेरा,
मंदा कोरन्व,
इलाहाबाद(उ0प्र0)

2. **श्री हौसला प्रसाद तिवारी**
निदेशक, (मो) 09415266619
उन्नयन बाल केन्द्र,
09918974324
शिक्षा उन्नयन समिति,
मेजा रोड, इलाहाबाद(उ0प्र0)

3. **श्री बच्चन सिंह**
निदेशक,
जनजातीय बाल केन्द्र,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय,
संयुक्त नगर, बवाडे, (मो) 9473576610
पोस्ट – भिखखीचौरा
जनपद – गाज़ीपुर (उ.प्र.)

4. **श्री हिमांशु कुमार सिंह,**
उपाध्यक्ष,
गिरिवासी वनवासी बाल केंद्र,
गिरिवासी वनवासी सेवा प्रकल्प,
एकलव्य नगर, घोड़ावाल,
सोनभद्र (उ.प्र.) – 231210

5. **श्रीमती माला कुमार**
महासचिव,
एनटीपीसी बाल भवन केन्द्र,
द्वारा बाल भवन समिति,
एन.टी.पी.सी. कॉलोनी, सेक्टर–33, नोएडा (उ.प्र.)

6. **अध्यक्ष,**
बाल केन्द्र–फरक्का,
(उदिता लेडीज़ क्लब),
जी.एम. बंगला, एफ.एस.टी.पी./एन.टी.पी.सी.,
डाकघर – पुबागिन, ज़िला मालदा,
पश्चिम बंगाल – 732215

7. **श्री रवि मल्होत्रा**
प्रबंधक (एच.आर.–ई.एस.)
बदरपुर बाल केन्द्र,
एन.टी.पी.सी., बदरपुर थर्मल पॉवर स्टेशन,
बदरपुर, नई दिल्ली
फोन नं. 26949523
फैक्स नं. 011–26949532, 26947160

8. **त्रिदिया बाल भवन केन्द्र**
त्रिदिया शिक्षा सेवा समिति
ए–33, हरि नगर,
हीरा लाल बिल्डिंग,
मेरठ
(गो) 09997139097, 8909414193
(गो) 0909414193, 7417315099
ई–मेल: Tridev.org@yahoo.com

9. **श्री आर.पी. सिंह चौहान**
रावित,
भारतीय जनकल्याण शिक्षा समिति,
5/212–ए रिसाल सिंह नगर,
आई.टीआई, अलीगढ़
(उ.प्र.)

10. **श्री एच.के. भट्ट**
निदेशक,
भारती बाल केन्द्र,
भारती मित्र संस्थान,
गॉव व डाकघर–बाती,
मथुरा–281001
(गो) 0942626588
ई–मेल :bhartimitra1816@rediffmail.com

11. श्री शिव कुमार
भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर
ग्राम विकास समिति, (मो) 9451046157
ग्राम – जौरिया, डाकघर–रुरोना,
ब्लॉक – गलीहाबाद,
जिला – लखनऊ (उ.प्र.)
पिन कोड – 227116

12. हेल्प वॉलन्टरी संगठन (मो) 9345669337
होसूर, तमिलनाडु

13. नेताजी सुभाष विद्या मंदिर
डुमरा उत्तरी, डाकघर नावागढ़, (मो) 9931532010
पी.एस. – बधमारा
जिला धनबाद, झारखंड

14. हिमालयन ज्योति समिति
लैंडोर कैंट, (मो) 9319477330
जिला मसूरी 9927076292

15. निदेशक,
आनंदम बाल केन्द्र (मो) 9953750670–71
जी.ए.आई.ए., दी ग्रीन स्कूल,
एन.एस.–2, सेक्टर–93,
नौएडा

<u>बाल भवन बोर्ड, सिल्वासा के अधीन</u>

16. खानवेल बाल केन्द्र,
दादर व नगर हवेली संघ शासित प्रदेश सिल्वासा

17. दपाडा बाल केन्द
दादर व नगर हवेली संघ शासित प्रदेश सिल्वासा

<u>शांति निकेतन बाल भवन, जम्मू तवी (जम्मू–कश्मीर) के अंतर्गत</u>

18. बजाल्टा बाल केन्द्र
सांभा तहसील,
जम्मू जिला

19. **रंगपुर बाल केन्द्र**
मुलनियन
तहसील – आर.एस. पुरा,
जम्मू जिला

मणिपुर बाल भवन, इंफाल (मणिपुर) के अंतर्गत

20. **बाल केन्द्र, चूराचंद्रपुर**
द्वारा रेंगकई गवर्नमेंट हाई स्कूल,
रेंगकई चूराचंद्रपुर (मणिपुर)

21. **सेनापति बाल केन्द्र**
द्वारा / ब्राईट अकादमी स्कूल,
सेनापति बाज़ार,
सेनापति जिला(मणिपुर)

बाल भवन, जयपुर के अंतर्गत कार्यरत

22. **सरस बाल केन्द्र**
खिरनी फाटक, रेलवे क्रासिंग के नज़दीक,
अमर नगर , 'सी' खाटीपुरा,
जयपुर – 302012 (राजस्थान)

23. **गोडवान बाल केन्द्र**
राजस्थान पुलिस अकादमी कैम्पस
नेहरू नगर, पानीपच्च झोटेवाला रोड,
जयपुर–302012(राजस्थान)

राष्ट्रीय बाल भवन
कोटला रोड, नई दिल्ली–110002
011-23232672. 23239141, 23231597
Fax:: 23231158